॥ ओ३म् ॥

वेदवाणी

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट (अमृतसर) की मासिक पत्रिका

वर्ष २६] वयं जयेम (ऋक्) [अङ्क ३

-विशेषाङ्क-

आर्य-समाज के वेद-सेवक विद्वान्

लेखक—

श्री पं० भवानीलाल भारतीय एम.ए. पीएच.डी.

आद्य सम्पादक वा प्रतिष्ठापक—स्वर्गीय श्री पं० ब्रह्मदत्तजी जिज्ञासु

सम्पादक—युधिष्ठिर मीमांसक

पौष सं० २०३०
जनवरी १९७४ ई०
दयानन्दाब्द १४९
वेद तथा सृष्टि सं० १९७२९४९०७४
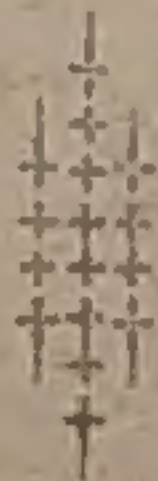
वार्षिक मूल्य—भारत में ७-००
वी० पी० से ८-३०
विदेशों में ११-००
इस अङ्क का ६-००

वेदवाणी कार्यालय,
बहालगढ़ (जि०—सोनीपत) हरयाणा

वेद-सेवक विद्वानों की सूची

दिवंगत वेद-मनीषी

वर्तमान वेद-मनीषी

परिशिष्ट

:o:

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन वि राधिषि ।

अथर्व १, १, ४ ॥

हम सदा वेदवाणी से संयुक्त रहें, उससे कभी विमुख न हों ।

वर्ष २६	पौष सं० २०३० वि०, १ जनवरी १९७४ ई० बहालगढ़ (सोनीपत-हरयाणा)	अङ्क ३

वेद सब विद्याओं के प्रकाशक हैं

एवा ह्यस्य सूनृता विरप्शी गोमती मही ।

पक्वा शाखा न दाशुषे ॥ ऋक् १।८।८॥

पदार्थान्वयभाषा—(पक्वा शाखा न) जैसे आम और कटहर आदि वृक्ष, पक्की डाली और फल युक्त होने से प्राणियों को सुख देनेहारे होते हैं, वैसे (अस्य हि) इस परमेश्वर की ही (गोमती) जिसको बहुत से विद्वान् सेवन करनेवाले हैं, जो (सुनृता) प्रिय और सत्य वचनों का प्रकाश करने वाली, (विरप्शी) महाविद्यायुक्त, और (मही) सब को सत्कार करने योग्य चारों वेद की वाणी है, वह (दाशुषे) पढ़ने में मन लगानेवालों को (एव) ही सब विद्याओं का प्रकाश करनेवाली होती है ।।

भावार्थ—जैसे विविध प्रकार के फल-फूलों से युक्त आम और कटहर आदि वृक्ष नाना प्रकार के फलों को देनेवाले होके सुख देनेहारे होते हैं, वैसे ही ईश्वर ने बहुत प्रकार की विद्याओं तथा आनन्द को देनेहारी वेद-वाणी प्रकाशित की है। तथा सब मनुष्यों को अनेक प्रकार के सुख और भोगों को देनेहारे पृथिव्यादि पदार्थ रचे हैं। जो विद्वान् लोग हैं, वे ही वेदों का प्रकाश और पृथिवी में राज्य करने को समर्थ होते है ।।

—दयानन्द सरस्वती

सम्पादकीय

कुछ अनिवार्य कारणों से हम गत वर्ष वेदवाणी का विशेषाङ्क प्रकाशित नहीं कर सके थे। इस बार हम पूर्व सूचना के अनुसार श्री पं० भवानीलाल जी भारतीय एम० ए० पीएच० डी० लिखित '**आर्य समाज के वेद-सेवक विद्वान्**' नामक विशेषाङ्क पाठकों की सेवा में प्रस्तुत कर रहे हैं।

सं० २०३२ वैक्रमाब्द (सन् १९७५) में आर्यसमाज को स्थापित हुए १०० वर्ष पूरे हो रहे हैं। इसी शताब्दी समारोह के अवसर पर आर्यसमाज में वेदभाष्यों के प्रकाशन का अति महत्त्वपूर्ण कार्य हो रहा है। इसलिये इस शुभ अवसर पर हम आवश्यक समझते हैं कि ऋषि दयानन्द से लेकर वर्तमान में जीवित जितने भी आर्यजगत् के वेद-सेवक विद्वान् हुए वा हैं, उनका श्रद्धापूर्वक स्मरण करना आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण कार्य है।

इस अत्यन्त परिश्रमसाध्य कार्य को श्री पं० भवानीलाल जी भारतीय ने महान् परिश्रम से पूर्ण किया है। उनके परिश्रम का यह निबन्ध जीता-जागता नमूना है। इस कार्य में उन्हें करनाल निवासी वेदभक्त श्री चौधरी प्रतापसिंह जी से प्रेरणा एवं पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है।

श्री पं० भवानीलाल जी भारतीय ने एक बृहद् ग्रन्थ **वेद-सेवक विद्वान्** नाम से लिखा है। इसमें सभी प्राचीन (ऋ० द० से पूर्ववर्ती) अर्वाचीन भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों का परिचय दिया गया है। उसी बड़े ग्रन्थ का यह एक भाग है। यदि वेदवाणी के पाठकों को यह कार्य रुचिकर होगा, तो हम उनके ग्रन्थ का शेष भाग भी छाप देंगे।

मैंने इस ग्रन्थ में यत्र तत्र कुछ संशोधन एवं परिवर्धन किया है, परन्तु लेखक के भाव पर इससे कहीं आंच नहीं आई है। बहुत सी उपयोगी टिप्पणियां मैंने भी बढ़ा दी हैं। उन पर यु० मी० ऐसा संकेत कर दिया है। इस कार्य से ग्रन्थ के सौष्ठव में कुछ निखार आया है, ऐसी मेरी धारणा है।

— युधिष्ठिर मीमांसक

आर्य-समाज के वेद-सेवक विद्वान्

लेखक का वक्तव्य

वैदिक साहित्य के अनुरागी, तथा उसके प्रचार एवं प्रसार के पोषक करनाल निवासी रायसाहब चौधरी प्रतापसिंह जी की प्रेरणा से विश्व के वेद-सेवक विद्वानों के कार्यों एवं उनकी उपलब्धियों का आकलन करते हुए मैंने 'विश्व के वेद-सेवक विद्वान्' शीर्षक एक ग्रन्थ गत वर्ष लिखा था। इस ग्रन्थ में वेद तथा उससे सम्बद्ध वाङ्मय पर कृतश्रम पौरस्त्य एवं पाश्चात्य विपश्चितों की कृतियों का मूल्याङ्कन सहृदयता से करने की चेष्टा की है। रायसाहब चौधरी प्रतापसिंह जी द्वारा स्थापित वैदिक साहित्य ट्रस्ट ने उक्त ग्रन्थ को एक सहस्र रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत भी किया था, जिसकी घोषणा पं० नरेन्द्र जी ने सार्वदेशिक आर्य महासम्मेलन के अलवर अधिवेशन में की थी। प्रस्तुत सामग्री उसी ग्रन्थ का एक अंश मात्र है। इसमें आर्य-समाज के वैदिक विद्वानों की वेदसेवा का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

इसकी समग्रता एवं पूर्णता का दावा करना तो निरर्थक ही है, तथापि इसमें ३० दिवंगत एवं २० विद्यमान वैदिक पण्डितों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का यथासम्भव पर्यालोचन करने की चेष्टा की गई है। यद्यपि ग्रन्थ का आलोच्य विषय वैदिक वाङ्मय को इन विद्वानों की देन तक ही सम्बन्धित था, तथापि उनके द्वारा रचित अन्य ग्रन्थों का संक्षिप्त उल्लेख कर देना भी मैंने उचित समझा है। भविष्य में सम्भवतः यह विवरण भी तत्कालीन लोगों की स्मृति से ओझल न हो जाये, इसी तथ्य को दृष्टि में रखकर लेखकों द्वारा रचित समग्र वाङ्मय की सूची प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। सम्भव है कि अनेक विद्यमान एवं अविद्यमान वैदिक विद्वानों का उल्लेख इसमें शीघ्रतावश न हो पाया हो, तदर्थ मैं क्षमाप्रार्थी हूं। पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने इस सामग्री को वेदवाणी के विशेषांक तथा पुस्तकाकार रूप से प्रकाशित करके मुझे अनुगृहीत किया है।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी २०३० वि०
दयानन्द आश्रम, अजमेर

विदुषां वशंवदः—
भवानीलाल भारतीय

(१) स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी दयानन्द सरस्वती वर्तमान युग के सबसे महान् वेदाचार्य थे। आपने वेद को न केवल अपने धर्मान्दोलन का आधार ही बनाया, अपितु यह भी स्पष्ट रूप से घोषित किया कि प्राचीन समस्त भारतीय चिंतन तथा विचारधारा का मूल उत्स भी वेद ही हैं। उनकी समस्त मान्यतायें वेदमूलक थीं। वेदों को उन्होंने समस्त सत्य विद्याओं का पुस्तक तो घोषित किया ही, साथ ही प्रत्येक वैदिकधर्मी आर्य के लिये वेद का पढ़ना-पढ़ाना तथा सुनना-सुनाना परम धर्म भी बतलाया[1]। वेद का आधार लेकर भारतीय समाज में धार्मिक, दार्शनिक तथा सामाजिक क्रान्ति करने वाले स्वामी दयानन्द के लिये यह और भी आवश्यक हो गया था कि वे वेद के वास्तविक स्वरूप और अर्थ को लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते। क्योंकि पर्याप्त समय से वेदों का नाम तो लिया जाता रहा, किन्तु शताब्दियों से उसका अध्ययन, मनन और अनुशीलन विलुप्तप्राय हो गया था। फलतः वेद का प्रमाणवाद शास्त्रों के अध्येता पण्डितों और विद्वानों में वाणी-विलास के रूप में तो चर्चित रहा, परन्तु जीवन में उसकी वास्तविक महत्ता और उपयोगिता लुप्त हो गई।

यद्यपि वेदों पर विभिन्न विद्वानों द्वारा रचित भाष्य, टीका, व्याख्या आदि ग्रन्थ स्वामी दयानन्द के काल में भी उपस्थित थे, किन्तु वैदिक ज्ञान की प्रोज्ज्वल पावनता, प्रकर्षता तथा उदात्तता को स्पष्ट करने में वे नितान्त असमर्थ सिद्ध हुये। इन्हीं कारणों से स्वामी दयानन्द ने यह आवश्यक समझा कि अत्यन्त पुराकाल में पल्लवित **वेदार्थ विषयक सिद्धान्तों** का आधार लेकर ही वेदों पर पुन भाष्य लिखा जाये। उन्होंने यजुर्वेद पर सम्पूर्ण तथा ऋग्वेद पर आंशिक (सप्तम मण्डल के ६१ वें सूक्त के २ मन्त्र पर्यन्त) भाष्य लिखा। उनका यह भाष्य मूलतः संस्कृत में लिखा गया था, तथा उनके सहयोगी विद्वान् पण्डितों ने उसका हिन्दी भाषानुवाद किया[2]।

---

१. द्र०—आर्यसमाज के नियम, संख्या ३।

२. वेदभाष्य का भाषानुवाद पं० भीमसेन और पं० ज्वालादत्त शर्मा ने किया, यह ऋषि दयानन्द के पत्रव्यवहार से पूर्णतया स्पष्ट है। द्र०—ऋषि दयानन्द के पत्र

चतुर्वेद-विषय-सूची—स्वामी दयानन्द ने अपने वेदभाष्य के प्रणयन से पूर्व चारों वेदों का गम्भीर अध्ययन, मनन और आलोडन करके चारों संहिताओं के समग्र मन्त्रों का विषय निर्धारित कर 'चतुर्वेद-विषय-सूची' का संकलन किया। इसमें ऋग्वेद के मन्त्रों का अष्टक अध्याय और वर्ग क्रम से (प्रारम्भ के पांच अध्यायों का अनुवाक क्रम से) तथा यजुर्वेद का अध्याय क्रम से, सामवेद का प्रपाठक क्रम से तथा अथर्ववेद का काण्ड एवं अनुवाक क्रम से विषय निरूपित किया है। यद्यपि स्वामी जी ने ऋग्वेद के जितने अंश तथा यजुर्वेद पर जो समग्र भाष्य लिखा है, उसमें तथा इस विषयसूची में निर्दिष्ट मन्त्रगत विषयों में यत्र तत्र अन्तर दृष्टिगोचर होता है, तथापि सूचीपत्रस्थ विषयों को भी पक्षान्तर के रूप में प्रमाण माना जा सकता है। ऋग्वेद के शेषांश तथा साम एवं अथर्व के मन्त्रों का विषय निर्धारण करने में इस सूची का महत्त्व निर्विवाद है। पर्याप्त समय तक अप्रकाशित रहे इस महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी ग्रन्थ को परोपकारिणी सभा ने १९७१ ई० में प्रकाशित किया है[1]। ग्रन्थ का मूल आलेख स्वामी जी के द्वारा संशोधित है। इस ग्रन्थ को प्रेस कापी मैंने (डा० भवानीलाल भारतीय ने) तैयार की है। भविष्य के वेदभाष्यकारों को इस विषयसूची के आधार पर भाष्यरचना के कार्य में निश्चय ही सहायता मिलेगी।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—स्वामी दयानन्द ने चतुर्वेद विषय सूची में संकलित वेदविषयक मान्यताओं के अनुसार वेदभाष्य लिखने से पूर्व वेदविषयक कतिपय जटिल समस्याओं पर आलोचनात्मक दृष्टि से अपने विचार प्रस्तुत करने तथा वेदार्थ-विषयक अपनी दृष्टि को स्पष्ट करने, और

और विज्ञापन पृष्ठ ३१७, ४५५, ४५६ (द्वि० संस्करण)। ऋषि दयानन्द के स्वर्गवास के पश्चात् भी वेदभाष्य के संशोधन (=प्रेसकापी बनाना) और भाषानुवाद करने का कार्य ये दोनों ही करते रहे। परोपकारिणी सभा ने अपने प्रथम अधिवेशन में प्रस्ताव संख्या ५ में निश्चय किया था कि—'पं० भीमसेन तथा ज्वालादत्त प्रूफ के शोधने तथा संस्कृत भाष्य का हिन्दी में अनुवाद करने के कार्य पर नियत किये जायं और प्रति व्यक्ति को २५ मुद्रा मासिक वेतन मिले।'

—परोपकारिणी सभा के अधिवेशनों का रिपोर्ट संग्रह पृ० ३।

१. इसको प्रकाशित कराने के लिये मुझे तथा श्री पं० विश्वश्रवाः जी को निरन्तर वर्षों तक प्रयत्न करना पड़ा। यु० मी०।

करिष्यमाण चारों वेदों के भाष्यों की प्रामाणिकता को प्रकट करने के लिये **ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका** नामक भूमिका की रचना की। यद्यपि यह स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है, फिर भी दयानन्द के वेदभाष्य को यथातथ रूप में समझने की यही एक कुञ्जी है[1]। इसलिये इसका हम स्वतन्त्र रूप से परिचय देना आवश्यक समझते हैं।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका को लिखते समय स्वामी दयानन्द के समक्ष आचार्य सायण विरचित विभिन्न वेद संहिताओं के भाष्यों की भूमिकायें विद्यमान थीं। स्वामी जी का यह भूमिका ग्रन्थ भी मूलतः संस्कृत में ही लिखा गया था। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में भाष्यकार ने अत्यन्त युक्ति एवं तर्कपूर्ण ढंग से वेदविषयक विविध वादों की समालोचना की है। उनका यह विवेचन न तो सायण की भांति पूर्णतया मीमांसा दर्शन पर आधारित है, और न अपने समकालीन कतिपय पाश्चात्य वेदविदों की भांति वे ऐतिहासिक तथा विशुद्ध भाषावैज्ञानिक दृष्टि ही लेकर चले हैं।

भूमिका में वेदोत्पत्ति, नित्यत्व-विचार, वेदविषय-विचार, वेदसंज्ञा-विचार ग्रन्थ-प्रामाण्याप्रामाण्य-विचार, वेदाधिकार-निरूपण, भाष्यकरण-शंका-समाधान आदि चालीस विषयों का आलोचनात्मक विवेचन किया गया है। यत्र तत्र वेदों के मध्य-कालीन एवं अर्वाचीन भाष्यकारों की धारणाओं का भी प्रसंगोपात्त खण्डन किया गया है। ग्रन्थारम्भ में अपनी वेदभाष्यप्रणाली की ओर संकेत करते हुये उन्होंने लिखा है—

आर्याणां मुन्यृषीणां या व्याख्यारीतिः सनातनी।
तां समाश्रित्य मन्त्रार्था विधास्यन्ते तु नान्यथा॥

अर्थात् इस वेदभाष्य में अप्रमाण लेख कुछ भी नहीं लिखा गया है, किन्तु जो ब्रह्मा से लेकर व्यासपर्यन्त मुनि और ऋषि हुये हैं, उनकी जो व्याख्या रीति है, उससे युक्त ही यह वेदभाष्य बनाया गया है।

स्वामी जी की यह भी धारणा थी कि उनके इस वेदभाष्य से वेद-विषयक उन सभी भ्रमों का निवारण हो जायगा, जो वेददूषक टीकाओं

१ इसी दृष्टि से ऋषि दयानन्द ने अपने एक विज्ञापन में लिखा था— 'कोई भूमिका के बिना वेद ही लेना चाहे तो नहीं मिल सकते, किन्तु भूमिका ५ रु० देने पर पृथक् मिल सकती है। द्र०—ऋ. द. के पत्र और विज्ञापन, पृष्ठ १३८, द्वि० सं०।

श्रोर भाष्यों के कारण श्राधुनिक काल में उत्पन्न हो गये हैं। श्रतः उन्होंने लिखा है—

> येनाधुनिकभाष्यैर्ये टीकाभिर्वेददूषकाः।
> दोषाः सर्वे विनश्येयुरन्यथार्थवर्णनाः॥

दयानन्द कृत वेदभाष्य की कतिपय विशेषताश्रों का सप्रमाण उल्लेख किया जाना श्रावश्यक है। स्वामी जी की यह ध्रुव मान्यता थी कि वेद ईश्वर का नित्य ज्ञान है, जो सृष्टि के श्रादिकाल में मानव जाति के हितार्थ श्रग्नि, वायु, श्रादित्य श्रोर अङ्गिरा नामक ऋषियों के माध्यम से व्यक्त होता है। स्वामी दयानन्द का यह विचार नितान्त कल्पना-प्रसूत नहीं है, श्रपितु उन्होंने अपने इस मन्तव्य की सिद्धि के लिये भारत के शास्त्रीय वाङ्मय में शतशः प्रमाण भी उद्धृत किये हैं। वेदनित्यत्व-विषय के अन्तर्गत भूमिका में उन्होंने श्रनेक दर्शनसूत्रों के प्रमाण देकर वेदों की नित्यता तथा उनका ईश्वरकर्तृत्व सिद्ध किया है। यद्यपि अनेक विचारकों की सम्मति में वेदों को ईश्वरोक्त नित्य ज्ञान घोषित करना दयानन्द की एक भावुक श्रपीलमात्र थी[1], जिसके द्वारा उन्होंने विघटनशील हिन्दू समाज उनकी श्रास्था के एकमात्र केन्द्रबिन्दु वेदों के श्राधार पर संगठित करने का प्रयास किया था। परन्तु भारतीय श्रार्य जाति की सुचिंतित विचारप्रणाली से परिचित प्रत्येक व्यक्ति इस बात को स्वीकार करेगा कि वेद के श्रपौरुषेयत्व श्रोर ईश्वर-कर्तृत्व को स्वीकार कर दयानन्द ने कुछ भी नूतन उद्भावना नहीं की है। दार्शनिक तत्त्वचिन्तन की दृष्टि से स्वामी दयानन्द के विचारों से नितान्त दूर स्वामी शंकराचार्य ने भी ब्रह्मसूत्रों का भाष्य करते हुये ऋग्वेदादि शास्त्रों को अनेक विद्याश्रों का मूल उपादान, स्वतःप्रमाण, सर्वार्थद्योतक तथा सर्वज्ञ परमात्मा से प्रसूत स्वीकार किया है[2]।

---

१. सुप्रसिद्ध गुजराती साहित्यकार श्रोर राजनीतिज्ञ स्व० कन्हैयालाल माणिकलाल मुन्शी ने लिखा था—"श्रपनी भावुक श्रपील के लिये दयानन्द सरस्वती ने युगों की दृढ़ श्राधारशिला वेदों का श्राश्रय लिया"।

२. 'महत ऋग्वेदादेः शास्त्रस्यानेकविद्यास्थानोपबृंहितस्य प्रदीपवत् सर्वार्थावद्योतिनः सर्वज्ञकल्पस्य योनिः कारणं ब्रह्म। नहीदृशस्य ऋग्वेदादिलक्षणस्य सर्वज्ञ गुणान्वितस्य सर्वज्ञादन्यतः संभवोऽस्ति। ब्रह्म सूत्र शाङ्करभाष्य १।१।३॥

वेदों के अपौरुषेयत्व, अनादित्व तथा ईश्वरकर्तृत्व को मीमांसा तथा न्यायदर्शन ने आपाततः परस्पर विरोधी रूप में उपस्थित किया है, परन्तु यह स्वामी दयानन्द के चिन्तन की एक मौलिक विशेषता है कि उन्होंने आपाततः विरोधी प्रतीत होनेवाले इन दोनों मन्तव्यों का समन्वय किया। उनके अनुसार मीमांसा प्रतिपादित वेदों की अपौरुषेयता तथा अनादिता का सिद्धान्त तथा न्यायप्रोक्त वेदों का ईश्वरीय ज्ञान होना फलतः सर्वोत्कृष्ट पुरुषविशेष ईश्वररचित होने के कारण पौरुषेय होना परस्पर विरुद्ध सिद्धान्त नहीं है।

स्वामी जी प्रचलित मान्यता के अनुसार न तो यही मानते हैं कि प्रारम्भ में वेद की एक ही संहिता थी, और महर्षि व्यास ने उसका चतुर्धा विभाजन कर वेदचतुष्टय की रचना की। और न वे यही स्वीकार करते हैं कि मन्त्र-संहिता की भांति ब्राह्मण भाग को भी वेदसंज्ञा से अभिहित किया जाये। उनकी दृष्टि में मन्त्रसंहितायें ही वेद हैं। फलतः इन्हें ही स्वतःप्रमाण तथा ईश्वरोक्त मानना चाहिये। ऐतरेय शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थ तो महीदास ऐतरेय याज्ञवल्क्य आदि विभिन्न ऋषि-मुनियों द्वारा प्रणीत हैं। भूमिका के वेद-संज्ञा-प्रकरण के अन्तर्गत इस विषय का विस्तारपूर्वक ऊहापोह किया गया है। इस प्रसंग में उन्होंने **'मन्त्र-ब्राह्मणयोर्वेदनामधेयम्'**[1] की प्रचलित मान्यता के प्रति अपनी असहमति व्यक्त की है।

वेदों में किन-किन विषयों का निरूपण हुआ है, इसे लेकर प्राचीन एवं अर्वाचीन आचार्यों में पर्याप्त मतभेद रहा है। यदि निरुक्त में उल्लिखित कौत्स नाम के किसी आचार्य ने मन्त्रों को सर्वथा अनर्थक[2] अर्थहीन बताया, तो आचार्य जैमिनि तथा अन्य मीमांसकों ने **आम्नायस्य क्रियार्थत्वात्**[3] कहकर वेदमन्त्रों का एकमात्र प्रयोजन कर्मकाण्ड-निरूपण

१. कात्यायन के नाम से प्रसिद्ध प्रतिज्ञासूत्र परिशिष्ट का सूत्र। इस सूत्र पर गम्भीर विचार के लिये प० युधिष्ठिर मीमांसक कृत 'वेदसंज्ञा मीमांसा' पुस्तक देखनी चाहिए।

२ यदि मन्त्रार्थप्रत्ययायानर्थकं भवतीति कौत्सः। अनर्थका हि मन्त्राः। निरुक्त अध्याय १। पाद ५॥

३ पूर्व मीमांसा १।२।१॥ [आम्नाय शब्द मन्त्र और ब्राह्मण दोनों का वाचक है। अतः उसके अन्तर्गत मन्त्र भी आ जाते हैं। यु० मी०]

स्वीकार किया। स्वामी दयानन्द वेदों को केवल कर्मकाण्ड-प्रतिपादक नहीं मानते। उनके अनुसार मानव के सम्पूर्ण इहलौकिक और पारलौकिक प्रयोजनीय विषय वेदों में निहित हैं[1]। भूमिका के वेदविषय विचार प्रकरण के अन्तर्गत वे लिखते हैं—

"अथ चत्वारो वेदविषयाः सन्ति, विज्ञानकर्मोपासनाज्ञानकाण्डभेदात्। तत्रादिमो विज्ञानविषयो हि सर्वेभ्यो मुख्योऽस्ति। तस्य परमेश्वरादारभ्य तृणपर्यन्तपदार्थेषु साक्षाद् बोधान्वयत्वात्। तत्रापीश्वरानुभवो मुख्योऽस्ति। कुतः? अत्रैव सर्वेषां वेदानां तात्पर्यमस्ति, ईश्वरस्य खलु सर्वेभ्यः पदार्थेभ्यः प्रधानत्वात्"[1]॥

आगे इस कथन की पुष्टि में उन्होंने कठोपनिषद् के—'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति०'[2] आदि वाक्यों से प्रमाण भी दिये हैं। वेदान्त के 'तत्तु समन्वयात्'[3] सूत्र को इस प्रसंग में उद्धृत करते हुये वे लिखते हैं—

"तदेव ब्रह्म सर्वत्र वेदवाक्येषु समन्वितं प्रतिपादितमस्ति। क्वचित् साक्षात् क्वचित् परम्परया च। अतः परमोऽर्थो वेदानां ब्रह्मैवास्ति[4]॥"

इस प्रसंग में यह लिखना भी असमीचीन न होगा कि स्वामी दयानन्द वेदों में विशुद्ध एकेश्वरवाद की विचारधारा का अस्तित्व ही स्वीकार करते हैं। वे न तो मध्यकालीन भाष्यकारों की भांति जड़ पदार्थों में कोई विशिष्ट चेतन 'अभिमानी देवता' की सत्ता स्वीकार करते हैं, और न पाश्चात्य वेदज्ञों की भांति वेदमन्त्रों में अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, वायु, आकाश आदि प्राकृतिक पदार्थों को ही उपास्यरूप मानते हैं। वस्तुतः वैदिक एकेश्वरवाद को स्वामी दयानन्द ने एक नवीन और समर्थ सर्वसत्ता प्रदान की है।

उपर्युक्त विवेचन का यह अर्थ नहीं कि स्वामी जी वेद के कर्मकाण्ड-परक अर्थों को अस्वीकार करते थे। वे यह मानते हैं कि मन्त्रों का क्रिया-

---

१ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदविषयविचारः, पृष्ठ ६६, रा. ला. क. ट्र. संस्क०॥

२ कठोपनिषद् २।१५॥ ३ वेदान्त दर्शन १।१।४॥

४ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेदविषयविचारः, पृष्ठ ५०, रा. ला. क. ट्रस्ट संस्क०। आगे भी जहां-जहां ऋ. भा. भू. के पृष्ठ दिये हैं, वे इसी संस्करण के हैं।

कर्मकाण्डपरक अर्थ भी होता है, और उसे ऐतरेय शतपथ आदि ब्राह्मण, मीमांसा तथा श्रौतसूत्रादि ग्रन्थों में लिया गया है। अतः वे पिष्टपेषणवत् फलतः अनार्ष ग्रन्थवत् अपने भाष्य में वेदमन्त्रों की कर्मकाण्डपरक व्याख्या नहीं करते। उनका कथन है—

"अत्र वेदभाष्ये कर्मकाण्डस्य वर्णनं शब्दार्थतः करिष्यते। परन्त्वेतैर्वेदमन्त्रैः कर्मकाण्डविनियोजितैर्यत्र यत्राग्निहोत्राद्यश्वमेधान्ते यद्यत् कर्त्तव्यं तत्तदत्र विस्तरतो न वर्णयिष्यते। कुतः? कर्मकाण्डानुष्ठानस्यैतरेयशतपथब्राह्मणपूर्वमीमांसाश्रौतसूत्रादिषु यथार्थं विनियोजितत्वात्। पुनस्तत्कथनेनानृषिकृतग्रन्थवत् पुनरुक्तपिष्टपेषणदोषापत्तेश्चेति। तस्माद्युक्तिसिद्धो वेदादिप्रमाणानुकूलो मन्त्रार्थानुसृतस्तदुक्तोऽपि विनियोगो ग्रहीतुं योग्योऽस्ति"[1] ॥

मन्त्र का पारमार्थिक और व्यावहारिक दो प्रकार का अर्थ होता है, यह स्वामी जी की सुनिश्चित धारणा थी। परन्तु 'किसी भी मन्त्र से ईश्वर-विषयक अर्थ का त्याग नहीं हो सकता' यह लिखकर उन्होंने वेदों के आध्यात्मिक अर्थ करने की प्रणाली को एक ठोस आधार प्रदान किया। इस प्रसंग में वे लिखते हैं—

"अथात्र यस्य यस्य मन्त्रस्य पारमार्थिकव्यावहारिकयोर्द्वयोरर्थयोः श्लेषालङ्कारादिना सप्रमाणः सम्भवोऽस्ति, तस्य तस्य द्वौ द्वावर्थौ विधास्येते। परन्तु नैवेश्वरस्यैकस्मिन्नपि मन्त्रार्थेऽत्यन्तत्यागो भवति"[2] ॥

इसी विवेचन के आधार पर हमें स्वामी दयानन्द के यौगिकवाद को समझने का भी यत्न करना चाहिये। ऋग्वेद के प्रथम मन्त्र 'अग्निमीडे पुरोहितं' में प्रयुक्त 'अग्नि' शब्द का जब स्वामी जी ने ईश्वर-परक अर्थ किया, तो संस्कृत के बड़े-बड़े दिग्गज पण्डित चौंक पड़े। गवर्नमेंट संस्कृत कॉलेज बनारस के प्रिन्सिपल श्री ग्रिफिथ, कलकत्ता संस्कृत कालेज के स्थानापन्न प्रिन्सिपल प० महेशचन्द्र न्यायरत्न जैसे विद्वानों को यह सर्वथा आपत्तिजनक प्रतीत हुआ कि 'अग्नि का सामान्य आग से अतिरिक्त भी कुछ अर्थ हो सकता है। 'भ्रान्तिनिवारण' शीर्षक पुस्तक लिखकर स्वामी जी ने इन आपत्तिकर्त्ता विद्वानों की शंकाओं का युक्तियुक्त समाधान

१. प्रतिज्ञाविषयः संक्षेपतः। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पृष्ठ ३८२॥
२. प्रतिज्ञाविषयः संक्षेपतः। ऋ० भा० भू०, पृष्ठ ३८३ ॥

ऐसे नाम आते हैं, जो कालान्तर में व्यक्तिविशेष के लिये प्रयुक्त होने के कारण वेद में इतिहास का आभास देने लगे। वेदार्थ की यौगिक प्रक्रिया के अनुसार इन शब्दों का व्यक्तिपरक अर्थ नहीं किया जाता। मनु ने इस सम्बन्ध में जो लिखा है, वह नितान्त समीचीन ही है कि—'वेद में प्रयुक्त कतिपय नामों के अनुकरण पर ही कालान्तर में विशिष्ट व्यक्तियों को तत् तत् नामों से अभिहित किया जाने लगा'[1]। महाभारत[2], विष्णुपुराण[3], तथा मीमांसा शास्त्र के आचार्य कुमारिल भट्ट[4] भी इसी मत को स्वीकार करते हैं। वेद में इतिहास की प्रतीति का समाधान आचार्य जैमिनि ने पूर्वमीमांसा में किया है। उन्होंने **'पर तु श्रुतिसामान्यमात्रम्'**[5] इस सूत्र के द्वारा यह मत व्यक्त किया है कि श्रुति में उक्त जो नाम किसी व्यक्तिविशेष के प्रतीत होते हों, उनका सर्वसामान्य अर्थ ही किया जाना चाहिये।

स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य की एक अन्य विशेषता उसका विज्ञान-प्रतिपादक होना भी है। वेदों के सम्बन्ध में उनकी एक महत्त्वपूर्ण मान्यता यह थी कि वे वेदों को जहाँ ब्रह्मविद्या के मूल होने के कारण अध्यात्म शास्त्र का पुरस्कर्ता मानते थे, वहाँ उन्हें वेदों में भौतिक विद्याओं का अस्तित्व भी स्वीकार था। अपने इस मन्तव्य को पुष्ट करने के लिये उन्होंने अपनी भाष्यभूमिका में कतिपय प्रकरण लिखे हैं। उदाहरणार्थ स्वामी जी ने वेदमन्त्रों के आधार पर सृष्टिविद्या, पृथिव्यादिलोक भ्रमण,

---

१. सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥ मनुस्मृति १।२१॥

२. ऋषीणां नामधेयानि याश्च वेदेषु दृष्टयः।
नानारूपं च भूतानां कर्मणां च प्रवर्तनम्॥
वेदशब्देभ्य एवादौ निर्मिमीते स ईश्वरः॥ शान्तिपर्व अ० २३२।२५,२६॥

३. नाम रूपं च भूतानां कृत्यानां च प्रपञ्चनम्।
वेदशब्देभ्य एवादौ देवादीनां चकार सः॥
ऋषीणां नामधेयानि यथा वेदश्रुतानि वै।
तथा नियोगयोग्यानि ह्यन्येषामपि सोऽकरोत्॥ विष्णुपुराण १।५।६४,६५॥

४. वेद एव हि सर्वेषामादर्शः सर्वदा स्थितः।
शब्दानां तत उद्धृत्य प्रयोगः सम्प्रवर्त्यते॥ तन्त्रवार्तिक पृ० २०६॥

५. पूर्वमीमांसा १।१।३१॥

योगिवर्य अरविन्द के निम्न शब्दों को उद्धृत करना आवश्यक प्रतीत होता है, जिनमें उन्होंने यह स्पष्ट स्वीकार किया है कि स्वामी दयानन्द का वेद के विज्ञान का अस्तित्व स्वीकार करना किञ्चित् भी आश्चर्यकारक नहीं है अपितु उन्होंने तो यहां तक कहा कि वेदों में विज्ञान के कुछ ऐसे भी तथ्य पाये जाते हैं, जिन्हें आधुनिक वैज्ञानिक अभी तक जान भी नहीं पाये हैं। मूल अंग्रेजी उद्धरण इस प्रकार है—

"There is nothing fantastic in Dayanand's idea that Veda contains truth of Science as well as truth of religion. I will even add to my own conviction that the Veda contains the other truth of Science the modern world does not at all possess and in that case Dayanand has rather understand than over stated the depth and range of the vedic wisdom"[1]

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द का वेदभाष्य वेद के अध्ययन में एक ऐसी दिशा का निर्देश करता है, जो वेद के तात्विक अर्थ तक पहुंचने में हमारी सहायता तो करता ही है, जिसके आधार पर भारतीय धर्म और संस्कृति का पुनर्निर्माण भी किया जा सकता है। यह उस याज्ञिक पक्ष का पूर्णतः प्रत्याख्यान तो नहीं करता, जिसके अनुसार वेदमन्त्रों का एक प्रयोजन वैदिक कर्मकाण्ड का निष्पादन और सञ्चालन माना गया था, किन्तु स्वामी दयानन्द प्रतिपादित वेदार्थशैली वेदोक्त यज्ञ-प्रक्रिया को ही एक नवीन सारगर्भित अर्थवत्ता प्रदान करती है, जिसके अनुसार यज्ञकर्म किन्हीं रूढ जटिल एवं निरर्थक क्रियाओं की समष्टि-मात्र ही न रह कर विश्व ब्रह्माण्ड का सुचारुरूप से संचालन करनेवाले ईश्वरीय नियमों एवं नैसर्गिक विधानों के प्रतीक बन जाते हैं। यज्ञप्रक्रिया की इस प्रकार अर्थात्मक तथा आध्यात्मिक व्याख्या करने के कारण स्वामी जी ने 'यज्ञ' के नाम पर प्रचलित पशुहिंसा तथा वेदमन्त्रों में याज्ञिक हिंसा के तथाकथित विधान को सर्वथा अस्वीकार कर दिया था।

यहां यह लिख देना भी अनुचित नहीं होगा कि वेद के मध्यकालीन भाष्य-कारों की भांति स्वामी दयानन्द की दृष्टि सामाजिक अनुदारता, जन्मगत

1. The Vedic Magazine April May—1916.

जाति के महत्त्व को स्वीकार करते, तथा उसके परिणामस्वरूप वेदाध्ययन का अधिकार द्विजमात्र को ही प्रदान करने के पक्षपाती नहीं थे। इसके विपरीत उनके वेदाध्ययन अधिकार निरूपण में पर्याप्त उदारता दृष्टिगोचर होती है। यजुर्वेद के **यथेमां वाचं कल्याणी**[1] मन्त्र को उद्धृत करते हुये उन्होंने परमात्मा की कल्याणी वाणी वेदशास्त्रों को पढ़ने-पढ़ाने का मनुष्यमात्र का अधिकार स्वीकार किया है[2]। रोमां रोलां ने इस वैचारिक उदारता की उन्मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हुये ठीक ही लिखा है कि—'वह दिन वास्तव में एक युगपरिवर्तनकारी दिवस था, जब स्वामी दयानन्द ने न केवल स्त्री एवं शूद्रों के वेदाधिकार का प्रतिपादन ही किया, अपितु यह भी स्पष्ट घोषणा की कि वेद का पठन-पाठन और उसका प्रचार करना प्रत्येक आर्य का पवित्र कर्त्तव्य है'।[3]

स्वामी दयानन्द के वेदविषयक विचारों का सिंहावलोकन करने के पश्चात् उनके वेदभाष्य का विवरण दिया जाना आवश्यक है।

ऋग्वेद-भाष्य—ऋग्वेदभाष्य की रचना का उपक्रम स्वामी जी ने १९३३ वि० में किया। सर्वप्रथम ऋग्वेद के प्रारम्भिक मन्त्रों का भाष्य संस्कृत और हिन्दी में लिखकर प्रकाशित किया, जो १९३३ वि० में ही काशी के लाजरस प्रेस में छपा[4]। प्रारम्भिक मन्त्रों के इस भाष्य को

---

१. यजुर्वेद अध्याय २६।२ ॥

२. पं० सत्यव्रत सामश्रमी ने स्त्री शूद्रों के वेदाधिकार के प्रतिपादन के लिये दयानन्द का नामोल्लेख करते हुए लिखा है—'शूद्रस्य वेदाधिकारे साक्षाद् वेदवचनमपि प्रदर्शितं स्वामिदयानन्देन (वा० सं० २६।२) यथेमां ....'। ऐतरेयालोचन, पृष्ठ १७।

3. It was in truth an epoch making date for India when a Brahman not only acknowledged that all human beings have the right to know the Vedas, whose study had been previously prohibited by orthodox Brahmans, but insisted that their Study and propaganda was the duty of every Arya." Life of Sri Ramkrishna P-59.

४. इसका प्रकाशन ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के लेखन के समकाल ही हुआ था। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के 'वेदविषयविचार' प्रकरण में इस वेदभाष्य का संकेत है। द्र०—स्वसम्पादित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, पृष्ठ ८०, टि० १। यु० मी०

सम्मति जानने के हेतु काशी कलकत्ता तथा लाहौर के गणमान्य संस्कृतज्ञ विद्वानों के पास भेजा गया। वेदविषयक मध्यकालीन चिन्तन से प्रतिकूल होने के कारण स्वामी दयानन्द की वेदभाष्यशैली गतानुगतिकता-प्रेमी संस्कृतज्ञ पण्डितों को पसन्द नहीं आई, परन्तु पूर्वाग्रहमुक्त लोगों ने उसकी मुक्तकण्ठ से सराहना की। ऋग्वेद भाष्य का विधिवत् लेखन मार्गशीर्ष शुक्ला ६ सं० १९३४ वि० को आरम्भ हुआ। उस समय यह भाष्य मासिक अङ्कों के रूप में धारावाही छपता था। तत्कालीन अनेक पश्चिमी वेदज्ञ विद्वान् यथा प्रो० मैक्समूलर एवं प्रो० मोनियर विलियम्स वेदभाष्य के स्थायी ग्राहक थे। स्वामी दयानन्द का ऋग्वेद भाष्य ५९४९ मन्त्रों पर ही उपलब्ध होता है। यह सात खण्डों में वैदिक यन्त्रालय अजमेर से प्रकाशित हुआ है।

यजुर्वेदभाष्य—यजुर्वेदभाष्य का प्रारम्भ पौष शुक्ला त्रयोदशी १९३४ वि० को हुआ। पाँच वर्ष इसे पूरा करने में लगे। इसका समाप्ति-काल मार्गशीर्ष कृष्ण प्रतिपदा १९३९ वि० है। ऋग्भाष्य की ही भाँति यजुर्भाष्य का मूल संस्कृत भाग ही स्वामी दयानन्द रचित है। इसका हिन्दी भाषानुवाद पं० भीमसेन शर्मा तथा पं० ज्वालादत्त शर्मा रचित है। जो कहीं-कहीं मूल के प्रतिकूल और अव्यवस्थितसा है। यह चार खण्डों में वैदिक यन्त्रालय से प्रकाशित हुआ है।

अन्य संस्करण—कालान्तर में स्वामी दयानन्द कृत वेदभाष्यके अन्यान्य संस्करण भी प्रकाशित हुये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, तथा जनज्ञानप्रकाशन दिल्ली ने ऋग्वेदभाष्य का भाषाभाष्य आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित किया है। करनाल निवासी श्री चौधरी प्रतापसिंह जी के सहयोग से श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक द्वारा सम्पादित ऋग्वेदभाष्य प्रथम खण्ड[1]

१. पूर्व पृष्ठ ७ टि० १ में निर्दिष्ट ग्रन्थकार की भावना को दृष्टि में रखकर तथा ऋषि दयानन्द कृत वेदभाष्य मंगानेवालों को भूमिका के बिना वेदभाष्य देने की परम्परागत भूल को दूर करने के लिये इस खण्ड में हमने ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का भी सन्निवेश कर दिया है। भूमिका के बिना वेदभाष्य छापने वा बेचने की प्रवृत्ति इतनी दृढमूल हो गई है कि सार्वदेशिक सभा और दयानन्द संस्थान ने जो ऋषिकृत वेदभाष्य का भाषानुवाद छापा है, उसमें भी ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका नहीं

का प्रकाशन[1] एक ऐतिहासिक कार्य है। इस संस्करण में ऋग्वेदभाष्य के विभिन्न हस्तलेखों का मिलान कर पाठ को सुव्यवस्थित तथा यत्र तत्र हिन्दीभाष्य का परिष्कार एवं परिमार्जित करने की चेष्टा की है। व्याकरणविषयक प्रयोगों पर सम्पादक की टिप्पणियाँ तथा विभिन्न परिशिष्टों एवं अनुक्रमणिकाओं से युक्त यह ऋग्वेदभाष्य सम्पादक के अनुकरणीय परिश्रम का परिणाम है। स्व० पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु ने यजुर्वेद भाष्य पर एक विवरण लिखा था, जिसका प्रथम खण्ड (१० अध्याय) सं० २००४ वि० में श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट अमृतसर से प्रकाशित हुआ था। इसका प्रतिशोधित द्वितीय संस्करण भी सं० २०१६ में उक्त ट्रस्ट ने छापा। इसका द्वितीय खण्ड (११ से १५ अध्याय) भी उक्त ट्रस्ट ने सं० २०२८ वि० में प्रकाशित किया, तथा शेषांश भी प्रकाशनाधीन है। विवरणकार ने दयानन्द भाष्य पर व्याकरणविषयक विस्तृत टिप्पणियाँ लिखी हैं। तथा भाष्य में प्रयुक्त भाषा में तथाकथित अपप्रयोगों की साधुता सिद्ध की गई है। पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक ने यजुर्वेद भाष्य के उस अंश का सम्पादन कर आर्यकुमार महासभा बड़ौदा से सं० २०१६ वि० में प्रकाशित कराया, जो पंजाब विश्वविद्यालय की शास्त्री परीक्षा में निर्धारित था। स्वामी जी का यजुर्वेद भाषाभाष्य सार्वदेशिक सभा तथा जनज्ञानप्रकाशन ने भी प्रकाशित किया है। सार्वदेशिक प्रकाशन दिल्ली से यजुर्वेद-भावार्थ-प्रकाश प्रकाशित हुआ, जिसमें मूल मन्त्र न देकर मन्त्रों का दयानन्द कृत हिन्दी भावार्थ मात्र दिया गया था।

छापी गई। इस परम पुनःसंस्कार्य ग्रन्थ की ओर किसी भी प्रकाशक का ध्यान नहीं गया। यु० मी०

१. इसका द्वितीय खण्ड भी प्रकाशित हो गया है। तृतीय प्रेस में दे दिया गया है। यु० मी०

(२) पं० गुरुदत्त विद्यार्थी

विज्ञान की उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उपरान्त भी कोई व्यक्ति वैदिक साहित्य के अध्ययन में गम्भीर रुचि ले सकता है, इसका उदाहरण पं० गुरुदत्त विद्यार्थी का जीवन है। गुरुदत्त का जन्म २६ अप्रैल १८६४ ई० तदनुसार वैशाख शुक्ला प्रतिपदा १९२१ वि० को हुआ। उनके पिता लाला रामकृष्ण पंजाब के शिक्षा विभाग में अध्यापक थे। अपने अध्ययन-काल में गुरुदत्त ने चार्ल्स ब्रेडला, जान स्टुअर्ट मिल तथा बेन्थम जैसे पश्चिमी तत्त्वचिन्तकों का विधिवत् अनुशीलन किया था। डार्विन, हर्बर्ट स्पेन्सर तथा काम्टे जैसे वैज्ञानिकों तथा दार्शनिकों के प्रति उनके हृदय में अगाध श्रद्धा थी। पं० गुरुदत्त आर्यसमाज के सभासद तो बन हो गये थे, पर उन्हें आर्यसमाज लाहौर के उपप्रधान लाला जीवनदास पेन्शनर के साथ स्वामी दयानन्द की अन्तिम रुग्णावस्था में सेवा करने हेतु अजमेर जाकर अपने युग के उस अद्वितीय वैदिक विद्वान् के दर्शन करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ था। यह सर्वविदित तथ्य है कि परम आस्तिक स्वामी दयानन्द को निर्भीक भाव से मृत्यु-वरण करते देखकर पं० गुरुदत्त के पाश्चात्य चिन्तन से प्रभावित मानस में एक अपूर्व आलोडन हुआ था, जिसके परिणामस्वरूप पाश्चात्य चिन्तनपद्धति के प्रशंसक तथा संदेहवादी दार्शनिकों की तर्कसरणि का अवलम्बन करनेवाले नास्तिक गुरुदत्त के हृदय में आस्तिकता की कल्पलता अङ्कुरित हो गई।

इस जीवन परिवर्तनकारी घटना के पश्चात् तो गुरुदत्त की सम्पूर्ण चिन्तन-प्रक्रिया ही परिवर्तित हो गई। अब वे आर्यसमाज के महान् नेता, विद्वान् लेखक तथा विचारक के रूप में कर्मक्षेत्र में अवतरित हुये। यहां उनके वैदिक चिन्तन का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करना आवश्यक है--

१. वैदिक संज्ञा-विज्ञान (The Terminology of the Vedas) यह पं० गुरुदत्त विद्यार्थी की प्रतिनिधि रचना है, जो १ जून १८८८ ई० को प्रकाशित हुई। वस्तुतः यह निबन्धरूप में लिखा गया ग्रन्थ है, जो आर्य-पत्रिका (अंग्रेजी साप्ताहिक) के ११ जुलाई, १ अगस्त, १९ सितम्बर तथा १० अक्टूबर १८८५ ई० के अङ्कों में क्रमशः प्रकाशित हुआ था। लेखक ने इस ग्रन्थ को अपने गुरु तथा युग के अद्वितीय वैदिक विद्वान्

स्वामी दयानन्द सरस्वती की पुण्य स्मृति में समर्पित किया। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के संस्कृत के पाठ्यक्रम में इस पुस्तक को रक्खा गया था।

२. इसी वर्ष (१८८८ ई०) में उनका एक अन्य निबन्ध The Terminology of the Vedas and the European Scholars (वैदिक संज्ञा विज्ञान तथा पाश्चात्य विद्वान) प्रकाशित हुआ। यह उनके प्रथम निबन्ध का ही परिशिष्ट है, जिसमें वेदार्थ की महर्षि यास्क प्रतिपादित निरुक्त प्रणाली का समर्थन करते हुये प्राध्यापक मैक्समूलर तथा मोनियर विलियम्स जैसे वेदज्ञों की धारणाओं की समीक्षा की गई है। इन दोनों कृतियों ने पं० गुरुदत्त की ख्याति को अन्तर्राष्ट्रिय स्तर तक पहुंचा दिया।

३. उपनिषदों की व्याख्या—पं० गुरुदत्त कृत **वाजसनेयोपनिषद की टीका**—१८८८ ई० के जून मास में प्रकाशित हुई। यह उपनिषद् किञ्चित् परिवर्तन के साथ यजुर्वेद का चालीसवां अध्याय ही है[1]। मूल टीका अंग्रेजी में लिखी गई, और पं० आत्माराम अमृतसरी ने उसका हिन्दी अनुवाद किया[2]।

माण्डूक्योपनिषद् जैसे लघुकाय किन्तु विषय की दृष्टि से अत्यन्त गम्भीर एवं जटिल उपनिषद् को भी पं० गुरुदत्त ने अपनी टीका द्वारा सुगम तथा सुबोध बनाया।

मुण्डकोपनिषद् का अंग्रेजी अनुवाद भी पं० गुरुदत्त कृत उपलब्ध होता है[3]।

---

१. ईशोपनिषद् के दो पाठ हैं। एक यजुर्वेद के ४० वें अध्याय के रूप में, और दूसरा यजुर्वेद की काण्व शाखा के ४० वें अध्याय के रूप में। आचार्य शङ्कर द्वारा उपनिषद् के काण्व पाठ पर व्याख्या लिखने के कारण लोक में ईशोपनिषद् के नाम से यही पाठ प्रसिद्ध हो गया है।

२. ईशोपनिषद्—हिन्दी अनुवादक पं० आत्माराम, एंग्लो संस्कृत यंत्रालय, लाहौर। अंग्रेजी संस्करण—Ishopnishad with Sanskrti Text and English Translation, Virjanand Press Lahore. 1888

३. हिन्दी अनुवाद पं० आत्माराम अमृतसरी कृत-५ पौष १९४८ वि० को प्रकाशित

पं० गुरुदत्त के निधन के पश्चात् जब अखिल विश्व धर्म-सम्मेलन के शिकागो अधिवेशन में उनके द्वारा रचित उपनिषदों की ये व्याख्यायें १८९६ ई० में भेजी गईं, तो एक अमरीकी प्रकाशक ने उसका संस्करण स्वेच्छा से प्रकाशित किया।

८. उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त Vedic Texts के नाम से उनके तीन अन्य लेख भी प्रकाशित हुये। प्रथम लेख का शीर्षक है—वायुमण्डल (Atmosphere), जिसमें ऋग्वेद के प्रथम मण्डल के द्वितीय सूक्त के प्रथम मन्त्र—

वायवा याहि दर्शतेमे सोमा अरंकृता। तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥

की वैज्ञानिक व्याख्या की गई है। द्वितीय लेख—जल की रचना (The Composition of water) शीर्षक है, जो १३ जुलाई १८८६ को लिखा गया था। इस लेख में ऋग्वेद के—

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरुणं च रिशादसम्।
धियं घृताचीं साधन्ता ॥ मं० १। सू० २। मं० ७॥

मन्त्र की वैज्ञानिक तथ्यपूर्ण व्याख्या की गई है। व्याख्याकार के अनुसार इस मन्त्र में वर्णित 'मित्र' और 'वरुण' क्रमशः उद्जन और ओषजन के प्रतीक हैं, जिनके एक विशिष्ट मात्रा (H_2O) में मिलने से जल की उत्पत्ति होती है। गुरुदत्त कृत इस मन्त्रार्थ ने एक मनोरञ्जक विवाद को जन्म दिया। गुरुकुल कांगड़ी की अंग्रेजी मुखपत्रिका The Vedic Magazine में जब एक महानुभाव ने Indian Nationalist के नाम से अपने एक लेख The Advent of the Redeemer में पं० गुरुदत्त कृत उपर्युक्त मन्त्रार्थ का समर्थन किया, तो सत्येन्द्र एन० राय नाम के किसी अन्य व्यक्ति ने The Veda and the composition of water शीर्षक सम्पादक के नाम लिखे गये अपने पत्र में उक्त मन्त्रार्थ पर आपत्ति की। राय महाशय का यह पत्र दि वैदिक मैगजीन के आषाढ़ १९६८ वि० के अंक में छपा। राय महाशय के इस पत्र का उत्तर श्रावण १९६८ वि० के अंक में A Student of the Veda के छद्म नाम से किसी सज्जन ने Physical Science in the Veda शीर्षक से दिया। पुनः इसी वर्ष के भाद्रपद मास के अङ्क में उपर्युक्त शीर्षक से ही An Indian Nationalist के नाम से लिखनेवाले व्यक्ति ने पं० गुरुदत्त कृत मन्त्रार्थ का औचित्य सिद्ध कर इस विवाद का समाहार किया।

Vedic Texts का तृतीय भाग 'गृहस्थ' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसमें ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त ५०, मन्त्र १-३ के आधार पर गृहस्थ धर्म का विचारोत्तेजक विवेचन किया गया है। पं० गुरुदत्त ने वेदार्थ की जिस निरुक्त प्रतिपादित तथा स्वामी दयानन्द अनुमोदित शैली को स्वीकार किया था, उसी का अनुसरण करते हुये वेदमन्त्रों की उपर्युक्त व्याख्यायें प्रकाशित हुईं। ये सभी ग्रन्थ मास्टर दुर्गाप्रसाद के विरजानन्द प्रेस लाहौर से छपे। Vedic Texts का तृतीय भाग स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती द्वारा १८६४ ई० में जी० पी० वर्मा एण्ड ब्रदर्स प्रेस लखनऊ से छपकर प्रकाशित हुआ।

उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त पं० गुरुदत्त ने वेदविषयक विभिन्न प्रश्नों और समस्याओं के समाधान और आलोचना तथा प्रत्यालोचना के रूप में कतिपय अन्य निबन्ध भी लिखे, जिनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

1. A Reply to some criticism of Swamiji's Veda Bhashya.

2. A Reply to Mr. T. William's letter on idolatory in the Vedas. पादरी टी० विलियम्स ने Idolatory in the Vedas शीर्षक एक पत्र आर्यपत्रिका के सम्पादक के नाम लिखा था। पादरी द्वारा उठाई गई शङ्काओं का समाधान पं० गुरुदत्त ने उक्त निबन्ध के रूप में दिया, जो पादरी के मूल पत्र के साथ पाद-टिप्पणियों के रूप में आर्य पत्रिका में छपा।

3. A Reply to Mr. T. William's Criticsim on Niyoga. उसी पादरी टी० विलियम्स ने ऋग्वेद के मन्त्र—

आ घा ता गच्छानुत्तरा युगानि यत्र जामयः कृणवन्नजामि।
उपबर्बृहि वृषभाय बाहुमन्यमिच्छस्व सुभगे पतिं मत् ॥ १०।१०।१०

के आधार पर स्वामी दयानन्द प्रतिपादित नियोग प्रथा का खण्डन किया। पं० गुरुदत्त ने यमयमी के संवादसूक्त में आये इस मन्त्र का वास्तविक अर्थ करते हुये स्वामी जी के वेदार्थ की पुष्टि की। आर्य ट्रैक्ट सोसाइटी लाहौर से १८८० ई० में प्रकाशित।

4. Mr. T. William's on Vedic Text No. 1. The

Atmosphere. डी० विलियम्स का एक लेख पं० गुरुदत्त के उपर्युक्त निबन्ध के खण्डन में 'आर्य' में छपा था। पं० गुरुदत्त ने आक्षेपकर्ता की आपत्तियों का जो उत्तर दिया, वह मूल निबन्ध के साथ पाद-टिप्पणियों के रूप में प्रकाशित हुआ।

5. Mr. Pincot on the Vedas. सुप्रसिद्ध हिन्दीप्रेमी अंग्रेज विद्वान् फ्रेडरिक पिन्काट के वेदविषयक विचारों की समीक्षा इस लेख में की है।

अन्य महत्त्वपूर्ण कार्य—पं० गुरुदत्त के प्रयत्न से चारों वेद-संहिताओं को ऋषि, देवता, छन्द और स्वर के उल्लेखपूर्वक विरजानन्द प्रेस लाहौर ने सुन्दर छपाई में प्रकाशित किया[1]। सम्भवतः इन्हीं के आधार पर वि० सं० १९५४-१९५८ तक वैदिक यन्त्रालय अजमेर से प्रथम बार चारों वेदों की संहिताओं का मुद्रण हुआ[2]।

पं० गुरुदत्त की समग्र ग्रन्थावली मूल रूप में The works of late Pt Gurudatta Vidyarthi M. A. with biographical Sketch शीर्षक से The Aryan Printing Publishing and general Trading company Limited Lahore से प्रकाशित हुई। इसका प्रथम संस्करण १८९७ ई० तथा तृतीय संस्करण १९१२ ई० में प्रकाशित हुआ। ग्रन्थावली का द्वितीय भाग भी प्रकाशित हुआ, जिसमें पं० गुरुदत्त के कतिपय स्फुट निबन्ध संगृहीत किये गये। ग्रन्थावली के प्रथम भाग को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने Wisdom of the Rishis के नाम से कुछ वर्ष पूर्व प्रकाशित किया।

---

१ (क) यजुर्वेदसंहिता ऋषि-देवता-छन्दः-स्वरपूर्विका यजुःसंहितानुसारेण संशोधिता, लवपुरे विरजानन्दयन्त्रालये १९४७ विक्रमाब्दे मुद्रिता।

(ख) ऋग्वेदसंहिता—१९४६ वि० मुद्रिता। [अथर्ववेद संहिता हमारी दृष्टि में नहीं आई, पुनरपि इतना निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि उसमें ऋषि देवता आदि का निर्देश नहीं था। यु० मी०]

२. आर्यसमाज के विद्वानों और जनसाधारण को यह भ्रान्ति है कि वैदिक यन्त्रालय अजमेर की छपी वेद की संहिताएं ऋषि दयानन्द द्वारा प्रकाशित हैं। इस भ्रम का निराकरण इसी से हो जाता है कि चारों वेदों की संहिताएं ऋषि के स्वर्गवास के १५-१६ वर्ष पश्चात् छपीं। यु० मी०

प० गुरुदत्त का मूल लेखन-कार्य अंग्रेजी में हुआ था। अंग्रेजी भाषा पर विद्वान् लेखक का असाधारण अधिकार था, यह इस बात से विदित होता है कि प० भगवद्दत्त जैसे वैदिक विद्वान् तथा प० सन्तराम जैसे मूर्धन्य साहित्यकार को भी इन रचनाओं का सफलतापूर्वक हिन्दी भाषानुवाद करने में अत्यन्त कठिनाई हुई थी। यह गुरुदत्त लेखावली के अनुवादकों की भूमिका से विदित होता है। यह अनुवाद आर्य पुस्तकालय लाहौर से १९७५ वि० में सर्वप्रथम प्रकाशित हुआ था। उसके कुछ भाग को गोविन्दराम हासानन्द ने वेदप्रकाश मासिक के विशेषांक के रूप में भी प्रकाशित किया था। अभी हाल में प० ओमप्रकाश आर्योपदेशक जालन्धर ने प० गुरुदत्त की कतिपय महत्त्वपूर्ण पुस्तकों को पुनः प्रकाशित किया है। प० गुरुदत्त की इच्छा स्वामी दयानन्द का एक जीवनचरित्र लिखने की थी। जब वे मृत्युशय्यासीन थे, तो उनसे पूछा गया कि उनके द्वारा लिखे जानेवाले जीवन चरित्र की पाण्डुलिपि कहां है? इस पर पण्डित जी ने बड़ा मार्मिक उत्तर दिया—'मैं ऋषि का जीवन कलम और स्याही से नहीं लिख रहा, अपितु अपने दैनन्दिन जीवन में उतार रहा हूं।'
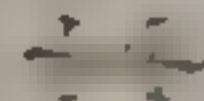
१. Commentary on upanishads (ईश और माण्डूक्य), Pecuniomania, The Realities of Inner life.

(५) पं० तुलसीराम स्वामी

(सामवेद-भाष्यकार)

अपने युग के अद्वितीय वेद के विद्वान् पं० तुलसीराम स्वामी का जन्म ज्येष्ठ शुक्ला २ सं० १९२४ वि० को परीक्षित गढ़ (जिला मेरठ) में पं० हजारीलाल स्वामी के यहाँ हुआ। बाल्यकाल में इनकी शिक्षा पिता के सान्निध्य में हुई। ८ वर्ष की अवस्था में यज्ञोपवीत हुआ और गायत्री-जप की दीक्षा मिली। ११ वर्ष की अवस्था में बालक तुलसीराम शीतला रोग से आक्रान्त हुए, जिसके कारण इन्हें एक नेत्र की हानि उठानी पड़ी। इनका संस्कृत अध्ययन गढ़मुक्तेश्वर में पं० लज्जाराम के द्वारा हुआ।

१९४० वि० में स्वामी जी के सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा वेदाङ्ग प्रकाश आदि ग्रन्थों को पढ़ा, जिसके फलस्वरूप उनकी प्रवृत्ति आर्यसमाज की ओर हुई। पुनः १९४१ वि० में देहरादून जाकर पं० युगलकिशोर से इन्होंने अष्टाध्यायी आदि व्याकरण ग्रन्थ पढ़े। स्वामी दयानन्द के कार्यकर्ता पं० दिनेशराम से भी कुछ दिन तक पढ़ने का इन्हें अवसर मिला। पं० घासीराम जी के सम्पर्क में आकर तुलसीराम विधिवत् आर्यसमाज के सभासद् बन गये। पं० तुलसीराम अपने युग के अद्वितीय शास्त्रार्थ महारथी, वक्ता, प्रगल्भ लेखक तथा शास्त्रों के प्रौढ़ विद्वान् थे। १९५० वि० में वे पं० भीमसेन शर्मा के सहयोगी बनकर आर्य-सिद्धान्त के सम्पादन में उनकी सहायता करने लगे। कालान्तर में जब पं० भीमसेन ने आर्यसमाज का परित्याग कर पौराणिक मत की दीक्षा ली, तो पं० तुलसीराम ने ही उन्हें आगरे के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ में परास्त किया। पं० अम्बिकादत्त व्यास से भी उनका शास्त्रार्थ मेरठ में हुआ था।

पं० तुलसीराम ने १९५५ वि० में 'स्वामी प्रेस मेरठ' की स्थापना की। जनवरी १८८७ ई० से वे वेद-प्रकाश नामक मासिक पत्र का सम्पादन एवं प्रकाशन करने लगे। इस पत्र ने पर्याप्त लोक-प्रियता अर्जित की। इसमें वैदिक एवं शास्त्रीय विषयों पर उच्च कोटि के लेख छपते थे। तुलसीराम जी ने गुरुकुल वृन्दावन में अध्यापन कार्य भी किया। यद्यपि उनके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या बहुत अधिक है, परन्तु वैदिक साहित्य के अन्तर्गत उनकी निम्न कृतियों का परिगणन होता है—

खण्डन में पं० बलदेव प्रसाद मिश्र द्वारा लिखित 'भ्रम-दिवाकर' का उत्तर।

५. षड्दर्शन-भाष्य—मीमांसा के मात्र २५ प्रारम्भिक सूत्रों के भाष्य के अतिरिक्त स्वामी जी ने पाँचों दर्शनों का हिन्दी में सुगम भाष्य किया।

६. श्रीमद्भगवद्गीता-भाष्य—आर्य मन्तव्यानुसार गीता की टीका तथा संगति।

७. विदुरनीति का भाषानुवाद—सं० १९५५ वि० में प्रकाशित।

८. नारदीय-शिक्षा—गानस्वर विषयक यह सामवेद का शिक्षा ग्रन्थ फाल्गुन १९६३ वि० में स्वामी जी ने सम्पादित कर प्रकाशित किया।

९. श्लोकबद्ध वैदिक निघण्टु—प्रतिभावान् श्री भास्करराय दीक्षित कृत इस निघण्टु का सम्पादन एवं प्रकाशन स्वामी जी ने १८९८ ई० में किया।

१०. भर्तृहरिकृत नीति शतक का भाषानुवाद।

खण्डनमण्डन के ग्रन्थ

१. **मूर्तिपूजा-प्रकाश**—(सं० १९५७ वि० में प्रकाशित)। २. **पिण्डपितृयज्ञ**—इस पुस्तक में यजुर्वेद, शतपथब्राह्मण तथा कात्यायन श्रौतसूत्र एवं तत्सम्बन्धी मीमांसा दर्शन के अधिकरण का विवेचन करते हुये पिण्डपितृयज्ञ की व्याख्या की है, और उसे मृतक श्राद्ध से भिन्न सिद्ध किया है।

३. **भीम-प्रश्नोत्तरी**—पं० भीमसेन शर्मा के आक्षेपों का निराकरण।

४. **पं० तुलसीराम स्वामी के चार व्याख्यान।**

अन्य ग्रन्थ—रामलीला, वैदिक देवपूजा, ईश्वर और उसकी प्राप्ति, मुक्ति और पुनर्जन्म, नमस्ते, शास्त्रार्थ हैदराबाद, सन्ध्योपासन (आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त द्वारा १८९८ ई० में प्रकाशित), संस्कृत भाषा ४ भाग।

'मिश्रबन्धु विनोद' में पं० तुलसीराम स्वामी का सं० २१३५ पृ० १२७५ पर उल्लेख किया गया है। इनके अन्य ग्रन्थों में ईश केन कठ तथा मुण्डक उपनिषदों का अनुवाद, हितोपदेश का भाषानुवाद, सुभाषित रत्नमाला एवं दयानन्द-चरितामृत का उल्लेख विनोदकार ने किया है।

(६) पं० शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ

(ऋग्वेद-भाष्यकार)

सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० शिवशंकर शर्मा का जन्म दार्शनिक विद्वानों की जन्मभूमि मिथिला प्रदेश के दरभंगा जिलान्तर्गत 'चिहुटा' ग्राम में हुआ। 'शिवराजविजय' जैसे प्रौढ संस्कृत गद्य ग्रन्थ के लेखक तथा अप्रतिम ख्याति-प्राप्त विद्वान् पं० अम्बिकादत्त व्यास इनके गुरु थे। शिवशंकर शर्मा ने अपने अध्ययन काल में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों का गम्भीर अनुशीलन किया। तत्पश्चात् वे वेदाध्ययन की ओर प्रवृत्त हुए। और कालान्तर में उन्होंने आर्यसमाज के उपदेशक का कार्य शिरोधार्य किया। १८९८ से १९०० ई० तक वे काशी में रहे, और सुप्रसिद्ध आर्य नेता बाबू बालकृष्ण सहाय के सहयोग से धर्म-प्रचार का कार्य करते रहे। यहां रहकर उन्होंने कतिपय तत्त्वात्मक लेख लिखे, जो 'आर्यावर्त' में प्रकाशित हुये।

१९०२ से १९०६ ई० तक शिवशंकर शर्मा का कार्यस्थल अजमेर रहा। यहां वे स्वामी दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा के पण्डित के रूप में कार्य करते रहे। इसी बीच उन्होंने 'छान्दोग्य' और 'बृहदारण्यक' उपनिषद् पर संस्कृत तथा हिन्दी में विशद भाष्य लिखे, जो उक्त सभा ने प्रकाशित किये। १९०६ के अगस्त मास में शर्मा जी पंजाब चले गये, और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्त्वावधान में उपदेशक का कार्य करते रहे। इसी बीच उन्होंने **वेदतत्त्व प्रकाश** शीर्षक ग्रन्थमाला का लेखन प्रारम्भ किया, जिसके अन्तर्गत **त्रिदेव निर्णय, वैदिक इतिहासार्थनिर्णय, ओंकार निर्णय, जातिनिर्णय** तथा **श्राद्ध-निर्णय** शीर्षक पांच ग्रन्थ प्रकाशित हुए। महात्मा मुन्शीराम के आग्रहवश कुछ काल के लिये वे गुरुकुल कांगड़ी में वेदोपाध्याय के पद पर भी कार्य करते रहे। पं० शिवशंकर शर्मा के वैदिक कृतित्व का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

१ **ऋग्वेदभाष्य** — स्वामी दयानन्द कृत ऋग्वेदभाष्य पूर्ण नहीं हो सका था। ऋग्वेद के अवशिष्ट अंश का भाष्य पं० शिवशंकर ने आरम्भ किया। यह भाष्य अष्टम मण्डल के प्रारम्भ से लेकर २९वें सूक्त पर्यन्त है।[1]

---

१. कलकत्ता निवासी सेठ [illegible] जी की आर्थिक सहायता से वि० सं० १९८० में प्रकाशित।

२. **वैदिक इतिहासार्थ निर्णय**—सन् १९०९ ई० में प्रथम बार प्रकाशित हुआ। वेदों में कतिपय ऐसे पद प्रयुक्त हुए हैं, जिन्हें सामान्यतया व्यक्तिवाचक संज्ञाएं माना जाता है। पाश्चात्य तथा एतद्देशीय विद्वानों ने ऐसे नामों के आधार पर वेदों में लौकिक अनित्य इतिहास की कल्पना की। इन्हीं इतिहास विषयक धारणाओं का समाधान करने के लिये शर्मा जी ने इस ग्रन्थ की रचना की। इसमें शुनःशेप और नरमेध, कूप पतित त्रित ऋषि, च्यवन का यौवनदान, दधीचि की अस्थियों से वृत्र हनन आदि प्रसिद्ध पौराणिक गाथाओं का वेदमन्त्रों में आभास प्रतीत होने, तथा तद् विषयक भ्रान्तियों के समाधान का प्रयत्न किया गया है। इसी प्रकार घोषा, लोमशा, लोपामुद्रा, यमयमी, पुरूरवा उर्वशी विषयक वैदिक उपाख्यानों की यौगिक दृष्टि से संगति लगाकर वेदों को इतिहासवाद से मुक्त करने का प्रयास किया गया है।

३. **वैदिक पीयूष-बिन्दु**—कुछ उदात्त भावना-प्रधान मन्त्रों की व्याख्या। सत्यप्रकाशन मथुरा ने इसे प्रकाशित किया है। इससे पूर्व यह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, लाहौर से प्रकाशित हुई थी।

४. **वैदिक रहस्य**—शीर्षक ग्रन्थमाला के अन्तर्गत **चतुर्दश भुवन, वसिष्ठ नन्दिनी, वैदिक विज्ञान** तथा **वैज्ञानिक सिद्धान्त** शीर्षक चार ग्रन्थ प्रकाशित हुये। अन्तिम ग्रन्थ अप्राप्य है। इसका प्रकाशन काल १९६९वि० है। मिश्रबन्धु विनोद में प्रथम तीन का उल्लेख संख्या २५२७ पर किया गया है।

शर्मा जी के अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है—

१. **छान्दोग्योपनिषद्-भाष्य**—संस्कृत तथा हिन्दी में रचित इस बृहद् भाष्य को परोपकारिणी सभा अजमेर ने प्रकाशित किया।

२. **बृहदारण्यकोपनिषद्-भाष्य**—संस्कृत तथा हिन्दी में लिखित यह भाष्य भी उक्त सभा द्वारा सन १९११ ई० में प्रकाशित किया गया। अब तक तीन संस्करण छपे हैं।

३. **त्रिदेव-निर्णय**—ब्रह्मा विष्णु और शिव की वैदिक व्याख्या।

४. **जाति-निर्णय**—आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब द्वारा प्रकाशित।

५. **श्राद्ध-निर्णय**—आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब द्वारा १९०८ ई० में प्रथम बार प्रकाशित।

६ ओंकार-निर्णय—यह भी आर्य प्रतिनिधि पञ्जाब द्वारा प्रकाशित किया गया था।

श्री पं० शिवशंकर जी कुछ ग्रन्थ चिरकाल से अप्राप्य हो रहे थे, पं० शम्भुनाथ वैदिक पुस्तकालय बनारस ने जाति-निर्णय, त्रिदेव-निर्णय, श्राद्धनिर्णय, ओंकारनिर्णय तथा वैदिक इतिहासार्थ निर्णय को पुनः प्रकाशित कर इन्हें सुलभ बनाने का उत्तम कार्य किया है।

७ वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है—यह एक उपयोगी छोटा ट्रैक्ट है। इसको स्व० श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु ने स्व० श्री पंडित जी के घर से प्राप्त किया था, और श्री बलदेव आर्य (आर्यसमाज चुनाताला वाराणसी) ने सन् १९३५ ई० में इसे प्रकाशित किया था।

८ अद्वैतवाद-निर्णय—पण्डित जी का यह महत्त्वपूर्ण बृहत्काय ग्रन्थ अभी तक अप्रकाशित है। यह आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर के कार्यालय में विद्यमान था। सभा के अधिकारियों ने इसके प्रकाशन के लिए निर्णय देने का भार श्री पं० ब्रह्मदत्त जी को सन् १९४६ में सौंपा था। सन् १९४७ में देशविभाजन के समय श्री जिज्ञासु जी इस हस्तलेख को अपने साथ सुरक्षित रूप में भारत ले आये। इस ग्रन्थ की प्रतिलिपि करके श्री जिज्ञासु जी ने इसे पञ्जाब प्रतिनिधि सभा को लौटा दिया। यह प्रतिलिपि रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ के पुस्तकालय में सुरक्षित है। यह ग्रन्थ अधूरा है। अधूरा होते हुए भी इसका प्रकाशन आवश्यक है।

अन्य पुस्तकें—सन् १९१६ में भागलपुर से 'अलौकिक-माला' का द्वितीय संस्करण छपा है। उसमें पं० शिवशंकर जी कृत निम्न अन्य पुस्तकों का निर्देश मिलता है—

१ अलौकिक-माला—इसमें गोस्वामी तुलसीदास कृत रामायण की कुछ गप्पों का निदर्शन कराया गया है।

२. कृष्णमीमांसा।

३. ईश्वरीय पुस्तक कौन?—यह ऊपर संख्या ७ पर निर्दिष्ट पुस्तक से भिन्न प्रतीत होती है।

४ प्रश्न—इसमें रामायण-प्रेमियों के प्रति गूढ़-गूढ़ प्रश्न हैं।

अन्त की तीनों पुस्तकें हमें देखने को नहीं मिलीं।

(७) महामहोपाध्याय पं० आर्यमुनि

(ऋग्वेद-भाष्यकार)

वेद, दर्शन, उपनिषद् तथा अन्यान्य शास्त्रों पर विस्तृत आलोचनात्मक टीका एवं भाष्य-ग्रन्थों के प्रणेता महामहोपाध्याय पं० आर्यमुनि अपने युग के अद्वितीय विद्वान् थे। आर्यसमाज के विद्वानों में वे प्रथम और अन्तिम थे, जिन्हें अंग्रेजी सरकार द्वारा 'महामहोपाध्याय' की सर्वोच्च उपाधि से विभूषित किया गया। आर्यमुनि जी का जन्म पटियाला राज्य के 'रूमाणा' ग्राम में [वि० सं० १९१० के द्वितीय दशक] हुआ। इनका पूर्व नाम 'मनिराम' था। आर्यसमाज में प्रविष्ट होने के पश्चात् उन्होंने अपना नाम 'आर्यमुनि' रख लिया। काशी में रहकर आर्यमुनि जी संस्कृत भाषा और वैदिक साहित्य का विस्तृत अध्ययन करते रहे। पुनः वे डी० ए०वी० कालेज लाहौर में वर्षों तक संस्कृत तथा दर्शनशास्त्र के प्राध्यापक रहे।[1]

अपने जीवनकाल में आर्यमुनि जी ने अनेक मौलिक तथा टीका एवं भाष्य-ग्रन्थों का प्रणयन किया। उनके वैदिक ज्ञानरत्न का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

---

१. सं० १९९० [सन् १९३३] में अजमेर में मनाई गई दयानन्द निर्वाण अर्धशताब्दी पर हुए चतुर्वेद पारायण महायज्ञ के प्रधान ब्रह्मा श्री पं० आर्यमुनि जी थे। मैं उसमें वेदपाठी था। इस अवसर पर मुझे ६-७ दिन निरन्तर उनके सान्निध्य में रहने का अवसर प्राप्त हुआ। एक दिन उन्होंने मुझे बताया कि सं० १९३६ में जब स्वामी दयानन्द काशी आये थे, तब मैं वहां नव्यन्याय पढ़ता था। स्वामी जी के व्याख्यान सुनकर मुझे ज्ञात हुआ कि स्वामी जी नव्यन्याय नहीं जानते। अतः मैंने उनसे एक दिन नव्यन्याय की शैली से शास्त्रचर्चा आरम्भ की, तो स्वामी जी ने मेरा मानमर्दन करने के लिए नव्यन्याय की भाषा में ही मेरे प्रश्नों के उत्तर दिये। और अन्त में कहा कि वत्स! इस नव्यन्याय में कुछ नहीं है। केवल वागाडम्बर मात्र है। सारा नव्यन्याय प्रमाण-मीमांसा में ही समाप्त हो गया। न्यायशास्त्रकार ने जिन प्रमेयों के यथार्थ ज्ञान के लिए प्रमाणों का उल्लेख किया, उन प्रमेय भाग को नव्य-न्याय ने कोई महत्त्व ही नहीं दिया। वास्तविक रूप से न्यायशास्त्र जानना चाहते हो, तो न्यायदर्शन का वात्स्यायन भाष्य पढ़ो। वे नव्यन्याय की भाषाशैली को काकभाषा कहते थे। यु० मी०

१. ऋग्वेदभाष्य—स्वामी दयानन्द ऋग्वेद के दो तिहाई भाग पर ही भाष्य लिख पाये थे। ऋग्वेद के शेषांश पर उसी शैली में भाष्य लिखने का श्लाघनीय प्रयास पं० आर्यमुनि ने किया। आर्यमुनि का ऋग्वेदभाष्य सप्तम मण्डल के ६१ वें सूक्त के तृतीय मन्त्र से प्रारम्भ होकर नवम मण्डल पर्यन्त है[1]। यह भाष्य संस्कृत तथा हिन्दी दोनों ही भाषाओं में लिखा गया है। ६ खण्डों में प्रकाशित इस भाष्य का प्रकाशन काल इस प्रकार है—

१. ऋग्वेदभाष्य—प्रथम खण्ड, जार्ज यन्त्रालय काशी से १९७४ वि. में प्रकाशित।

२. ऋग्वेदभाष्य—द्वितीय खण्ड, चन्द्रप्रभा प्रेस काशी से १९७५ वि० में प्रकाशित।

३. ऋग्वेदभाष्य—तृतीय खण्ड, हितचिन्तक प्रेस काशी से १९७९ वि० में प्रकाशित।

४. ऋग्वेदभाष्य—चतुर्थ खण्ड, हितचिन्तक प्रेस, काशी से १९८० वि० में प्रकाशित।

५. ऋग्वेदभाष्य—पञ्चम खण्ड, चन्द्रप्रभा प्रेस, काशी से १९७८ वि० में प्रकाशित।

६. ऋग्वेदभाष्य—षष्ठ खण्ड, हितचिन्तक प्रेस, काशी से १९८० वि० में प्रकाशित[2]।

भाष्यारम्भ में अपने एतद्विषयक प्रारम्भिक वक्तव्य को लेखक ने निम्न श्लोकों में उपस्थित किया है—

दयानन्दः समाख्यातो यस्यान्ते च सरस्वती।
एतन्नामान्वितः स्वामी दयानन्दः सरस्वती॥

---

१. मण्डल संख्या की दृष्टि से 'दो तिहाई' लिखा गया है। मन्त्र-संख्या की दृष्टि से आधे से कुछ ही अधिक भाग पर भाष्य लिखा गया है। यु० मी०

२. पुराने लोगों के आर्यजनों से यह सुनने में आता है कि आर्यमुनि जी ने दशम मण्डल पर भी भाष्य लिखा था।

३. न्यायवैशेषिकाद्यं वै शास्त्रषट्कं पुरा किल।
व्याख्यातं मुनिना येन भाष्यं तेनैव तन्यते॥

सेतुर्लोकव्यवस्थायाः नीरासीद्दयावारिधेः ।
वेदस्य स्थापना तेन ह्यकारि भूतले पुनः ॥
एकषष्टितमे सूक्ते सप्तमे मण्डले तथा ।
द्वितीयमन्त्र सम्प्राप्य तद्भाष्यमस्ततां गतम् ॥
इत्यालोच्य प्रखिन्नेन मयाऽऽर्यमुनिनाऽधुना ।
शेषं विधीयते भाष्यं स्वामिमार्गानुगामिना ॥

अर्थात्—स्वामी दयानन्द सरस्वती नामक जो महात्मा हुए हैं, उन्होंने धराधाम पर वेद की व्याख्या तथा मर्यादा स्थापित की। उन्होंने ऋग्वेद के सप्तम मण्डलान्तर्गत ६१ वें सूक्त के द्वितीय मन्त्र पर्यन्त ऋग्वेद का भाष्य किया, तत्पश्चात् वे परमधामवासी हुए। उस स्थिति में दुःखी होकर मुझ आर्यमुनि द्वारा शेष ऋग्वेद का यह भाष्य स्वामी दयानन्द प्रदर्शित मार्गानुसार ही बनाया जा रहा है।

भाष्यकार ने ऋग्वेद भाष्य के प्रथम खण्ड में वेदविषयक विस्तृत विवेचना प्रस्तुत करने के पश्चात् निम्न श्लोक में भूमिका-लेखन की समाप्ति की तिथि का निर्देश किया—

कृष्णप्रियतमे मासे मार्गशीर्षे मनोरमे ।
त्रयोदश्यां तिथौ काश्यां मुनिनेयं प्रकाशिता ॥

इस प्रकार भाष्य लेखन का प्रारम्भ मार्गशीर्ष कृष्णा त्रयोदशी १९७८ वि० में माना जा सकता है। इस भाष्य में प्रथम मन्त्रपाठ, पुनः पदपाठ, तत्पश्चात् संस्कृत पदार्थ तथा भावार्थ दिया गया है। अन्त में प्रत्येक मन्त्र का हिन्दी पदार्थ तथा भावार्थ भी दिया गया है। भाष्य की संस्कृत सुगम तथा प्रसाद गुण युक्त है।

महामहोपाध्याय जी ने वेदों के अतिरिक्त लगभग सभी आर्ष शास्त्रों पर विस्तृत एवं प्रभावपूर्ण भाष्य टीकाएं लिखीं, जिनका इस प्रकार उल्लेख किया जा सकता है—

१. **षड्दर्शन-भाष्य**—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त और मीमांसा दर्शनों पर आर्यमुनि जी ने महत्त्वपूर्ण भाष्य लिखे। इनमें मीमांसा भाष्य ६ अध्याय पर्यन्त ही है।

२. **षड्दर्शनादर्श**—छहों वैदिक दर्शनों में अभेद प्रतिपादित करने वाला ग्रन्थ।

३. उपनिषदार्थ-भाष्य—ईश से लेकर बृहदारण्यकोपनिषद् पर्यन्त दश उपनिषदों का यह भाष्य उपनिषदों की शङ्करवादी व्याख्याओं के निराकरण में लिखा गया है। इसमें ईश्वर और भेदपरक दृष्टि से व्याख्या की गई है। प्रथम आठ उपनिषदों का अनुवाद गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने २००६ वि० में द्वितीय बार प्रकाशित किया था। छान्दोग्य उपनिषद् भाष्य का प्रथम संस्करण १९६७ वि० में लाहौर से, तथा बृहदारण्यकोपनिषद् भाष्य का १९८० वि० में काशी से प्रकाशित हुआ।

४. वेदान्त-तत्त्व-कौमुदी—वेदान्तदर्शन के मुख्य सिद्धान्त सं० १९७२ वि० में प्रकाशित।

५. मानवार्य-भाष्य—मनुस्मृति का भाषानुवाद।

६. वाल्मीकि रामायणार्य-टीका—सं० १९९९ वि० में लाहौर से प्रकाशित।

७. महाभारतार्य-टीका—महाभारत का संक्षिप्त संस्करण, मूल तथा अनुवाद सहित।

८. गीतायोगप्रदीपार्य-भाष्य—श्रीमद्भगवद्गीता पर टीका।

९. आर्यमन्तव्य-प्रकाश—सत्यार्थप्रकाश की शैली में रचित वैदिक मन्तव्यों का ग्रन्थ। दो भागों में समाप्त।

१०. वैदिक काल का इतिहास—१९२५ ई० में पं० देवदत्त शर्मा, कर्णवास द्वारा प्रकाशित।

११. नरेन्द्र-जीवन-चरित्र—भीष्मपितामह का जीवन चरित्र।

१२. वेदमर्यादा।

१३. दयानन्द महाकाव्य—अर्थात् दयानन्द चरित मानस काव्य। पं० देवदत्त शर्मा द्वारा १९८१ वि० में प्रकाशित।

३. महर्षि दयानन्द सरस्वती—का संक्षिप्त अंग्रेजी जीवनचरित। १८६२ ई० में प्रकाशित।

४. The Ocean of Mercy—स्वामी दयानन्द कृत गोकरुणानिधि का अंग्रेजी अनुवाद।

५. Vedic Readears—चार भागों में। यजुर्वेद के ६ अध्यायों, तथा ऋग्वेद के कुछ सूक्तों का अंग्रेजी तथा हिन्दी में अनुवाद।

६. भर्तृहरिकृत नीति तथा वैराग्य शतक[1], तथा चाणक्य नीति का अंग्रेजी अनुवाद[2]।

७. Light of religion or Dharam Parkash—इसमें Vedic Readers, Sacred songs, principles of Religion तथा संध्या का अनुवाद सम्मिलित है।

८. उपनिषद्—ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक तथा तैत्तिरीय उपनिषदों का अंग्रेजी अनुवाद।

९. Prayer Book or Sandhya—नागरी तथा रोमन लिपि में संध्या का मूल पाठ, तथा हिन्दी एवं अंग्रेजी में मन्त्रों का शब्दार्थ तथा भावानुवाद।

१०. The five Great Duties of Aryans—पञ्च महायज्ञों के मन्त्रों का नागरी तथा रोमन लिपि में पाठ देकर दोनों भाषाओं में अनुवाद किया गया है।

११. The Shraddha—मृतक श्राद्ध खण्डन। हिन्दी तथा अंग्रेजी में पृथक्शः प्रकाशित।

१२. Who wrote the Puranas? पं० लेखराम रचित 'पुराण किसने बनाए?' पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद।

१३. Reason and Instinct—पशुओं में मन की सत्ता वैज्ञानिक प्रमाणों के आधार पर सिद्ध की गई है।

---

1. Morals and Renunciation of Bhartrihari.
2. Chanakya Morals (English Translation with Sanskrit Text)

१४. Defence of Manu—मद्रास [illegible] द्वारा प्रकाशित Code of Manu शीर्षक पुस्तक का उत्तर।

१५. Principles of Religion, Morality, Health and Happiness—वेद, बाइबल तथा कुरान की शिक्षाओं का संग्रह।

१६. The way to God—योगविषयक पुस्तक। शंकराचार्य लिखित 'विवेक चूडामणि' पर आधारित।

मा० दुर्गाप्रसाद ने 'मांसाहार-निषेध' तथा 'मदिरा-निषेध' विषयक अनेक ग्रन्थ लिखे। यथा—

१७. Manu and Vegetarianism—मनुस्मृति में मांसभक्षण विषयक प्रक्षिप्त श्लोकों का विवेचन।

१८. Spiritual Advantages of Vegetarianism—विरजानन्द प्रेस लाहौर से १८८६ ई० में प्रकाशित।

१९. Physical evils of flesh eating—डा० ए० आर० [illegible] का भाषण।

२०. Vegetarianism—शाकाहार के समर्थन में यूरोपियन विद्वानों की उक्तियों का संग्रह।

२१. Intemperance—मदिरापान की हानियों का विवेचन।

२२. Dangers of moderate drinking.

२३. Drunkenness and its cure.

२४. A reply to Mr Agnihotri's Pandit Dayanand unveiled—देवसमाज के प्रवर्तक शिवनारायण अग्निहोत्री लिखित पुस्तक का प्रत्युत्तर।

२५. Sacred songs—गीता वेद आदि ग्रन्थों पर आधारित आध्यात्मिक गीत, तथा नानक कबीर आदि के निर्गुण भजनों का संग्रह।

२६. Dogmas of Christianity—ईसाई मत विषयक आलोचनात्मक निबन्ध।

२७. Aryan litany—स्वामी दयानन्द कृत आर्याभिविनय का अंग्रेजी अनुवाद।

२८. Caste System—Its social evils and their Reminders. १९०० ई० में आगरा से प्रकाशित।

२९. Devotion of God. ३०. Faith and culture. ३१. Has animal no soul ?

३२. Our duties and work.

३३. The idea and existence of God.

३४. The formation of Character.

३५. The immorality of soul.

३६. The transmigration of soul.

३७. The rights and position of women.

डी० ए० वी० स्कूल तथा कालेज (लाहौर) में धर्मशिक्षा के पाठ्यक्रम में निर्धारित 'धर्मशिक्षा पाठावली' का संग्रह भी मा० दुर्गाप्रसाद ने किया था। इसके अन्तर्गत 'सत्यार्थप्रकाश-संग्रह' नामक पुस्तक उनके द्वारा सम्पादित होकर १८९१ ई० में पञ्जाब-पुस्तक-उपसभा द्वारा छपी।

इतिहास विषयक ग्रन्थ- १०. नूरं वन । ११. नल दमयन्ती, १२ द्रौपदी का पति, १३ शंकराचार्य का जीवनचरित और उनकी शिक्षा ।

स्फुट ग्रन्थ--१४ आर्य जीवन, १५. दिव्य जीवन, १६. आर्य पञ्च-महायज्ञ-पद्धति, १७. वैदिक स्तुति प्रार्थना । १८. आत्म रहस्य (दो भाग) १९. बुद्धिशास्त्र, २० उपदेश सप्तक, २१. प्रार्थना पुस्तक, २२. शताब्दी शतक ।

संस्कृत व्याकरण विषयक ग्रन्थ—

संस्कृतवर्णमाला, राजव्याकरण, बालव्याकरण, शब्दशास्त्र ।

पंजाबी संस्कृत शब्दशास्त्र, राजकोष (हिन्दी)—संस्कृत प्रथम पुस्तक, हिन्दी प्रथम पुस्तक ।

अवेस्ता का संस्कृतानुवाद—पं० राजाराम ने पारसी धर्मग्रन्थ 'अवेस्ता' का संस्कृतानुवाद एवं प्रकाशन भी प्रारम्भ किया था । उसका प्रथमभाग 'अवेस्ता संस्कृतच्छाया' 'यस्ना सप्तहात यस्नतं पर्यन्त' १ वैशाख १९९? वि० में प्रकाशित हुआ । इसका प्राक्कथन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । वैदिक संस्कृत शब्द जिन नियमों के अनुसार अवेस्ता की भाषा में परिवर्तन हुए हैं, उनका संक्षेप में निरूपण किया गया है । कोई भी संस्कृतज्ञ इन नियमों को हृदयङ्गम करके अवेस्ता को संस्कृत में रूपान्तरित कर सकता है । इसके साथ ही अवेस्ता की भाषा के विशिष्ट उच्चारण पर भी प्रकाश डाला है ।

विशेष—यद्यपि पं० राजाराम जी ने आर्यसमाज वा उसकी संस्थाओं में रहते विविध ग्रन्थों की रचना की, परन्तु उनके ग्रन्थ पूर्णतया आर्यसमाज के सिद्धान्त के अनुकूल नहीं हैं । उनमें उत्तरोत्तर आर्यसमाज के सिद्धान्तों से भिन्नता बढ़ती गई । अथर्ववेद भाष्य तो सायण एवं पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि से ही लिखा गया है ।

(१३) पं० चमूपति एम. ए.

पं० चमूपति उच्च कोटि के वैदिक विद्वान् तथा 'वैदिक कोष' के प्रणेता थे। पं० चमूपति का जन्म १५ फरवरी १८९३ ई० को 'बहावलपुर' [पाकिस्तान] में हुआ। उनके पिता का नाम 'मेहता वसन्दाराम' तथा माता का नाम 'उत्तमी देवी' था। बालक का नाम 'चम्पतराय' रक्खा गया। मिडिल परीक्षा में आपने रियासत में उत्तीर्ण विद्यार्थियों में सर्व प्रथम स्थान प्राप्त किया। पुनः मैट्रिक परीक्षा पास कर वे बहावलपुर के सादिक ईजर्टन कालेज में प्रविष्ट हुये। पढ़ते हुये आपने उर्दू काव्य लिखना प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम सिख धर्म के ग्रन्थ जपजी का उर्दू काव्य में अनुवाद किया। एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने के पश्चात् आप रियासत के एक मिडिल स्कूल में अध्यापक बन गये।

मेहता चम्पतराय के विचारों में अभी तक स्थिरता नहीं आई थी। वे प्रारम्भ में सिख धर्म की ओर आकृष्ट हुये, परन्तु तत्काल ही वे नास्तिकता की ओर झुक गये। इसी बीच उन्हें स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के अध्ययन का सुयोग मिला। वे यद्यपि नास्तिकता के मत से तो हट गये, परन्तु उनका झुकाव शाङ्कर वेदान्त की ओर हो गया। धीरे धीरे वेदान्त के प्रति भी उनकी आस्था शिथिल होने लगी, परन्तु मूर्तिपूजा के प्रति उनका उत्साह बढ़ने लगा। अन्ततः उनके धार्मिक विचारों की चरम परिणति आर्यसमाज द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म को स्वीकार कर लेने में हुई। अब वे चम्पतराय से चमूपति बन गये। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यसंचालन में योग देने हेतु पं० चमूपति लाहौर आ गये। सभा के द्वारा स्थापित दयानन्द सेवा सदन के सदस्य बन कर पण्डित जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचारार्थ अर्पित कर दिया। गुरुकुल कांगड़ी को भी पं० चमूपति जी की सेवाओं का लाभ मिला, और वे इस गुरुकुल के उपाध्याय, मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य के पदों पर रहे। १५ जून १९३७ को उनका स्वर्गवास हो गया। पं० चमूपति विरचित वैदिक ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है—

१. जीवन-ज्योति—यह सामवेद के आग्नेय पर्व की भावप्रधान शैली में लिखी गई व्याख्या है। इसका द्वितीय संस्करण आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा २०२१ वि० में छपा।

(१६) पं० गणेश अनन्त धारेश्वर बी. ए.

आन्ध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद के निवासी पं० धारेश्वर अपने युग के अद्वितीय विद्वान् थे। उन्होंने वेदमन्त्रार्थप्रकाश शीर्षक से 'इदन्न ममसर्वाणि' इस यजुर्वेद (अध्याय ३८।२८) के मन्त्र की विस्तृत व्याख्या संस्कृत तथा हिन्दी में लिखी। प्रथम मन्त्र का अन्वय, पुनः पदार्थ तत्पश्चात् भावार्थ लिखकर डायलाग के रूप में मन्त्र की दार्शनिक व्याख्या लिखी गई है। यह ग्रन्थ पं० तुलसीराम स्वामी के प्रबन्ध से स्वामी प्रेस मेरठ में छपा। ग्रन्थ की भूमिका श्रावण कृष्णा ८ सं० १९६३ वि० को लिखी गई। यह ग्रन्थ दो भागों में छपा। पं० धारेश्वर ने 'आत्मा' के उपनाम से कुछ ग्रन्थ अंग्रेजी में भी लिखे। इन्हें Vedic Pamphlets शीर्षक ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया था। इन ग्रन्थों के नाम इस प्रकार हैं—

1. The Supreme aim of life.
2. Love of God and God of love (ऋग्वेद मण्डल ३ सूक्त ४१ मन्त्र ७ की व्याख्या)।
3. The Super man (यजुर्वेद ३८।२६ की व्याख्या)।
4. Way from woe to weal
5. Mad man's dream.
6. Scientific beauty of sanskrit.
7. How to shape our course of life.
8. Self respect and self helf.
9. Three fold need and duty of mankind.
10. Reason, Revelation and Religion.

आत्मा के नाम से ही पं० धारेश्वर ने Vedic teachings and ideals' नामक एक अन्य पुस्तक लिखा, जो Dayanand Centenary series के अन्तर्गत महात्मा नारायण स्वामी द्वारा १९८१ वि० (१९२४ई०) में प्रकाशित हुई। प्रार्थनासमाज के नेता और सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वज्ञ डा० रामचन्द्र गोपाल भण्डारकर ने 'प्रपन्न प्रलपित' नामक एक पुस्तक लिखी थी। वस्तुतः वह उनके लेखों व्याख्यानों तथा उपदेशों का संग्रह मात्र था, जिसे उनके एक शिष्य 'सुबोध-पत्रिका' सम्पादक डी० जी० वैद्य

ने तैयार किया था। ग्रन्थ मराठी भाषा में लिखा गया था, और उसकी भूमिका सर नारायण चन्द्रावरकर ने लिखी थी। इस ग्रन्थ में डा० भण्डारकर ने वैदिक तत्त्व ज्ञान एवं भक्तिवाद की तुलना में उपनिषद् तथा गीता-प्रतिपादित तत्त्वज्ञान तथा ज्ञानेश्वर नामदेव तुकाराम आदि महाराष्ट्रीय सन्तों के भक्ति सिद्धान्त को श्रेष्ठतर प्रतिपादित किया था। श्री 'आत्मा' ने ग्रन्थ-प्रकाशित के तृतीय संस्करण (१९१९ ई० में प्रकाशित) के आधार पर उक्त पुस्तक में प्रतिपादित विचारों की विस्तृत समीक्षा की है। इस ग्रन्थ का परिशिष्ट Vedic Ideals के नाम से १९२७ ई० में पृथक् पुस्तकाकार प्रकाशित हुआ।

Vedic Pamphlets के पीछे प्रकाशित पुस्तकसूची से विदित होता है कि प्रथम पैम्फलेट The Supreme aim of life का हिन्दी मराठी तेलुगु तथा तमिल भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुआ था। The Ramayana What can it teach us? तथा Gems of thoughts from the Vedas शीर्षक दो ग्रन्थ भी सम्भवतः इन्हीं लेखक द्वारा लिखे गये थे। गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी की अंग्रेजी मुख पत्रिका 'दि वैदिक मैगजीन' में आपके अनेक लेख प्रकाशित हुए। इस पत्रिका के कांगड़ी से बन्द हो जाने पर पं० धारेश्वर ने इसका प्रकाशन हैदराबाद से किया। आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय पत्रिका में भी आपके लेख छपे। आप कई वर्षों तक उस्मानिया विश्वविद्यालय के संस्कृतविभाग में प्राध्यापक पद पर कार्य करते रहे। पं० धारेश्वर बेगम पेट स्थित वैदिक आश्रम का संचालन करते थे, तथा अपने जीवन के अन्तिम समय में 'कन्या गुरुकुल' बेगम पेट में रहे। पं० नरेन्द्र जी के अनुसार आपने लगभग १०० वर्ष की आयु प्राप्त की। उनकी पुत्री शान्तादेवी उक्त कन्या गुरुकुल का संचालन कर रही हैं। हिन्दी संस्कृत तथा अंग्रेजी में समान रूप से लिखना धारेश्वर जी की विशेषता थी।

५. वेदामृत— पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर के संयुक्त लेखन में तैयार यह ग्रन्थ पंजाब आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित हुआ। इसका एक लघु अंश (साधना प्रकरण) हकीम बीरूमल आर्य प्रेमी ने अजमेर से १६६० ई० में प्रकाशित किया। जन ज्ञान नई दिल्ली द्वारा पुनः प्रकाशित।

६. वेद-प्रवेश— वेदाध्ययन की रुचि जाग्रत करने हेतु स्वामी जी ने तीन भागों में 'वेदप्रवेश' शीर्षक पुस्तक लिखा। गुरुकुल झज्जर के मुखपत्र सुधारक ने इसे अपने विशेषांक के रूप में पुनः प्रकाशित किया।

७. वेदोपदेश—अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त तथा ऋग्वेद के स्वराज्य सूक्त की व्याख्या। सर्वप्रथम १६३० ई० में लाहौर में प्रकाशित हुई। पुनः आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से इसका द्वितीय संस्करण छपा।

८. वैदिकधर्म—शीर्षक से उपर्युक्त ग्रन्थ को १६६२ ई० में 'वेद-प्रकाश विशेषांक' के रूप में गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने प्रकाशित किया।

९. श्रुति-सूक्ति-शती—वैदिक सूक्तियों का संग्रह।

१०. वैदिक स्तुतिप्रार्थनोपासना—स्वामी दयानन्द संकलित आठ मन्त्रों की व्याख्या।

११. राष्ट्र रक्षा के वैदिक साधन· पृथ्वी सूक्त के प्रथम मन्त्र की व्याख्या।

१२. वेद-परिचय— वेदविषयक कतिपय महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का सार-गर्भित विवेचन।

स्वामी जी रचित अन्य ग्रन्थ

१. आर्यसमाज और राजनीति।

२. सन्ध्यालोक—सन्ध्या पद्धति में प्रयुक्त मन्त्रों का विवेचन।

३. हम संस्कृत क्यों पढ़ें ?– संवाद शैली में लिखित इस पुस्तक में गीर्वाण वाणी के अध्ययन की उपयोगिता वर्णित की गई है।

४. नैमित्तिक वेदपाठ—विभिन्न अवसरों पर पढ़े जाने वाले वेद मन्त्रों का उपयोगी संग्रह। ५. अध्यात्मप्रसाद, ६ ब्रह्मोद्योपनिषद्।

७. पञ्चमहायज्ञविधिः—ऋषि दयानन्द कृत इस ग्रन्थ की मार्मिक व्याख्या। प्रकाशक विश्वम्भर वैदिक पुस्तकालय, गुरुकुल झज्जर।

८. **संस्कारविधि**—स्वामी दयानन्द कृत प्रसिद्ध कर्मकाण्डपरक ग्रन्थ का सम्पादित संस्करण। इसमें संस्कारों का केवल विधि भाग छापा गया है।

९. **विरजानन्द सरस्वती का जीवन चरित्र**—दण्डी विरजानन्द की यह जीवनी वैदिक साहित्य प्रकाशन, और मधुर प्रकाशन दिल्ली ने प्रकाशित की।

१०. **ऋषि बोध कथा**—स्वामी दयानन्द के कतिपय उदात्त जीवन संस्मरणों की भावपूर्ण व्याख्या। दयानन्द वेदप्रचार मण्डल दिल्ली से प्रकाशित।

११. **हमारा नाम आर्य है, हिन्दू नहीं।**

१२. **स्वामी दयानन्द की अद्भुत बातें**—दयानन्द वेदप्रचार मण्डल दिल्ली द्वारा २००९ वि० में प्रकाशित।

१३. **दयानन्द की विलक्षण बातें**—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित।

१४. **पुराणों में परस्पर विरोध।**

१५. **वेदार्थ कोष**—इस का लेखन स्वामी जी ने पं० चमूपति के सहयोग से किया। १६. **नारद नीति**, १७. **कणिक नीति**, १८. **विदुर प्रजागर पर्वस्थ विदुर नीति**—इनकी आर्यभाषा में व्याख्या प्रकाशित की गई है।

स्वामी वेदानन्द ने अपनी स्वल्प आत्मकथा 'जीवन की भूलें' शीर्षक से लिखी। पं० जगदीश विद्यार्थी ने स्वामी जी का एक लघु चरित्र भी लिखा है।

इन सब ग्रन्थों में बृहद् आकारवाला 'सत्यार्थप्रकाश' का संस्करण एक अनुपम कार्य है। इस महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ के प्रामाण्य को सिद्ध करने के लिये इस संस्करण में स्वामी वेदानन्द जी ने सहस्रों सारगर्भित शोधपूर्ण टिप्पणियां दी हैं। यह अत्यन्त कठिन कार्य उन जैसा कर्मठ दयानन्द भक्त विद्वान् ही कर सकता था। सत्यार्थप्रकाश के पाठशोधन के विषय में विद्वानों में मतभेद हो सकता है, पर उससे उनके इस ग्रन्थ के गौरव पर कुछ अन्तर नहीं पड़ता।

3. The Divine Book of work and worship—यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के १६ मन्त्रों की व्याख्या। आर्य साहित्य मण्डल, अजमेर द्वारा १९३७ ई० में प्रकाशित।

4 Scientific Gleanings from Vedic mythology.

5 Eugenics in the Vedas.

6 Anatomy in the Vedas.

7 English Translation (in the full critical and explanatory notes) of the Yajurveda.

स्वामी भूमानन्द ने स्वामी दयानन्द के निम्न ग्रन्थों का अंग्रेजी अनुवाद किया—

१. आर्याभिविनय—स्वामी दयानन्द रचित इस प्रसिद्ध प्रार्थना पुस्तक का अनुवाद श्री ठाकुरदत्त शर्मा धर्मार्थ ट्रस्ट देहरादून द्वारा प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थ में सन्ध्या तथा हवन की विधि भी विस्तारपूर्वक अंग्रेजी अनुवाद सहित परिशिष्ट रूप में दी गई है। श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट ने भी इस पुस्तक का गुटका संस्करण प्रकाशित किया।

२. Cow protection—स्वामी दयानन्द रचित गोकरुणानिधि का यह अनुवाद जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा ने १९३६ ई० में प्रकाशित किया।

(२४) पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए.

आर्यसमाज के साहित्य को अपनी उत्कृष्ट कोटि की दार्शनिक कृतियों के द्वारा समृद्ध करनेवाले तथा हिन्दी अंग्रेजी संस्कृत तथा उर्दू में समान रूप से लेखनी चलाने वाले पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय का जन्म ६ सितम्बर १८८१ को जिला एटा के कासगंज के निकट 'नदरई' नामक ग्राम में हुआ। यह ग्राम काली नदी के किनारे बसा है। आपने १९०८ ई० में बी० ए० तथा १९१३ ई० में अंग्रेजी साहित्य लेकर एम० ए० की परीक्षा उत्तीर्ण की। १९२२ ई० में दर्शनशास्त्र लेकर प्रयाग विश्व-विद्यालय से पुनः एम० ए० किया। आरम्भ में आप सरकारी शिक्षा विभाग में अध्यापक रहे। आप जिस समय टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, इलाहाबाद में अध्यापन-प्रशिक्षण ले रहे थे, उस समय हिन्दी के सुप्रसिद्ध उपन्यासकार और कहानीकार श्री प्रेमचन्द(धनपतराय)आपके सहाध्यायी थे। कुछ समय पश्चात् उपाध्याय जी ने सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया, और आर्यसमाज की प्रसिद्ध शिक्षण संस्था डी० ए० वी० हाई स्कूल प्रयाग के मुख्याध्यापक नियुक्त हो गये। १९१८ से १९३६ तक इस पद पर आप कार्य करते रहे।

उपाध्याय जी सामाजिक साहित्यिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में निरन्तर भाग लेते रहे। १९३१ ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कांगड़ी अधिवेशन में दर्शन परिषद् के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। आर्य-प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के प्रधान १९४१ से १९४४ पर्यन्त रहे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान पद पर १९४३-४७ ई० तक रहे। पुनः १९४६ ई० में उक्त सभा के मन्त्री निर्वाचित हुए, और १९५१ ई० तक इस पद पर रह कर आर्यसमाज का नेतृत्व और मार्गदर्शन किया। १९५० ई० में विदेशप्रचार कार्यक्रम के अन्तर्गत दक्षिण अफ्रीका गये, तथा अगले वर्ष (१९५१ में) बर्मा, थाईलैण्ड तथा सिंगापुर में धर्मप्रचारार्थ गये।

दिसम्बर १९५६ में जब महर्षि दयानन्द की दीक्षा शताब्दी मथुरा में आयोजित की गई, तो उस समय उत्तरप्रदेश आर्यप्रतिनिधि सभा ने आपकी उल्लेखनीय साहित्यिक सेवाओं के कारण डा० राजेन्द्रप्रसाद के करकमलों से 'अभिनन्दन-ग्रन्थ' अर्पित कर सम्मानित किया। उपाध्याय जी

का लेखन कार्य आजीवन ही चलता रहा। ८८ वर्ष की परिपक्व आयु में अगस्त १९६८ ई० में आपका स्वर्गवास हो गया।

उपाध्याय जी की साहित्य साधना का इतिहास अत्यन्त व्यापक और विस्तृत है। उनका प्रथम लेख आज से ७० वर्ष पूर्व १९०२ ई० में आर्यमित्र में प्रकाशित हुआ, विषय था—'थियासाफिकल सोसाइटी'। जालन्धर से प्रकाशित होने वाले उर्दू साप्ताहिक 'आर्य मुसाफिर' में भी आप निरन्तर लिखते थे। वेदमन्त्र व्याख्या, शंकासमाधान, आर्यसमाज पर किये जाने वाले आक्षेपों का उत्तर आदि विषयों पर अत्यन्त तत्परता-पूर्वक आपकी लेखनी चलती रही। इस लेखन में महात्मा मुन्शीराम जी का प्रोत्साहन आपको बराबर मिलता रहा। अंग्रेजी में उपाध्याय जी का प्रथम लेख लाहौर से प्रकाशित होने वाली साप्ताहिक अंग्रेजी पत्रिका Arya Patrika में प्रकाशित हुआ। इसका शीर्षक था Yoga made easy। १९०८ में उपाध्याय जी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती कलादेवी का उपनयन संस्कार कराया। इसके विरोध में कुछ लेख आर्यपत्रिका में प्रकाशित हुये। जिनका अभिप्राय यह था कि स्त्रियों का यज्ञोपवीत नहीं होना चाहिये। इसके उत्तर में उपाध्याय जी ने अंग्रेजी में लेख लिखकर आर्य पत्रिका में प्रकाशित कराया। १९०७ में 'विवाह और रण्डियां' शीर्षक पहला ट्रैक्ट छपाया।

उपाध्याय जी के साहित्य को आर्यसमाज विषयक साहित्य तथा विशुद्ध साहित्य के रूप में विभक्त किया जा सकता है। उपाध्याय जी द्वारा रचित आर्यसामाजिक साहित्य (जिसमें उनके द्वारा रचित वैदिक साहित्य का उल्लेख भी समाविष्ट है) का विवरण इस प्रकार है—

१. **आर्यसमाज**—स्वामी दयानन्द एवं आर्यसमाज के सिद्धान्तों, कार्यों और प्रवृत्तियों का परिचय देने वाला यह ग्रन्थ सर्वप्रथम १९२४ ई० में ऋषि दयानन्द जन्म शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित हुआ। इसका द्वितीय संस्करण सं० १९९३ वि० में शारदा मन्दिर दिल्ली से छपा।

२. **सर्वदर्शन सिद्धान्त संग्रह**—शंकराचार्य द्वारा रचित कही जानेवाली यह पुस्तक अनुवाद सहित १९२५ ई० में प्रकाशित हुई। इसमें चार्वाक, जैन, बौद्ध, न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, वेदान्त, मीमांसा आदि भारतीय दर्शनों का सरल अनुष्टुप् छन्दों में परिचय दिया गया है। प्रारम्भ में यह

पुस्तक प्रयाग से छपने वाले एक मासिक पत्र 'विद्वान्' में धारावाही रूप से प्रकाशित होती रही। पुनः यह पुस्तकाकार प्रकाशित हुई। इसका द्वितीय संस्करण १९३८ ई० में कला प्रेस प्रयाग से प्रकाशित हुआ।

३. **आस्तिकवाद**—उपाध्याय जी की यह मूर्धन्य दार्शनिक कृति है। इसकी रचना १९२६ ई० में हुई। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के १९३१ ई० के कलकत्ता अधिवेशन में इस कृति पर लेखक को १२०० रु० का मंगलाप्रसाद पुरस्कार मिला। इसके कई संस्करण प्रकाशित हुये हैं।

४. **अद्वैतवाद**—इसका प्रकाशन काल १९२७ ई० है। इसका कुछ अंश धारावाही रूप से प्रेमचन्द जी द्वारा सम्पादित माधुरी (लखनऊ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका) में प्रकाशित हुआ। जब पत्रिका के स्वामी को यह विदित हुआ कि इस लेखमाला में अद्वैत मत प्रवर्तक शंकराचार्य के सिद्धान्त का खण्डन किया गया है, तो उन्होंने आगे प्रकाशन बन्द करा दिया।

५. **वैदिक विवाह पद्धति**--उपाध्याय जी ने अपने अनुज पं० सत्यव्रत उपाध्याय के सहलेखन से इसे लिखा, और १९२८ ई० में प्रकाशित किया।

६. **वैदिक उपनयन पद्धति** - यह भी उक्त पं० सत्यव्रत उपाध्याय के सहलेखन में लिखी गई, और १९३० ई० में प्रकाशित हुई।

७. **शंकर-रामानुज-दयानन्द**—तीनों दार्शनिकों का तुलनात्मक अध्ययन १९३० ई० में छपा।

इसी बीच १९३० ई० में उपाध्याय जी ने कला प्रेस स्थापित किया। प्रकाशन कार्य में किञ्चित् सुविधा हुई। उपाध्याय जी के द्वितीय पुत्र श्री विश्वप्रकाश ने प्रेस की व्यवस्था अपने हाथ में ली। इस प्रकार लेखन कार्य में प्रगति आई, जिसका विवरण निम्न प्रकार है—

८. **राजा राममोहन राय—केशवचन्द्रसेन—दयानन्द**—भारतीय पुनर्जागरण के इन तीन अग्रदूत महापुरुषों का तुलनात्मक अध्ययन १९३१ ई० में प्रकाशित हुआ।

९. **धम्मपद**- महात्मा बुद्ध की नैतिक शिक्षाओं का यह ग्रन्थ मूलतः पालि भाषा में लिखा गया है। इसका अनुवाद १९३२ ई० में प्रकाशित हुआ।

१०. **जीवात्मा**—जीवात्मा का दार्शनिक निरूपण करनेवाला यह ग्रन्थ महर्षि दयानन्द निर्वाण अर्द्धशताब्दी के अवसर पर १९३३ ई० में छपा।

११. वैदिक मणिमाला—वेद मन्त्रों की सरल व्याख्या युक्त यह पुस्तक १९३६ ई० में प्रकाशित हुई।

१२. मनुस्मृति—आर्यों के जगत् प्रसिद्ध धर्मशास्त्र के इस ग्रन्थ को उपाध्याय जी ने अत्यन्त सावधानतापूर्वक सम्पादित किया है। ग्रन्थारम्भ में एक विस्तृत भूमिका लिखकर मनुस्मृति के प्रवक्ता भगवान् मनु का ऐतिहासिक विवेचन किया है। मनुस्मृति में प्रक्षिप्त श्लोकों का विवेचन करते हुये क्षेपक अंश रहित पाठ हिन्दी अर्थ सहित दिया गया है। इसका प्रकाशन काल भी १९३६ ई० है।

१३. महिला व्यवहार चन्द्रिका- स्त्रियों का उपयोगी यह ग्रन्थ १९३८ ई० में प्रकाशित हुआ।

१४. ईशोपनिषद्—सरल टीका युक्त यह उपनिषद् १९४० ई० में प्रकाशित हुआ।

१५. भगवत् कथा—उपनिषद् ग्रन्थों में उपलब्ध होनेवाले आख्यानों के आधार पर यह पुस्तक लिखी गई। प्रकाशन काल १९४३ ई०।

१६. शाङ्कर भाष्यालोचन—आद्य शंकराचार्य रचित वेदान्तसूत्रों के अद्वैतवादपरक प्रसिद्ध भाष्य का तर्क युक्ति एवं प्रमाणों से तर्कयुक्त खण्डन। प्रकाशन काल १९४० ई०।

१७. हम क्या खायें, घास या मांस?—मांसाहार की स्वास्थ्य, सदाचार, नैतिकता आदि मानदण्डों के आधार पर युक्तिपूर्ण आलोचना १९४९ ई० में प्रकाशित हुई। सार्वदेशिक साप्ताहिक ने इस पुस्तक को विशेषांक के रूप में पुनः पुस्तकाकार प्रकाशित किया।

१८. आर्य स्मृति—मनुस्मृति की शैली पर लिखा गया धर्म व्यवहार नीति और सदाचार का प्रतिपादक यह ग्रन्थ सरल संस्कृत अनुष्टुप छन्दों में लिखा गया है। प्रकाशन काल १९४९ ई०।

१९. कम्यूनिज्म—साम्यवाद के मार्क्स प्रतिपादित सिद्धान्तों की समालोचना में लिखा गया यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ १९५० ई० में प्रकाशित हुआ। उत्तरप्रदेश सरकार ने इसे ५०० रु० प्रदानकर पुरस्कृत किया। राजधर्म प्रकाशन ने इसका पुन. प्रकाशन किया है।

२०. ऐतरेय ब्राह्मण—ऋग्वेद से सम्बन्धित ऐतरेय ब्राह्मण का यह भाष्यानुवाद एक विस्तृत भूमिका सहित १९५० ई० में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा प्रकाशित हुआ।

२१. **मीमांसा प्रदीप**—षड् दर्शनों में सर्वाधिक दुरूह और क्लिष्ट समझे जाने वाले मीमांसा दर्शन का सूत्रार्थ और सरल शैली में परिचय देने वाला यह ग्रन्थ है।

२२. **सायण और दयानन्द**—दोनों वेदभाष्यकारों पर लिखा गया यह तुलनात्मक ग्रन्थ है। इसमें दयानन्द के वेदभाष्यकार के रूप में सायण से उनकी श्रेष्ठता स्थापित की गई है।

२३. **जीवनचक्र**—यह उपाध्याय जी की आत्मकथा है। इस पर उत्तरप्रदेश सरकार ने लेखक को ५०० रु० पुरस्कार प्रदान किया। प्रकाशन काल १९५४ ई०।

२४. **आर्योदय-काव्यम्**—दो खण्डों में लिखा गया यह संस्कृत-काव्य भारत के पुराने गौरवपूर्ण इतिहास, तथा स्वामी दयानन्द के दिव्य चरित्र को पद्यबद्ध रूप में उपस्थित करता है। इसका रचनाकाल १९५२ ई० है।

१९५१ ई० में जब उपाध्याय जी दक्षिण अफ्रीका की प्रचार यात्रा से लौटे, तो उस देश के निवासियों ने आपको १०१ पौंड भेंटस्वरूप प्रदान किये। इस राशि को दक्षिण अफ्रीका प्रचार ग्रन्थमाला के नाम से कतिपय पुस्तकों को प्रकाशित करने में व्यय किया गया। इस माला के अन्तर्गत निम्न पुस्तकें प्रकाशित हुई—

१. Life after death.

2. Catechism on Hinduism.

३. **सनातन धर्म और आर्यसमाज।**

४. **मुक्ति से पुनरावृत्ति।**

पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय द्वारा रचित शेष हिन्दी ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

१. **वेद और मानव कल्याण**—वैदिक प्रकाशन मंदिर प्रयाग से प्रकाशित।

२. **राष्ट्र निर्माता दयानन्द**—वैदिक प्रकाशन मंदिर प्रयाग से प्रकाशित।

३. **धर्मसुधासार**—धर्म शिक्षा विषयक उपयोगी पुस्तक।

४. **सन्ध्या क्या, क्यों, कैसे ?**—ब्रह्मयज्ञ की व्याख्या में लिखी गई यह पुस्तक १९६४ ई० में प्रकाशित हुई। प्रकाशक—वैदिक प्रकाशन मंदिर, प्रयाग।

५. **इस्लाम के दीपक**—इस्लाम धर्म की तर्कपूर्ण समालोचना अत्यन्त सहानुभूतिपूर्ण तथा वैज्ञानिक ढंग से लिखी गई है। इसका प्रकाशन १९६३ ई० में हुआ।

६. **उपदेश सप्तक**—प्रचारोपयोगी पुस्तक।

७. **कर्मफल सिद्धान्त**—कर्मफल के जटिल प्रश्न को सुलझाने वाला यह उपयोगी ग्रन्थ है।

८. **आर्यसमाज की नीति**—चन्द्रभानु स्मारक ग्रन्थमाला (१८) के अन्तर्गत १९५१ ई० में सार्व० सभा से छपी।

९. **सरल संध्या विधि**—आर्यसमाज मथुरा द्वारा २०१२ वि० में प्रकाशित संध्योपासना की व्याख्या।

१०. **वेदप्रवचन**—वेद मन्त्रों की सरल एवं भावपूर्ण व्याख्या दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार द्वारा प्रकाशित।

११. **सनातन धर्म।**

१२. **भारतीय उत्थान और पतन की कहानी।**

१३. **संस्कार प्रकाश**—षोडश संस्कारों की व्याख्या।

१४. **सत्यार्थ-प्रकाश : एक अध्ययन।**

१५. **धर्म कर्म की कसौटी पर।**

१६. **आर्यसमाज और इस्लाम।**

तैत्तिरीय ब्राह्मण के अतिरिक्त उपाध्याय जी ने **शतपथ ब्राह्मण का हिन्दी अनुवाद** भी किया था। उनके जीवनकाल में तो यह बृहद् किन्तु महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अप्रकाशित ही रहा, किन्तु कालान्तर में श्री रामस्वरूप शर्मा के प्रयत्न से इसका प्रथम खण्ड ८०० पृष्ठों में दिल्ली से प्रकाशित हुआ। शेष दो खण्डों को भी प्रकाशित करने का प्रयत्न हुआ है। उपाध्याय जी के अप्रकाशित ग्रन्थों में **मीमांसा दर्शन पर शाबर भाष्य का हिन्दी अनुवाद** है, जो ५,००० पृष्ठों में समाप्त हुआ है। श्री विश्वप्रकाश के अनुसार उपाध्याय जी ने अपने सुदीर्घ लेखनकाल में कोई दो लाख पृष्ठ लिखे। सत्यार्थप्रकाश के चीनी तथा बर्मी भाषा में अनुवाद तैयार कराने का श्रेय भी उपाध्याय जी को ही है। आपने प्रयाग विश्वविद्यालय के चीनी भाषा के प्राध्यापक डा० चाऊ से सत्यार्थप्रकाश का चीनी अनुवाद कराया, जो प्रकाशित हुआ। वाराणसी के श्री कित्तिमा ने बर्मी भाषा में अनुवाद किया, जो आर्यसमाज रंगून से प्रकाशित हुआ है।

हिन्दी और संस्कृत के साथ-साथ उपाध्याय जी ने अंग्रेजी में भी उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखे हैं। जिस समय वे सरकारी सेवा में नारायणी में अध्यापक के पद पर कार्य करते थे, उस समय उन्होंने निम्न ट्रैक्ट अंग्रेजी में लिखकर लखनऊ से प्रकाशित किये—

1 Rationalism. 2. Deities. 3. Sanatan Dharm (दो भाग)।

कालान्तर में उन्होंने आर्यसमाज चौक, प्रयाग के तत्वावधान में Religious Rennaissance Series शीर्षक एक ग्रन्थमाला प्रकाशित करनी आरम्भ की, जिसके प्रधान सम्पादक वे स्वयं थे। इस ग्रन्थमाला के सम्पादक मण्डल में उपाध्याय जी के अतिरिक्त डा० धीरेन्द्र वर्मा, डा० बाबूराम सक्सेना, डा० सत्यप्रकाश (उपाध्याय जीके बड़े पुत्र) तथा स्व० श्री मदनमोहन सेठ थे। इस पुस्तकमाला के अन्तर्गत उनकी निम्न पुस्तकें छपी—

1. Reason and Religion—तर्क और धर्म का परस्पर सम्बन्ध निरूपणात्मक यह ग्रन्थ १९३९ ई० में प्रकाशित हुआ।

2. Swami Dayanand's contribution to Hindu Solidarity—१९३९ ई० में प्रकाशित।

3. I and my God—जीव और परमात्मा का सम्बन्ध निरूपणात्मक यह ग्रन्थ एक उच्चकोटि की दार्शनिक कृति है। इसका हिन्दी अनुवाद '**मैं और मेरा भगवान्**' शीर्षक से स्वामी वेदानन्द तीर्थ ने किया, जो रामलाल एण्ड सन्स लाहौर से प्रकाशित हुआ। इसी अनूदित पुस्तक का एक अन्य संस्करण पं० ओम्प्रकाश आर्योपदेशक जालन्धर ने प्रकाशित किया। मूल ग्रन्थ का प्रकाशन काल १९३९ ई० है।

4. The origin, mission and scope of Arya Samaj—प्रकाशन काल १९४० ई०।

5. Worship—परमात्मा की निराकारोपासना का प्रतिपादक यह ग्रन्थ मूर्तिपूजा की व्यर्थता सिद्ध करने की दृष्टि से अत्यन्त तर्क पूर्ण शैली में लिखा गया है। प्रकाशन काल १९४० ई०।

6. Christianity in India—भारत में ईसाईयत के प्रचार प्रसार का विवरण। प्रकाशन काल १९४१ ई०

7. Superstition—अंध विश्वासों पर चुभता हुआ व्यंग्य। प्रकाशनकाल १९४५ ई०।

8. Marriage and married life—विवाहित जीवन पर लिखी गई यह उपयोगी पुस्तक १९४२ ई० में प्रकाशित हुई। इसका हिन्दी अनुवाद 'विवाह और विवाहित जीवन' शीर्षक से गोविन्दराम हासानन्द दिल्ली ने प्रकाशित किया।

9. सत्यार्थप्रकाश का अंग्रेजी अनुवाद The Light of Truth शीर्षक से १९४६ ई० में प्रकाशित हुआ। इसका द्वितीय संस्करण भी प्रकाशित हो गया। १९५६ ई० में Vedic Culture शीर्षक उपयोगी ग्रन्थ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुआ। पं० ठाकुरदत्त शर्मा ने ५०० रु० का अमृतधारा पुरस्कार लेखक को इस पुस्तक पर प्रदान किया। आर्यसमाज विश्व प्रचार सिरीज के अन्तर्गत उपाध्याय जी की निम्न अंग्रेजी पुस्तकें प्रकाशित हुईं (प्रकाशन काल १८५३-५४)—

1. The Arya Samaj : a world movement.
2. O Hihdus wake up.
3. Devas in the the vedas
4. the Sage of the modern Tmies-Swami Dayanand.
5. Yajnas or Sacrifices.
6. The world as we view it.
7. The Vedas—Holy scriptures of Aryans.
8. Swami Dayanand on the formetion and function of the state
9. If I become a Christian.

10. १९५८ ई० में उपाध्याय जी का स्वामी दयानन्द के दार्शनिक सिद्धान्तों का प्रतिपादक ग्रन्थ The Philosophy of Dayanand प्रकाशित हुआ। देश विदेश के अनेक दार्शनिक विद्वानों ने इस ग्रन्थ की प्रभूत प्रशंसा की है। इससे पूर्व Land marks of Swami Dayanand Teachings शीर्षक ग्रन्थ १९४७ में प्रकाशित हुआ, जिसमें सत्यार्थप्रकाश से कतिपय महत्त्वपूर्ण उद्धरण संगृहीत किये गये हैं। The Arya Samaj and the International Aryan League. शीर्षक परिचयात्मक पुस्तक

१९४७ ई० में प्रकाशित हुई, जब वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री थे। इसी प्रकार Social Reconstruction by Buddha and Dayanand महात्मा गौतम बुद्ध की २५०० वीं जन्मशताब्दी के उपलक्ष्य में १९५६ ई० में प्रकाशित हुई। इसमें बुद्ध और दयानन्द के समाज सुधार कार्य का तुलनात्मक विचार प्रस्तुत किया गया है। Elementary Teachings of Hinduism सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित हुई।

इनके अतिरिक्त उपाध्याय जी ने लगभग १०० ट्रैक्ट हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में लिखे। उनका प्रकाशन ट्रैक्ट विभाग आर्यसमाज चौक प्रयाग की ओर से हुआ।

(२५) पद-वाक्य प्रमाणज्ञ पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु

वेद व्याकरण तथा अन्यान्य शास्त्रों के महान् विद्वान् पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु का जन्म १४ अक्तूबर १८९२ ई० को जालन्धर जिले के 'मल्लूपोता' नामक ग्राम में हुआ। वे पाठक गोत्र के सारस्वत ब्राह्मण थे। पिता का नाम श्री रामदास तथा माता का नाम श्रीमती परमेश्वरी देवी था। जिज्ञासु जी ने संस्कृत का अध्ययन स्वामी पूर्णानन्द जी से किया, जो स्वयं अष्टाध्यायी के महान् विद्वान् थे। संस्कृत व्याकरण में व्युत्पन्न होने के अनन्तर जिज्ञासु जी ने श्री स्वामी सर्वदानन्द जी के साथ आश्रम (हरदुआगंज) पुल काली नदी अलीगढ़ में आर्ष पाठ विधि से व्याकरणादि का अध्यापन सन् १९२० में आरम्भ किया। फिर यह आश्रम सन् १९२१ के अन्त में गण्डासिंह वाला अमृतसर में विरजानन्द आश्रम के रूप में स्थानान्तरित हो गया। जनवरी सन् १९३२ के आरम्भ में अन्यान्य शास्त्रों का स्वयं तथा आश्रम की बड़ी श्रेणियों के छात्रों को विशेष अध्ययन करने कराने के लिये काशी चले गये। वहां म० म० श्री चिन्नस्वामी जी शास्त्री आदि दिग्गज विद्वानों से मीमांसा आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। तदनन्तर १९३५ में काशी से लौट कर शाहदरा लाहौर में रावी नदी

के तट पर पूर्ववत् छात्रों को अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त, दर्शन, वेद आदि की शिक्षा देने लगे। देश-विभाजन के पश्चात् जिज्ञासु जी ने काशी को अपनी सारस्वत साधना की भूमि बनाया। यहां आकर पाणिनीय महाविद्यालय की स्थापना की, और आर्ष ग्रन्थों का अनुसरण करते हुए संस्कृत तथा शास्त्र-शिक्षण में प्रवृत्त हुये। भारत के राष्ट्रपति ने पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु की संस्कृत सेवाओं के उपलक्ष्य में उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया। २१ दिसम्बर १९६४ को आचार्य जिज्ञासु का काशी में ही देहान्त हो गया।

जिज्ञासु जी ने स्वामी दयानन्द रचित यजुर्वेद भाष्य पर विस्तृत विवरण लिखा है। दस अध्याय पर्यन्त यजुर्वेद भाष्य विवरण का प्रथम संस्करण श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट अमृतसर से २००३ वि० में प्रकाशित हुआ था। द्वितीय संस्करण सं० २०१९ वि में छपा। विवरणकार ने दयानन्द भाष्य पर विस्तृत टिप्पणियां लिखी हैं, तथा भाष्य में प्रयुक्त संस्कृत भाषा के व्याकरण विषयक तथाकथित अपप्रयोगों की साधुता दर्शाने का प्रयत्न किया है। भाष्य-विवरण की विस्तृत भूमिका में वेदज्ञान का स्वरूप, वेद और उसकी शाखायें, देवतावाद, छन्दोमीमांसा, धातुओं का अनेकार्थत्व तथा यौगिकवाद, वेदार्थ की विविध प्रक्रिया आदि महत्त्वपूर्ण विषयों का व्यापक विवेचन किया गया है। ग्रन्थ का द्वितीय भाग, जिसमें यजुर्वेद के एकादश अध्याय से लेकर पञ्चदश अध्याय पर्यन्त भाष्य पर जिज्ञासु जी लिखित विवरण है, सं० २०२८ वि० में उक्त ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित हुआ। षोडश अध्याय से लेकर समाप्ति पर्यन्त शेष विवरण को प्रकाशित करने की योजना भी ट्रस्ट के पास है, जिसे शीघ्र ही क्रियान्वित किया जायगा।

जिज्ञासु जी ने निम्न वैदिक विषयों पर शोधपूर्ण निबन्ध लिखे, जो प्रकाशित हुये—

१. **वेदार्थ प्रक्रिया के मूलभूत सिद्धान्त**—नामक ग्रन्थ में जिज्ञासु जी ने वेद की नैरुक्त प्रक्रिया को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। श्री पं० सातवलेकर जी ने 'वैदिक देवता' विषय को लेकर श्री जिज्ञासु जी का जो लिखित शास्त्रार्थ हुआ, उसमें उनकी वैदिक देवतावाद विषयक धारणाओं की पुष्टि हुई, तथा यह सिद्ध हो गया कि स्वामी दयानन्द ने वेदमन्त्रों के जिन देवताओं का उल्लेख किया है, उसमें कुछ भी अनौचित्य नहीं है।

२. **वेद और निरुक्त**—प्रथम आर्य विद्वत्सम्मेलन में पढ़ा गया, यह

निबन्ध ओरिएण्टल कालेज लाहौर की पत्रिका में प्रकाशित हुआ। पुनः श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट लाहौर से प्रकाशित हुआ। इसका द्वितीय संस्करण उक्त ट्रस्ट से सं० २०२४ में प्रकाशित हुआ।

३. **निरुक्तकार और वेद में इतिहास**—यह निबन्ध भी ओरियण्टल कालेज लाहौर की पत्रिका में प्रकाशित होने के अनन्तर श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट लाहौर से छपा। इसका द्वितीय संस्करण उक्त ट्रस्ट से सं० २०२४ में प्रकाशित हुआ।

४. **देवापि और शन्तनु के वैदिक आख्यान का वास्तविक स्वरूप**—ऋग्वेद मं० १० सूक्त ९८ में देवापि और शन्तनु का वर्णन मिलता है। पाश्चात्य और उनके अनुयायी भारतीय विद्वान् इस सूक्त में कौरव कुल के देवापि शन्तनु का आख्यान सिद्ध करते हैं। जिज्ञासु जी ने पाश्चात्य मत का सप्रमाण खण्डन करते हुए सूक्त के मन्त्रों की आधिभौतिक व्याख्या करके दर्शाया है कि देवापि शन्तनु व्यक्तिविशेष नहीं हैं, आधिदैविक पदार्थ हैं।

पाणिनीय व्याकरण सम्बन्धी ग्रन्थ

१. **अष्टाध्यायी-भाष्य प्रथमावृत्ति**—ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों में अष्टाध्यायी के पठन-पाठन की जो प्रक्रिया लिखी है, उसी के अनुरूप जिज्ञासु जी ने प्रत्येक सूत्र का पदच्छेद विभक्ति समास अर्थ उदाहरण और उसकी सिद्धिपूर्वक यह भाष्य संस्कृत और हिन्दी दोनों भाषाओं में लिखा है। जिज्ञासु जी इस ग्रन्थ के पांच अध्याय ही लिख पाये थे, शेष तीन अध्याय उनकी अन्तेवासिनी श्री प्रज्ञाकुमारी व्याकरणाचार्य ने उसी शैली पर लिख कर पूरे किये।

२. **संस्कृत पठन-पाठन की अनुभूत सरलतम विधि**—श्री जिज्ञासु जी अष्टाध्यायी के माध्यम से बड़ी आयु के विद्यार्थियों को भी बिना रटे बड़ी सुगमता से व्याकरण का ज्ञान करवाने में सिद्धहस्त थे। उन्होंने उसी प्रक्रिया के अनुसार तीन मास में संस्कृत का प्रारम्भिक ज्ञान कराने के लिये यह पुस्तक लिखी है। इस ग्रन्थ के थोड़े से वर्षों में ५ संस्करण (१८०००) छप चुके हैं। इस पुस्तक के आधार पर आन्ध्र उत्तर प्रदेश मध्य प्रदेश के अनेक नगरों में उनके शिष्य-प्रशिष्य बड़ी सफलता से संस्कृत प्रचार का कार्य कर रहे हैं। सरलतम विधि के अन्त में अगले ६ मास के पठन-पाठन का जो ब्योरा दिया गया था, उसी के अनुसार पं० युधिष्ठिर मीमांसक ने इस ग्रन्थ का द्वितीय भाग लिखकर प्रकाशित कर दिया है।

(२६) पं० भगवद्दत्त बी.ए.

आर्यसमाज के क्षेत्र में वैदिक शोध के प्रवर्तक पं० भगवद्दत्त का जन्म २७ अक्टूबर १८९३ ई० को अमृतसर में हुआ। उनके पिता का नाम लाला चन्दन लाल तथा माता का नाम हरिदेवी था। उनकी इण्टर तक की शिक्षा विज्ञान विषय लेकर हुई, तत्पश्चात् १९१३ ई० में संस्कृत लेकर उन्होंने बी० ए० में प्रवेश लिया। १९१५ में वे बी० ए० परीक्षा में उत्तीर्ण हुए। कालान्तर में वेद के अध्ययन अन्वेषण और अनुसन्धान को ही उन्होंने अपने जीवन का एकमात्र लक्ष्य बना लिया। पं० भगवद्दत्त डी० ए० वी० कालेज लाहौर में अध्यापन कार्य करने लगे। तत्पश्चात् कालेज के प्रिंसिपल महात्मा हंसराज के अनुरोध से उन्होंने उक्त कालेज के अनुसन्धान विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य करना स्वीकार कर लिया। निरन्तर १९ वर्ष तक वे इस महत्त्वपूर्ण पद पर कार्य करते रहे। इस बीच उन्होंने कालेज के लालचन्द पुस्तकालय में संस्कृत के लगभग सात हजार ग्रन्थों की पाण्डुलिपियां संगृहीत कीं।

पं० भगवद्दत्त के वैदिक अनुशीलन का विवरण इस प्रकार है—

१. वैदिक वाङ्मय का इतिहास—तीन खण्डों में सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का व्यवस्थित इतिहास लिखने का यह श्लाघनीय एवं सफल प्रयास है। प्रथम खण्ड में वेदों की विविध शाखाओं का खोजपूर्ण विवेचन किया गया है। इसका द्वितीय संस्करण सं० २०१३ ई० में श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट अमृतसर ने प्रकाशित किया। द्वितीय खण्ड में ब्राह्मण एवं आरण्यक ग्रन्थों का इतिहास लिखा गया है, तथा तृतीय खण्ड में वेद के ज्ञात-अज्ञात-अल्पज्ञात सभी भाष्यकारों का ऐतिहासिक इतिवृत्त निबद्ध किया गया है। द्वितीय एवं तृतीय खण्ड डी० ए० वी० कालेज लाहौर शोध ग्रन्थ-माला के अन्तर्गत क्रमशः १९८४ वि० तथा १९८८ वि० में प्रकाशित हुये।

२. ऋग्वेद पर व्याख्यान—डी० ए० वी० कालेज लाहौर शोध ग्रन्थ-माला के अन्तर्गत प्रकाशित।

३. ऋङ्मन्त्र व्याख्या—ऋषि दयानन्द ने वेदभाष्य से भिन्न ग्रन्थों में जो मन्त्रों की व्याख्या लिखी है, उनका इसमें संकलन किया गया है। यह प्रारम्भिक छोटा सा ग्रन्थ छपा है। शेष अंश नहीं छप सके।

४ वेदविद्या निदर्शन—वेद मन्त्रों में निहित प्राकृतिक एवं भौतिक तथ्यों का उद्घाटन करनेवाला यह अपूर्व ग्रन्थ है। इसमें प्राचीन वैदिक वाङ्मय में वर्णित सृष्टि उत्पत्ति विषयक सिद्धान्तों का आधुनिक वैज्ञानिक तथ्यों से समन्वय प्रदर्शित किया गया है। जो मात्र ऊहा या कल्पना पर आश्रित न होकर प्रमाणपुरस्सर है।

५ निरुक्त भाष्य—यास्कीय निरुक्त पर प्रथम बार लिखी गई यह आधिदैविक प्रक्रियापरक व्याख्या है। काशीनाथ विश्वनाथ राजवाड़े तथा डा० सिद्धेश्वर वर्मा ने अपने-अपने ग्रन्थों में यास्कीय निर्वचन शैली की आलोचना करते हुए उसे बहुधा असम्भव (Improbable) तथा बेहूदा (absurd) कहा था, उसकी कटु समीक्षा करते हुये पं० भगवद्दत्त जी ने निरुक्तशास्त्र की महत्ता तथा उसके गौरव की स्थापना की है।

डी० ए० वी० कालेज लाहौर के शोध विभाग के अध्यक्ष के रूप में उन्होंने जिन वैदिक ग्रन्थों का सम्पादन किया, उनमें निम्न उल्लेखनीय हैं—

६. **अथर्ववेदीया पञ्चपटलिका**—अथर्ववेद विषयक ग्रन्थ का सम्पादन।

७. **अथर्ववेदीया माण्डूकी शिक्षा**—शिक्षाविषयक ग्रन्थ का सम्पादन।

अन्य ग्रंथ—

वैदिक कोष की विशद भूमिका—पं० हंसराज सम्पादित ग्रन्थ की भूमिका के रूप में शोधपूर्ण निबन्ध। **अन्य वैदिक निबन्ध—बैजवाप गृह्यसूत्र सङ्कलन, शाकपूणि का निरुक्त एवं निघण्टु।**

८ Extraordinary Scientific knowledge in Vedic Works—अन्तर्राष्ट्रीय प्राच्य-विद्या परिषद के दिल्ली अधिवेशन में पठित वेद-विषयक शोधपूर्ण निबन्ध। आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

९. Western Indologists : A study in motives—पश्चिमी भारततत्त्वज्ञ विद्वानों की पूर्वाग्रहपूर्ण धारणाओं का सप्रमाण खण्डन। आर्यसमाज शताब्दी समिति बम्बई द्वारा पुनः प्रकाशित।

१०. अथर्वण ज्योतिष। ११. धनुर्वेद का इतिहास।

१२. भारतीय राजनीति के मूल तत्त्व—आर्य महासम्मेलन के मेरठ अधिवेशन पर आयोजित राजनीति परिषद् के अध्यक्ष पद पर दिया गया व्याख्यान। इसे श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट ने प्रकाशित किया है।

१३. भाषा का इतिहास (भाषाविज्ञान विषयक पाश्चात्य मतों का खण्डन)। १४. भारतीय संस्कृति का इतिहास। १५. भारतवर्ष का इतिहास।

१६. भारतवर्ष का बृहद् इतिहास (२ भाग)—यह भारतीय वाङ्मय में उपलब्ध सूत्रों के आधार पर अनुसन्धानपूर्ण क्रमिक इतिहास-ग्रन्थ है।

सम्पादित ग्रन्थ

१७. ऋषि दयानन्द का स्वलिखित एवं स्वकथित जीवन चरित—थियोसोफिस्ट में प्रकाशित तथा पूना प्रवचन में कथित आत्म वृत्तान्त का सम्पादन।

१८. ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन—श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट से प्रकाशित।

१९. गुरुदत्त ग्रन्थावली—पं० सन्तराम बी० ए० के सहयोग से अनूदित, तथा राजपाल लाहौर से १९७५ वि० में प्रकाशित।

२०. सत्यार्थप्रकाश—ऋषि दयानन्द के जगत्प्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का सम्पादित संस्करण गोविन्दराम हासानन्द ने १९६३ ई० में प्रकाशित किया।

२१. वाल्मीकीय रामायण—पश्चिमोत्तर (काश्मीरी) शाखा के बाल अयोध्या तथा आरण्य काण्डों का सम्पादन।

२२. उद्गीथाचार्य रचित ऋग्वेद भाष्य—दशम मण्डल के पांचवें सूक्त से लेकर ८३ वें सूक्त तक का सम्पादन। इस ग्रन्थ के सम्पादन वा मुद्रण में कुछ अशुद्धियां रह गयी थीं। अतः पं० भगवद्दत्त जी ने इसे प्रकाशित नहीं किया। उनके अनुसन्धान विभाग से पृथक् हो जाने पर उक्त छपे भाग को पं० विश्वबन्धु जी ने स्वनाम से प्रकाशित कर दिया।

२३. आचार्य बृहस्पति रचित राजनीतिसूत्रों का सम्पादन एवं भूमिका लेखन।

२३. THE STORY OF CREATION—यह पं० भगवद्दत्त जी का अन्तिम महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है, जो उनके निधन से केवल दो मास पूर्व प्रकाशित हुआ था। इस पुस्तक में वैदिक साहित्य में आये सृष्टि सम्बन्धी विविध वचनों के आधार पर सृष्टिरचना के सम्बन्ध में भारतीय आर्ष मत उपस्थापित किया है। स्थान-स्थान पर पाश्चात्य वैज्ञानिकों के सृष्टि-

सामवेदीय मतों की आलोचना भी की है। यह पुस्तक सामवेद-सम्बन्धी अनेक विषयों में और अधिक अन्वेषण के लिए मार्गदर्शक है।

२२ नवम्बर १९६८ ई० को पं० भगवद्दत्त जी का ७५ वर्ष की आयु में निधन हो गया।

:o:

(२७) आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

इस युग के दो लोकविश्रुत वेदभक्त विद्वानों—स्वामी दयानन्द तथा योगी अरविन्द—से समान रूप से प्रेरणा ग्रहण करनेवाले आचार्य देवशर्मा 'अभय' विद्यालंकार का जन्म ७ जुलाई १८९६ ई० को हरदोई (उत्तर प्रदेश) में हुआ। आपकी शिक्षा गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी में हुई। १९१९ ई० में विद्यालंकार की उपाधि ग्रहण कर वे स्नातक बने। गुरुकुल के तत्कालीन आचार्य और मुख्याधिष्ठाता स्वामी श्रद्धानन्द के आग्रह से आपने इसी शिक्षण संस्था में वेदोपाध्याय का पद स्वीकार किया। फिर क्रमशः उपाचार्य और आचार्य के पद को अलंकृत किया। कालान्तर में योगी अरविन्द की साधना-पद्धति ने आपको आकृष्ट किया, और अरविन्द निर्दिष्ट योग-पद्धति से साधना करने के लिये आप अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी चले गये। १३ अप्रैल १९३८ ई० को वैशाखी के दिन गंगापार की पुरानी गुरुकुल भूमि में आपने स्वामी सत्यानन्द जी से संन्यास की दीक्षा ली। ८ जनवरी १९७० ई० को ७५ वर्ष की आयु में आपका देहान्त हुआ।

स्वामी अभयदेव जी की गणना वेद के विशिष्ट विद्वानों में होती है। वेदविषयक इनकी सर्वोत्कृष्ट पुस्तक 'वैदिक-विनय' है, जो तीन भागों में लिखा गया वेदव्याख्या का अद्वितीय ग्रन्थ है। इसमें वर्ष के प्रत्येक दिन के हिसाब से नित्य पठनार्थ ३६५ मन्त्रों की भावपूर्ण व्याख्या की गई है। प्रत्येक मन्त्र का शब्दार्थ, भावार्थ तथा उस पर आधृत भक्ति-भावनापूर्ण विनय लिखी गई है। सौर वर्ष के अनुसार प्रथम वैशाख से नये वर्ष का आरम्भ कर प्रत्येक चार मास की एक ऋतु होने से मुख्यतः तीन ऋतु—ग्रीष्म, वर्षा और हेमन्त, तथा तदनुकूल प्रत्येक ऋतु की ऋतुचर्या तथा ऋत्वनुकूल करने योग्य योगासन आदि को 'वैदिक विनय

ये तीनों भागों के प्रारम्भ में समस्त दिया गया है। दैनन्दिन वेद-स्वाध्याय के लिये इससे अधिक उपयुक्त और कोई ग्रन्थ नहीं है। इस ग्रन्थ की लोकप्रियता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि अबतक इसके सात संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं, तथा गुजराती, मराठी, कन्नड़ एवं अंग्रेजी में इसका अनुवाद हो चुका है। महात्मा गान्धी ने अपने आश्रम वासियों को इस ग्रन्थ का नित्यपाठ करने का आदेश दिया था।

आचार्य अभयदेव जी के वेदविषयक अन्य ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

१. **ब्राह्मण की गौ**—अथर्ववेद के पञ्चम काण्ड के अठारहवें 'ब्रह्म-गवी' सूक्त की यह हृदयग्राही व्याख्या गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित हुई है। विद्वान् ब्राह्मण की वाणी ही उसकी गौ है, जिस पर प्रतिबन्ध लगाकर कोई शासन अपना अनिष्ट स्वयं आमन्त्रित करता है। सूक्त का प्रतिपाद्य विषय स्वामी जी की व्याख्या से नितान्त स्पष्ट हो जाता है।

२. **वैदिक ब्रह्मचर्य गीत**—अथर्ववेद काण्ड ११ के पांचवें 'ब्रह्मचर्य सूक्त' की यह काव्यशैलीपूर्ण मनोहारी व्याख्या है। इसका प्रकाशन भी गुरुकुल कांगड़ी ने किया है।

३. **वैदिक उपदेशमाला**—वेद के कतिपय स्फुट मन्त्रों की व्याख्या सरल शैली में लिखी हो गई है।

अनुवाद ग्रन्थ—योगिराज अरविन्द ने अपनी पद्धति से वेद के कतिपय सूक्तों की जो अंग्रेजी में व्याख्या की थी, उसका हिन्दी अनुवाद 'वेद-रहस्य' शीर्षक से स्वामी अभयदेव ने किया है। तथा अरविन्द कृत स्वामी दयानन्द विषयक दो सुप्रसिद्ध निबन्धों—Dayanand and Veda, Dayanand—The man and his work का हिन्दी अनुवाद भी किया, जो अरविन्द आश्रम पाण्डिचेरी के हिन्दी प्रकाशन विभाग से प्रकाशित हुआ।

❀

(२८) पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार पालिरत्न

गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक पं० चन्द्रमणि जी वेद और निरुक्त के प्रकाण्ड विद्वान थे। आपने वर्षों तक गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापन कार्य किया। जुलाई १९६५ ई० में आपका ७६ वर्ष की आयु में निधन हुआ।

पं० चन्द्रमणि जी ने निरुक्त का 'वेदार्थ-दीपक' नाम से दो खण्डों में सरल हिन्दी भाष्य किया। यह भाष्य १९८३ वि० (१९२६ ई०) में गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित हुआ। निरुक्त को समझने के लिये यह एक सुबोध व्याख्या है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इस व्याख्या में मन्त्रों का अर्थ करते समय स्वामी दयानन्द के वेदभाष्य और उनकी शैली का विशेष ध्यान रखा गया है।

पं० चन्द्रमणि के अन्य ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

१. श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण धारावाही अनुवाद—प्रतिभा प्रकाशन, देहरादून से १९५१ में तीन भागों में प्रकाशित हुआ। यह रामायण का संक्षिप्त संस्करण है।

२. आर्ष मनुस्मृति—प्रक्षिप्त श्लोकों को पृथक् कर मनुस्मृति का सरल भाष्य।

३. कल्याण-पथ—गीता-भाष्य।

४. स्वामी दयानन्द का वैदिक स्वराज्य।

५. स्वामी दयानन्द के सत्य—अहिंसा के प्रयोग।

६. महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत।

७. वेदार्थ करने की विधि।

○

(२९) पं० बुद्धदेव विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड (स्वामी समर्पणानन्द)

वेदार्थ विषयक अद्भुत ऊहा के धनी पं० बुद्धदेव विद्यालंकार ने अपनी प्रज्ञान्वित प्रतिभा के बल पर वेदविषयक जिस गम्भीर साहित्य का प्रणयन किया है, वह मात्रा में चाहे स्वल्प ही है, परन्तु महत्ता तथा गुणवत्ता की दृष्टि से सर्वथा उल्लेखनीय है। विद्यालंकार जी गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के स्नातक सफल व्याख्याता, शास्त्रार्थ समर के दिग्गज महारथी तथा कुशल लेखक थे। उनके कृतित्व का उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

१. अथर्ववेद भाष्य—चार काण्डों का भाष्य।

२. शतपथ ब्राह्मण भाष्य—अध्याय सात पर्यन्त। यह भाष्य २६८ पृष्ठों में समाप्त हुआ है। मङ्गल श्लोक में लेखक ने गुरु वन्दना करते हुये लिखा—

गाम्भीर्यं यदि तच्छ्रुतेरभिनवः पन्था यदि स्वीकृतः।
पूर्वाचार्यविलक्षणो यतिवरस्यानुग्रहः कोऽप्यसौ॥
शालग्राम गुरोः कृपा यदि पुनः पाण्डित्यलेशः क्वचित्।
किं किं नात्र परोपकारजनिता दोषास्तु ये ते मम॥

३. शतपथ में एक पद—(शतपथ भाष्य का परिचय)।

४. वैदिक स्वर्ग। ५. सोम।

६. अथ मरुत्सूक्तम्—ऋग्वेद के मरुत्सूक्तों का विवेचन। गुरुदत्त भवन, लाहौर से प्रकाशित।

७. सप्त सिन्धु सूक्त—ऋग्वेद के दशम मण्डल के अन्तर्गत ७५ वें 'सप्त सिन्धु' सूक्त की सेनापरक व्याख्यान। वर्णाश्रम संघ देहली से प्रकाशित।

८. ऋग्वेद का मणिसूत्र—(अप्रकाशित)

१०. वैदिक अग्नि प्रकाश।

११. वेदों के सम्बन्ध में क्या जानो और क्या भूलो। वर्णाश्रम संघ द्वारा प्रकाशित।

विद्यानन्द जी के अन्य प्रकाशित ग्रन्थ भगवद्गीताभाष्य, मनु और मांसाहार, त्रैतवाद, तीन देवता, नेहरू नीति, 'ही और भी', सोम और सुरा, कायाकल्प, वैदिक दाम्पत्य सूक्त (अथर्ववेद अन्तर्गत १४ वां काण्ड) सुर और असुर, किसकी सेना में भर्ती होंगे?

२६ जनवरी १९६४ को दिल्ली में स्वामी जी का निधन हुआ।

(३०) पं० रामावतार शर्मा तीर्थ-चतुष्टय

(सामवेद-भाष्यकार)

स्व० पं० रामावतार शर्मा बिहार प्रान्त के सारन जिले के 'गोवर्गी' ग्राम के रहनेवाले थे। आपने कई स्थानों पर रहकर विविध शास्त्रों का अध्ययन किया, और साहित्य व्याकरण दर्शन विषयों की कलकत्ता से चार तीर्थ परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं। आप लगभग १८ वर्ष छपरा (सारन) जिला अन्तर्गत हरपुरजान के विद्याप्रेमी ऋषिभक्त कृष्णबहादुरसिंह द्वारा सञ्चालित गुरुकुल के आचार्य पद पर प्रतिष्ठित रहे। सन् १९३३ से मीमांसाशास्त्र के अध्ययन-प्रसंग में स्व० पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु से काशी में भेंट हुई। समान विचारधारा वाले दो विद्वानों का पारस्परिक परिचय अल्पकाल में ही प्रगाढ़ सख्य में परिणत हो गया, जो जन्म पर्यन्त बना रहा। सन् १९४४ के आरम्भ में आर्यप्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर ऋषि दयानन्द की शैली पर साम और अथर्ववेद का भाष्य लिखवाने के लिये प्रयत्नशील थी। उसके मन्त्री श्री खुशहालचन्द जी (वर्तमान—श्री आनन्द स्वामी जी) ने पहले पं० जिज्ञासु जी को यह कार्य करने को कहा, परन्तु उन्होंने ऋषिकृत यजुर्वेद भाष्य के सम्पादन और विवरण के लेखन में लगे होने के कारण मना कर दिया। इस पर उनके ऊपर ही यह भार छोड़ा गया कि वे किन्हीं १-२ विद्वानों से अपनी देखरेख में यह कार्य करवावें। श्री जिज्ञासु जी ने इस कार्य के लिये श्री शर्मा जी को लाहौर बुलाया और उन्हें सामवेद-भाष्य के कार्य पर लगाया। उनके सह-योग के लिये श्री पं० वैद्यनाथ शास्त्री को भी नियुक्त किया। दोनों विद्वानों ने मिलकर देशविभाजन से पूर्व सामवेदभाष्य का कार्य पूर्ण कर लिया

था, पर वह न [illegible] छप न सका। [illegible] के पश्चात् सार्वदेशिक सभा द्वारा पं० वैद्यनाथ जी के नाम से प्रकाशित हुआ।

सामवेद-भाष्य के अतिरिक्त पं० [illegible] जी ने स्वस्तिवाचन शान्तिकरण सहित सम्पूर्ण हवन के मन्त्रों का सरल पदार्थ युक्त व्याख्या किया। जो रामलाल कपूर ट्रस्ट द्वारा दो बार 'बृहद् हवन मन्त्र' के नाम से छप चुकी है। आपने इस प्रकार की सन्ध्या के मन्त्रों की भी व्याख्या लिखी थी, जो छप न सकी। देशविभाजन के पश्चात् आप प्रायः अपने ही ग्राम में ही रहे। लगभग तीन वर्ष पूर्व आपका निधन हुआ।

:o:

(३१) पद्मभूषण पं० विश्वबन्धु शास्त्री

आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध संन्यासी द्वय ब्रह्मचारी नित्यानन्द जी तथा स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी ने वैदिक कोश के निर्माण का कार्य प्रारम्भ किया था। १९०३ ई० में इन स्वामियों ने काश्मीर के गुलमर्ग नामक में बैठकर वैदिक कोश विषयक अपनी योजना को अन्तिम स्वरूप प्रदान किया। इस योजना की क्रियान्विति के लिये बड़ौदा के संस्कृत प्रेमी नरेश सर सयाजीराव गायकवाड़ ने एक लाख पच्चहत्तर रु० का अनुदान दिया। सन् १९०८ से १९१० तक शिमला स्थित शान्तिकुटी में बैठकर दोनों संन्यासियों ने चारों वेदों का वर्णानुक्रम से शब्दानुक्रमणिका तैयार की और उसे चार भागों में प्रकाशित किया। १९१४ ई० में स्वामी नित्यानन्द जी का स्वर्गवास हो गया, किन्तु स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी ने वैदिक कोश के कार्य को जारी रखा। १९२३ ई० में वैदिक कोश निर्माण तथा वैदिक अनुसन्धान विषयक अपनी आकाङ्क्षा को स्वामी जी ने लाहौर के रायबहादुर मूलराज, महात्मा हंसराज आदि प्रमुख आर्य नेताओं के सम्मुख रखा तथा उनकी सम्मति से कोश-निर्माण का यह कार्य दयानन्द ब्रह्म महाविद्यालय के तत्कालीन आचार्य पं० विश्वबन्धु शास्त्री को सौंप दिया गया।

१ जनवरी १९२४ ई० में विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध संस्थान

की विधिवत् स्थापना हुई और आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री उसके अवैतनिक निदेशक नियुक्त किये गये। १९३४ ई० तक शास्त्री जी ब्राह्म महाविद्यालय तथा शोध संस्थान दोनों के अध्यक्ष पद पर कार्य करते रहे, परन्तु १ जून १९३४ ई० से उन्होंने महाविद्यालय की सेवा से मुक्त होकर शोध संस्थान तथा डी० ए० वी० कालेज, लाहौर के शोध-विभाग तथा लालचन्द पुस्तकालय का कार्य संभाला।

इस संस्थान के अन्तर्गत आचार्य विश्वबन्धु के निर्देशन में प्रति तीसरे वर्ष वैदिक कोश का एक नया भाग प्रकाशित होता रहा। १९४०-४१ में इस संस्था को भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई। तब से इसे केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों, भूतपूर्व देशी रियासतों तथा विश्वविद्यालयों से आर्थिक सहायता मिलने लगी। देशविभाजन के पश्चात् संस्थान का मुख्य कार्यालय 'साधु आश्रम, होशियारपुर' में आ गया।

संस्थान के मुख्य उद्देश्यों में वैदिक साहित्य के अन्वेषण, सम्पादन प्रकाशन आदि को समाविष्ट किया गया है। एक प्रमुख योजना यह है, जिसके अन्तर्गत वैदिक साहित्य के भाषा वैज्ञानिक अध्ययन सम्बन्धी १०१ भाग प्रकाशित होंगे। इसके अन्तर्गत १५ भागों में समस्त वैदिक वाङ्मय का पदानुक्रम कोष (A Vedic Concordance) छप चुका है। इसके अतिरिक्त ऋग्वेद, अथर्ववेद, तैत्तिरीय संहिता तथा उपनिषद् विषयक वैयाकरण पद-सूचियां (Grammatical word Index) भी प्रकाशित हो चुकी हैं। संस्थान के आदरी अध्यक्ष डा० विश्वबन्धु जी को भारत के राष्ट्रपति ने संस्कृत के महान् विद्वान् के रूप में सम्मानित किया है। शास्त्री जी ने अनेक दुर्लभ वैदिक ग्रन्थों का सम्पादन वा प्रकाशन कार्य भी किया, जो डी० ए० वी० कालेज लाहौर के शोध विभाग के द्वारा १९९२ वि० (१९३५ ई०) में प्रकाशित हुआ। आप का यद्यपि आर्यसमाज के कई सिद्धान्तों से मौलिक भेद था। फिर भी आपने जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया उस में प्रवृत्ति और सहयोग का श्रेय आर्यसमाज को ही है। आप चिरकाल तक आर्यप्रादेशिक सभा लाहौर द्वारा संचालित ब्राह्म महाविद्यालय के आचार्य एवं लालचन्द पुस्तकालय के पुस्तकाध्यक्ष रहे। आपका गत जुलाई ७२ में निधन हो गया।

:o:

द्वादश राशियां, राहु-केतु, धूमकेतु, उल्का आदि ज्योतिष पिण्ड। इसमें बाल-गङ्गाधर तिलक द्वारा ज्योतिष के आधार पर प्रतिपादित ऋग्वेद के उत्पत्ति-काल की आलोचना भी की है। बड़ोदा के प्राच्य-विद्या संस्थान के निदेशक डा० विनयतोष भट्टाचार्य ने इस ग्रन्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

६. बृहद् विमानशास्त्र—महर्षि भारद्वाज विरचित विमानविज्ञान के महाग्रन्थ का बोधायनवृत्ति सहित जितना अंश उपलब्ध हुआ, उसको भाषानुवाद सहित प्रथमतः प्रकाश में लाने का श्रेय स्वामी ब्रह्ममुनि जी को ही है। ग्रन्थ के आरम्भ में भूमिका में प्राचीन यन्त्रविद्या-विषयक ग्रन्थों पर विशद प्रकाश डाला है।

वे ग्रन्थ जिनका नामोल्लेख मात्र किया जा रहा है—

ईशोपनिषद् का स्वरूप, माण्डूक्योपनिषत् का स्वरूप, यमयमी संवाद, उपनिषदों का वेदान्त, मानवीय शक्तियों का परिचय और उनका विकास, वेद में असित शब्द पर एक दृष्टि, वेद में इतिहास नहीं, जीवन-पथ, योग-मार्ग, क्रियात्मक मनोविज्ञान, मित्र और वरुण की शिक्षा (ऋ० ७। सूक्त ६१।६२), सोम सरोवर का स्नान, वैदिक सूर्यविज्ञान, वैदिक मनोविज्ञान, ब्रह्मवेद का रहस्य, अथर्ववेदीय मन्त्रविद्या, विश्वविज्ञान और परमात्म-बोध, ऋग्वेद में देवकामा या देवृकामा, वेद में दो बड़ी वैज्ञानिक शक्तियां, वैदिक अध्यात्म-सुधा, रामायण-दर्पण, महाभारत शिक्षा सुधा, आर्षयोग-प्रदीपिका, उपनिषद् सुधासार, वैदिक राष्ट्रियता, वैदिक ईशवन्दना, वैदिक योगामृत, दयानन्द दिग्दर्शन, वैदिक वन्दन, बृहदारण्यकोपनिषत् कथामाला, छान्दोग्योपनिषत् कथामाला, दार्शनिक अध्ययन तत्त्व, वेदाध्ययन-प्रवेशिका, वैदिक ब्रह्मचर्य विज्ञान, याज्ञवल्क्य शिक्षा व्याख्या, अव्ययार्थनिबन्धन, वेद के एक संदिग्ध प्रकरण का विवेचन, ब्रह्मपारायण यज्ञ की शास्त्रीयता एवं वैदिकता का विवेचन, साम-सुधा, अथर्ववेदीय अन्त्येष्टि संस्कार और मांस शब्द।

दर्शनों की व्याख्याएं—

वेदान्तदर्शन भाष्य, सांख्यदर्शन-भाष्य, वैशेषिक दर्शन-भाष्य— ये तीनों संस्कृत तथा हिन्दी भाषा में प्रकाशित हुए हैं। न्यायदर्शन के वात्स्यायन भाष्य के कुछ अंश का भाषानुवाद।

सामान्य पुस्तकें—निजाम की साम्प्रदायिक नीति और हमारा

कर्त्तव्य, बाल जीवन सोपान, निज जीवन-वृत्त-वर्णिका (स्व आत्मकथा) गुणधर्म, भ्रम-निवारण आदि।

अप्रकाशित ग्रन्थ—

पुरातन नाडी विज्ञान—बड़ौदा में पर्याप्त अनुसन्धान के पश्चात् यह ग्रन्थ लिखा गया। पुस्तक पं० ठाकुरदत्त (अमृतधारा) को प्रकाशनार्थ लाहौर भेजी गई, वहां ग्रन्थ का हस्तलेख नष्ट हो गया।

वैदिक अगस्त्य ऋषि—यह ग्रन्थ श्री स्वामी वेदानन्द जी को प्रकाशनार्थ दिया था, उनके निधन के पश्चात् उनके उत्तराधिकारियों के प्रमाद-वश हस्तलेख नष्ट हो गया।

(३३) पं० हंसराज

पं० हंसराज जी एक ऐसे वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध पुरुष हैं, जिनका उल्लेख किये बिना यह ग्रन्थ अधूरा ही समझा जायगा। पं० हंसराज जी का जन्म सन् १८८८ में गुरुदासपुर जिला अन्तर्गत मोहल्लावाली ग्राम में हुआ। प्रारम्भ में उर्दू फारसी अंग्रेजी पढ़ी। किसी कारण वश मैट्रिक की परीक्षा न दे सके। कई वर्षों तक विविध स्थानों में नौकरी करते रहे। इस बीच संस्कृत का भी अध्ययन किया। अन्त में सन् १९१८ में श्री पं० भगवद्दत्त जी की प्रेरणा से पं० नै० बैंक की नौकरी छोड़कर उनके पास डी० ए० वी० कालेज लाहौर के लालचन्द पुस्तकालय में आ गये। वहां देशविभाजन काल तक पुस्तकालयाध्यक्ष का कार्य करते रहे। सन् १९१८ में आपने वैदिक स्वाध्याय के जिस जरामर्य सत्र की दीक्षा ली, वह आज ८५ वर्ष की जरा अवस्था में भी अबाध गति से चल रहा है। श्री पं० भगवद्दत्त जी श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु सदृश विद्वान् आपकी विद्वत्ता की बड़ी प्रतिष्ठा करते थे। आपने इस दीर्घकालीन स्वाध्याय काल में जो विभिन्न-विषयक प्रमाण-संग्रह किये हैं, उन पर दो-तीन व्यक्ति सारी आयु अनुसन्धान कार्य कर सकते हैं। सरस्वती का ऐसा वरद पुत्र यदि लेखन कला में भी निपुण होता, तो ये आज वैदिक विद्वानों में मूर्धाभिषिक्त

गिने जाते। फिर भी आपने जो थोड़ा बहुत कार्य किया है, वह भी इतना महत्त्वपूर्ण है कि उन ग्रन्थों की सहायता के बिना कोई वैदिक अनुसन्धान कार्य सफल नहीं हो सकता। आपके निम्न ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं—

१ **वैदिक कोष**—सन् १९२५ तक जितने ब्राह्मण ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके थे, उनमें वैदिक शब्दों के अर्थबोधक वचनों का संग्रह किया गया है। यह ग्रन्थ १९२६ में छपा था।

२ **ब्राह्मणोद्धार कोष**—पूर्व उल्लिखित वैदिक कोष के अप्राप्य हो जाने पर पं० विश्वबन्धु जी ने पं० हंसराज जी से उसका परिवर्धित संस्करण तैयार करवाया। इसमें नवीन प्रकाशित जैमिनीय ब्राह्मण के साथ ही आरण्यक तथा शाखा रूप संहिताओं में जो ब्राह्मण पाठ है उनसे भी अर्थ निदर्शक वचनों का संग्रह कर दिया गया है।

३. **उपनिषदुद्धार कोष**—इसमें प्रायः प्रकाशित सभी उपनिषदों से वैदिक कोष के समान वैदिक शब्दार्थ बोधक वाक्यों का संग्रह किया गया है।

४. SCIENCE IN THE VEDAS—इस ग्रन्थ में पण्डितजी ने ब्राह्मण ग्रन्थों में आये कतिपय वैज्ञानिक तथ्यों की ओर विद्वानों का ध्यान आकृष्ट किया है। प्रमाणों का पुष्कल संग्रह देखने योग्य है।

४. दश अवतार।   ५. वेद में मानुष इतिहास नहीं।

५. देवतावाद का भौतिक वैज्ञानिक रहस्य आदि कतिपय लघु-पुस्तिकाएं प्रकाशित हुई हैं।

आजकल आप रामलाल कपूर ट्रस्ट बहालगढ़ में ही निवास कर रहे हैं।

(३४) पं० विश्वनाथ विद्यालंकार

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के भूतपूर्व वेदोपाध्याय और उत्कृष्ट वैदिक विद्वान् पं० विश्वनाथ विद्यालंकार ने वेदविषयक निम्न ग्रन्थ लिखे हैं—

१. वैदिक पशु-यज्ञ मीमांसा—इस ग्रन्थ में विशद प्रमाणों से यह सिद्ध किया गया है कि वैदिक यज्ञ हिंसारहित होते थे। वैदिक कर्मकाण्ड पर पशु-वध का लाञ्छन नितान्त अप्रामाणिक तथा अनौचित्यपूर्ण है।

२. वैदिक जीवन—अथर्ववेदीय मन्त्रों पर आधारित। उक्त दोनों ग्रन्थ महेश पुस्तकालय, अजमेर से प्रकाशित हुये।

३. वैदिक गृहस्थाश्रम। ४. सन्ध्या रहस्य।

५. सामवेद-भाष्य—यह वेदोपाध्याय जी की वेदविषयक बड़ी कृति है। अद्यावधि यह अप्रकाशित है।

:o:

(३५) पं० धर्मदेव सिद्धान्तालंकार

विद्यावाचस्पति, विद्यामार्तण्ड—

सामवेद संहिता का अंग्रेजी में भाष्य लिखने वाले पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड का जन्म १ नवम्बर १८९९ ई० को ग्राम 'दुनियापुर' जिला मुलतान पाकिस्तान में हुआ। सन् १९०९ से १९१६ तक प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल मुलतान में हुई, तत्पश्चात् १९१७ से १९२१ तक इन्होंने गुरुकुल महाविद्यालय कांगड़ी में आचार्य स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरणों में बैठ कर विद्याध्ययन किया। २३ मार्च १९२१ ई० को सिद्धान्तालंकार की उपाधि ग्रहण कर गुरुकुल के प्रतिष्ठित स्नातक बन गये। इस अवसर पर इन्हें दो स्वर्णपदक भी प्राप्त हुये। कालान्तर में 'भारतीय समाजशास्त्र' विषय पर शोध प्रबन्ध लिख कर पं० धर्मदेव जी ने विद्यावाचस्पति की

उपाधि प्राप्त की। १९५४ ई० में आपके विशिष्ट वैदिक अध्ययन और वदुष्य के कारण गुरुकुल कांगड़ी ने इन्हें 'विद्यामार्तण्ड' की सम्मानित उपाधि से विभूषित किया।

प्रारम्भ में पं० धर्मदेव जी गुरुकुल मुलतान के आचार्य पद पर रहे। तत्पश्चात् स्वामी श्रद्धानन्द जी का आदेश प्राप्त कर दक्षिण भारत में आर्यसमाज के प्रचारक के रूप में सन् १९२१ से १९४१ तक रहे। इस बीच आपने कन्नड़, तेलगु, तामिल, मलयालम आदि दक्षिण भारतीय भाषाओं का अध्ययन किया, और इन भाषाओं में आर्यसमाज विषयक अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखे। सन् १९४२ से १९५३ तक पं० धर्मदेव जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के सहायक मन्त्री तथा इस सभा के मासिक मुखपत्र सार्वदेशिक के सम्पादक भी रहे। सन् १९५४ से १९६३ तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में वेदाध्यापन का कार्य करते हुये हिन्दी संस्कृत और अंग्रेजी में कोष प्रणयन का कार्य भी करते रहे।

पं० धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड के द्वारा रचित वेदविषयक निम्न ग्रन्थ उल्लेखनीय हैं—

१. **सामवेद की अंग्रेजी व्याख्या**—विशद विद्वत्तापूर्ण भूमिका के साथ सामवेद की यह अंग्रेजी व्याख्या १९६७ ई० में प्रकाशित हुई।

2. Some Psalms of the Samveda Samhita. सामवेद के कतिपय सूक्तों का यह अंग्रेजी अनुवाद १९६६ ई० में प्रकाशित हुआ

३. **वैदिक कर्त्तव्य-शास्त्र**—वेदमन्त्रों के आधार पर आचार-शास्त्र निरूपक यह विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ स्वाध्याय मण्डल औंध से प्रकाशित हुआ।

४. **वेदों का महत्त्व**—श्रद्धा पुस्तक माला—२४।

५. **स्त्रियों और शूद्रों का वैदिक कर्मकाण्ड और वेदाध्ययन में अधिकार**—विभिन्न स्मृतियों एवं सूत्र ग्रन्थों के आधार पर वेदाध्ययन और वैदिक कर्मकाण्ड में नारी जाति और शूद्र वर्ग के लोगों का अधिकार-निरूपणात्मक यह ग्रन्थ है।

६. **वेदों का यथार्थ स्वरूप**—भारतीय विद्या भवन, बम्बई द्वारा प्रकाशित The Vedic Age नामक ग्रन्थ की आलोचना में लिखा गया यह विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ गुरुकुल कांगड़ी से २०१४ वि० में प्रकाशित हुआ। इसमें लेखक ने पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों के वेदविषयक उन भ्रान्त

विचारों का सम्पूर्ण खण्डन किया है, जो वेदाविर्भावकाल, वेदविषय, वैदिक शब्दवाद, वैदिक भाषा, देवों में एकत्व आदि पर लेखक समय समय पर प्रस्तुत किये गये हैं। इसका नवीन संस्करण जन-ज्ञान प्रकाशन दिल्ली ने प्रकाशित किया है।

७. **साम संगीत सुधा।**

सम्प्रति पं० धर्मदेव जी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन पर ऋग्वेद का अंग्रेजी अनुवाद (ऋषि दयानन्द कृत भाष्य के आधार पर) तैयार कर रहे हैं।

आपके द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ इस प्रकार हैं—

१. महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी : तुलनात्मक अध्ययन।

२. ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों का तुलनात्मक अध्ययन।

३. उदारतम आचार्य महर्षि दयानन्द।

४. हमारी राष्ट्रभाषा और लिपि।

५. बौद्ध मत और वैदिक धर्म।

६. गो-रक्षा परम कर्त्तव्य, और गो-हत्या महापाप।

७. **वेदों का महत्त्व**—आर्य कुमार सभा किंग्जवे दिल्ली द्वारा प्रकाशित। यह पुस्तक The sublimity of the Vedas का हिन्दी अनुवाद है।

आपने अंग्रेजी में भी कतिपय उल्लेखनीय ग्रन्थों की रचना की है, जो इस प्रकार है—

1. Maharshi Dayanand and Satyartha Prakash.
2. The Mission and Message of M. Dayanand.
3. Mahatma Buddha An Arya Reformer.
4. Christianity and Vedas.
5. Acatechism of Vedic Dharma.

संस्कृत काव्य—

महापुरुषकीर्तनम्, महिलामणिकीर्तनम्—ये दोनों ग्रन्थ पं० धर्मदेव जी में निहित उत्कृष्ट संस्कृत-साहित्य रचना के निदर्शक हैं।

(३६) डा. मङ्गलदेव शास्त्री

गवर्नमेंट संस्कृत कालेज बनारस के भूतपूर्व प्रिंसिपल तथा वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालय के भूतपूर्व उपकुलपति डा० मङ्गलदेव शास्त्री वेदों के सुप्रसिद्ध विद्वान् हैं। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा गुरुकुल बदायूं में हुई।

शास्त्री जी ने **ऋग्वेद प्रातिशाख्य** का तीन भागों में सम्पादन किया। प्रथम भाग में आलोचनात्मक भूमिका के साथ मूल पाठ दिया गया है। द्वितीय भाग में उवट का भाष्य (१००० ई० के लगभग लिखा गया) दिया गया है। तृतीय भाग में ऋग्वेद प्रातिशाख्य का अंग्रेजी अनुवाद आलोचनात्मक टिप्पणियों तथा अनेक उपयोगी परिशिष्टों सहित दिया गया है। इसकी भूमिका प्रो० ए० बी० कीथ ने लिखी है। शास्त्रीजी ने सामवेद से सम्बद्ध उपनिदान सूत्र का आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित किया, तथा **आश्वलायन श्रौत सूत्र** का सम्पादन कर उसे सिद्धान्तिभाष्य नाम्नी टीका सहित प्रकाशित कराया। इसके अतिरिक्त उनके द्वारा लिखित **ऐतरेय ब्राह्मण पर्यालोचन, ऐतरेयारण्यक पर्यालोचन, कौषीतकि ब्राह्मण पर्यालोचन,** तथा **शतपथ ब्राह्मण पर्यालोचन** आदि शोधपूर्ण आलोचनात्मक निबन्ध भी वैदिक साहित्य के विभिन्न महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों के विवेचन में लिखे गए।

शास्त्री जी ने **भारतीय संस्कृति : 'वैदिक धारा'** शीर्षक एक अन्य ग्रन्थ लिखा, जो काशी विद्यापीठ वाराणसी द्वारा प्रकाशित हुआ है। इसका द्वितीय खण्ड **'उपनिषद् धारा'** भी प्रकाशित हो गया है।

शास्त्री जी ने वैदिक साहित्य से सम्बद्ध महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का लेखन एवं सम्पादन तो किया ही है, आपने संस्कृत में कतिपय मौलिक ग्रन्थों की रचना भी की है। **रश्मि माला** (जीवन संदेश गीताञ्जलि) तथा **अमृतमन्थन** ऐसी ही रचनायें हैं, जिनमें मानव जीवन का दिव्य पक्ष संस्कृत पद्यों के माध्यम से उभारा गया है। भारतीय **आर्यधर्म की प्रगतिशीलता, वेदों का वास्तविक स्वरूप** आपके उत्कृष्ट निबन्ध हैं। **प्रबन्ध-प्रकाश** (संस्कृतनिबन्ध संग्रह), तथा **भाषाविज्ञान** (तुलनात्मक भाषाशास्त्र) आपके उच्चस्तरीय पाठ्य ग्रन्थ हैं।

:o:

(३७) पं० रामगोपाल शास्त्री वैद्य

पं० रामगोपाल जी शास्त्री प्रारम्भ में डी० ए० वी० कालेज लाहौर के शोध विभाग में कार्य करते थे। पश्चात् वे चिकित्सा के क्षेत्र में अवतीर्ण हो गये। डी० ए० वी० कालेज ग्रन्थमाला के अन्तर्गत उन्होंने निम्न ग्रन्थों का सम्पादन कर उन्हें प्रकाशित किया—

१. अथर्ववेदीया बृहत्सर्वानुक्रमणिका।

२. दन्त्योष्ठ्य विधिः—यह अथर्ववेद से सम्बद्ध उच्चारणविषयक ग्रन्थ है। इसका मूल व हिन्दी अनुवाद शास्त्री जी ने सम्पादित किया।

३. कौत्सव्यनिघण्टु (यास्क से प्राचीन निघण्टु) इसका सम्पादन वैद्य जी ने किया था। इसका प्रकाशन पं० राजाराम शास्त्री ने किया।

इसके अतिरिक्त शास्त्री जी ने कतिपय अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों का भी प्रणयन किया है। जिनका उल्लेख इस प्रकार है—

१. महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय विचारधारा—भारतीय [illegible] समिति दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

२. ईश-केनोपनिषद् का अनुवाद।

३. वेदों में आयुर्वेद—इस ग्रन्थ का हस्तलेख लाहौर में नष्ट हो गया था। देशविभाजन के पश्चात् देहली में आकर पुनः इस ग्रन्थ को लिखा।

४. वेदान्त—प्राचीन और नवीन—आर्यसमाज करौलबाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित।

५. संस्कारविधि-मण्डनम्—ऋषि दयानन्द कृत संस्कारविधि ग्रन्थ पर किये जाने वाले निर्मूल आक्षेपों का खण्डन।

६. क्या वेद में आर्यों और आदिवासियों के युद्धों का वर्णन है? एतद् विषयक विवाद का पुनरुत्थान हुये यह सिद्ध किया गया है कि वेद के प्रासंगिक मन्त्र किसी वास्तविक युद्ध का वर्णन नहीं करते। हंसराज कालेज नई दिल्ली से २०२६ वि० में प्रकाशित। रामलाल कपूर ट्रस्ट ने इस पुस्तक का संक्षेप 'वेद में आर्य दास सम्बन्धी पाश्चात्य मत का खण्डन' शीर्षक से प्रकाशित किया।

७. वेद में आख्यानों का यथार्थ स्वरूप—इस विषय के कई लेख वेदवाणी पत्रिका में प्रकाशित हो चुके हैं, और हो रहे हैं। कुछ लेखों का स्वतन्त्र संग्रह भी छपा है।

८. पंजाबी भाषा का मूल स्रोत संस्कृत—ला० लाभूराम के सहयोग में प्रकाशित।

९. हिंसा और अहिंसा का वैदिक स्वरूप—आर्य स्वराज्य सभा द्वारा प्रकाशित।
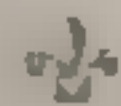
(३८) पं० प्रियव्रत वेदवाचस्पति

वेद तथा संस्कृत अध्ययन के प्रमुख केन्द्र गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के भूतपूर्व आचार्य तथा कुलाधिष्ठाता पं० प्रियव्रत वेदवाचस्पति वेदों के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् तथा लेखक हैं। वेद के विभिन्न सूक्तों की व्याख्या परक उनके प्रमुख ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है—

१. वेद का राष्ट्रिय गीत—अथर्ववेद के सुप्रसिद्ध पृथिवी सूक्त की व्याख्या अत्यन्त परिश्रम पूर्वक लिखी गई है। प्रारम्भ में एक विस्तृत भूमिका में लेखक ने वेदविषयक विभिन्न समस्याओं पर विचार किया है। तत्पश्चात् पृथिवी सूक्त के मन्त्रों की भावपूर्ण एवं विशद व्याख्या प्रस्तुत की है। पुस्तक गुरुकुल कांगड़ी से २०१२ वि० में प्रकाशित हुई।

२. वेदोद्यान के चुने हुये फूल—विभिन्न विषयों से सम्बद्ध वैदिक सूक्तों की व्याख्या।

३. वरुण की नौका—(दो भाग) वेद के वरुण सूक्तों की भक्तिभावपूर्ण व्याख्या।

४. राष्ट्र निर्माण विषयक कतिपय वेदमन्त्रों की भावपूर्ण व्याख्या—आर्य प्रेमी के विशेषांक के रूप में प्रकाशित (जनवरी १९६५ ई०)।

५. वैदिक अर्थ व्यवस्था—यह निबन्ध राजधर्म के विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसमें वैदिक अर्थनीति का गम्भीर विवेचन किया गया है।

६. मेरा धर्म—वैदिक धर्म एवं आर्य संस्कृति के विविध पहलुओं पर लिखित महत्त्वपूर्ण निबन्धों का संग्रह गुरुकुल कांगड़ी से प्रकाशित।

:o:

(३६) आचार्य विश्वश्रवाः व्यास एम. ए.

बरेली निवासी आचार्य विश्वश्रवाः व्यास का सम्पूर्ण जीवन ही वेदाध्ययन वेदालोचन और वेदप्रचार में व्यतीत हुआ। उन्होंने डी० ए० वी० कालेज लाहौर के शोधविभाग में श्री पं० भगवद्दत्त जी के सान्निध्य में रहकर वैदिक वाङ्मय के अन्वेषण की वैज्ञानिक प्रक्रियाओं का अध्ययन किया। उनके संस्कृत एवं वैदिक साहित्य के गुरुओं में महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त दाधिमथ, महामहोपाध्याय पं० परमेश्वरानन्द शास्त्री, पं० भीमसेन शर्मा आगरा निवासी आदि उल्लेखनीय हैं। म० म० पं० मधुसूदन ओझा तथा म० म० गिरिधर शर्मा चतुर्वेद से उन्होंने वेद के रहस्यों का अवगाहन किया। ओरियन्टल कालेज लाहौर के प्रिन्सिपल श्री ए० सी० वुलनर से उन्होंने ग्रन्थ-सम्पादन कला सीखी।

आचार्य विश्वश्रवाः ने स्वामी दयानन्द के ऋग्वेद भाष्य पर विस्तृत महाभाष्य लिखने का उपक्रम किया है, जो संस्कृत तथा हिन्दी में लिखा जा रहा है। 'अन्वितार्थ-प्रदीप' नामक इस महाभाष्य की यह विशेषता है कि इसमें भाष्यकार ने महर्षि दयानन्द कृत मन्त्र-पदार्थ की टीका—पदार्थप्रदीप, अन्वय की टीका—अन्वितार्थप्रदीप, भावार्थ की टीका—भावार्थप्रदीप और ऋषि, देवता, छन्द, स्वर, मन्त्रभूमिका, पदपाठ आदि की टीका—विषय प्रदीप इस प्रकार चार टीकायें लिखने का प्रयास किया है। महाभाष्य की विशद भूमिका में व्यास जी ने ऋग्वेद की मन्त्रगणनाविषयक उत्थापित प्रो० मैकडानल्ड, पं० सातवलेकर तथा पं० युधिष्ठिर मीमांसक[1] आदि के मतों की आलोचना करते हुये ऋषि दयानन्द द्वारा उल्लिखित ऋक् संख्या को यथार्थ घोषित किया है।

अन्य ग्रन्थ—विश्वश्रवाः जी ने 'निरुक्त को समझने में प्राचीन आचार्यों की भूल' शीर्षक एक अन्य महत्त्वपूर्ण निबन्ध भी लिखा था। आचार्य जी ने यज्ञपद्धति मीमांसा तथा सन्ध्यापद्धति मीमांसा आदि अनेक उत्कृष्ट ग्रन्थ लिखे हैं। ऋषि दयानन्द की पाठ विधि पर भी आचार्य जी ने एक उपयोगी पुस्तक लिखी है।

---

१. मैंने 'ऋग्वेद की ऋक्संख्या' में प्रो० मैकडानल्ड द्वारा प्रकाशित जिन तीन भूलों का निर्देश किया था। उनमें से दो का पं० विश्वश्रवाः जी ने अपने ग्रन्थ में स्वीकार करके उनका पालन कर दिया है। तृतीय भूल, सकल मन्त्रों की गणना १०५२१ तथा १०५८९ की सङ्गति लगाने का पण्डित जी ने भरसक प्रयत्न करके भी दोनों गणनाओं के समन्वय में अपनी असमर्थता प्रकट की है। यु० मी०

(४०) पं० युधिष्ठिर मीमांसक

भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु के सुयोग्य शिष्य पं० युधिष्ठिर मीमांसक का जन्म अजमेर जिलान्तर्गत [illegible] ग्राम में हुआ। उनके पिता का नाम पं० गौरीलाल आचार्य और माता का नाम यमुना देवी था। श्री गौरीलाल आचार्य आर्यसमाज के मूक सेवक प्रचारक थे। उन्होंने [illegible] में रहते हुए पूरे [illegible] वर्ष तक [illegible] जिस में आर्यसमाज का महत्त्वपूर्ण कार्य किया। मीमांसक जी की शिक्षा अमृतसर काशी आदि स्थानों [illegible] में हुई। वेद शास्त्रों के पारगामी विद्वान् मीमांसक जी ने वेदविषयक प्रचुर साहित्य का लेखन एवं सम्पादन किया है। उनके कृतित्व का संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार किया जा सकता है—

१. सामवेद के प्रथम मन्त्र का भाष्य—यह भाष्य टंकारा पत्रिका (जुलाई सितम्बर १९६१ ई०) में प्रकाशित हुआ। भाष्यारम्भ में विद्वान् भाष्यकार ने भूमिका लिखकर भाष्यरचनाविषयक अपनी दृष्टि को स्पष्ट किया। भाष्य का क्रम इस प्रकार है—प्रथम मूल मन्त्र, उसका पदपाठ, तत्पश्चात् पदार्थ, पुनः अन्वय, उसके पश्चात् अधियज्ञ, अधिदैवत और अध्यात्मपरक अर्थ, अन्त में भावार्थ।

२. ऋषि दयानन्द रचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा ऋग्वेद भाषा भाष्य (मं० १ सू० १-४९) का सम्पादन।

३. यजुर्वेद भाष्यसंग्रह—ऋषि दयानन्द कृत यजुर्वेद के जो अंश पंजाब की शास्त्री परीक्षा में स्वीकृत थे, उन का सम्पादन।

४. माध्यन्दिन-संहितायाः पदपाठः—यजुर्वेद के पदपाठ का सम्पादन तथा प्रकाशन।

मीमांसक जी ने विभिन्न वैदिक विषयों पर उच्चकोटि के शोध निबन्ध लिखे हैं, जो शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये तथा वेद-सम्मेलनों में पढ़े गये। यथा—'ऋग्वेद की ऋक्संख्या' 'दुष्कृताय चरकाचार्यम् मन्त्र पर विचार ऋग्वेद की कतिपय दानस्तुतियों का विवेचन, मन्त्रब्राह्मण-योर्वेदनामधेयम्' इत्यत्र कश्चिद् अभिनवो विचारः।

उपर्युक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त श्री मीमांसक जी ने महर्षि स्वामी दयानन्द रचित सत्यार्थप्रकाश का सुसम्पादित संस्करण प्रकाशित किया है, जिसमें विभिन्न पाठों का मिलान कर यथोचित पाठनिर्धारण के साथ-साथ सहस्रों उपयोगी पाद टिप्पणियां दी गई हैं। रामलाल कपूर ट्रस्ट ने इसे आर्यसमाज शताब्दी संस्करण के अन्तर्गत सं० २०२६ वि० में प्रकाशित किया है। महर्षि दयानन्द के ऋग्वेदभाष्य (प्रथम द्वितीय खण्ड) का सुसम्पादित संस्करण भी इसी वर्ष प्रकाशित हुआ। उस ग्रन्थ का सम्पादन कर तथा मूल संस्कृत भाष्य तथा भाषा भाष्य का पाठ निर्धारण एवं अनवधानतः मुद्रणादि के कारण हुई भूलों का परिमार्जन करते हुये प्रकाशन करना एक स्मरणीय कार्य है। ऋग्वेद भाष्य के दोनों भाग शताब्दी प्रकाशन योजना की आर्थिक सहायता से प्रकाशित किये गये हैं। स्वामी दयानन्द के कर्मकाण्डात्मक ग्रन्थ संस्कारविधि का भी संशोधित संस्करण मीमांसक जी ने प्रकाशित किया, जिसमें विगत संस्करणों की पारस्परिक तुलना एवं पाठभेदों का सम्यक् विवेचन किया गया है। था। अब उसका आ० स० शताब्दी संस्करण भी छप रहा है। इस प्रकार मीमांसक जी ने महर्षि दयानन्द के प्रमुख ग्रन्थों का सम्पादन एवं आदर्श पाठ निर्धारण का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

उनके अन्य ग्रन्थों का उल्लेख इस प्रकार है—

१. ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों का इतिहास—स्वामी दयानन्द रचित सम्पूर्ण वाङ्मय का ऐतिहासिक विश्लेषणात्मक विवरण प्रथम बार उपस्थित किया गया। स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थों के हस्तलेखों का आधुनिक तरीके पर पूर्ण विवरण भी इसमें दिया गया है। अजमेर से सं० २००६ वि० में प्रकाशित।

२. संस्कृत वाक्यप्रबोध—महर्षि दयानन्द रचित इस ग्रन्थ की कतिपय मुद्रणविषयक अशुद्धियों पर पं० अम्बिकादत्त व्यास ने जो 'अबोध निवारण' नामक पुस्तक लिखकर आलोचना की थी, उसका सम्यक् उत्तर देते हुये, तथा पाणिनीय व्याकरण के अनुसार स्वामी जी के प्रयोगों का औचित्य सिद्ध करते हुये यह संस्करण सम्पादित किया गया है।

३. पूना प्रवचन—ऋषि दयानन्द के पूना में दिये गये १५ व्याख्यानों का सम्पादित संस्करण।

'कन्या गुरुकुल' के आचार्य पद पर भी कार्य करते रहे। सन् १९६३ ई० से आप दिल्ली में रहकर सार्वदेशिक सभा के अनुसन्धान-विभाग में कार्य कर रहे हैं। शास्त्री जी ने अनेक उच्च कोटि के विद्वत्तापूर्ण ग्रन्थ लिखकर आर्यसमाज के साहित्य की अभिवृद्धि की है। उनके द्वारा लिखे गये ग्रन्थों का विवरण इस प्रकार है—

१. **आर्य सिद्धान्त सागर** (प्रथम खण्ड)—इस महाग्रन्थ की रचना शास्त्री जी ने ठाकुर अमरसिंह जी आर्यपथिक (सम्प्रति अमर स्वामी जी) के सहलेखन में की। यह ग्रन्थ आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर से प्रकाशित हुआ था। इसमें ईश्वर जीव प्रकृति तथा अन्य शतशः सैद्धान्तिक तथा दार्शनिक विषयों की पुष्टि में वैदिक तथा आर्ष वाङ्मय से सहस्रों प्रमाण एकत्र कर संकलित किये गये हैं। यह ग्रन्थ शास्त्रार्थकर्ताओं के लिये अति उपयोगी है, क्योंकि उन्हें अनायास ही प्रत्येक विषय पर प्रमाणों का भण्डार उपलब्ध हो जाता है। वर्षों से यह उपयोगी ग्रन्थ द्वितीय संस्करण की प्रतीक्षा में है।

२. **वैदिक ज्योति**—वेदविषयक उच्चकोटि के लेखों का स्फुट संग्रह। इस पर लेखक को सार्वदेशिक सभा द्वारा 'दयानन्द पुरस्कार' से पुरस्कृत किया गया।

३. **शिक्षण-तरङ्गिणी**—इस पुस्तक में शिक्षाविषयक उच्च कोटि के फुटकर निबन्धों का संग्रह किया गया है। पुराकालीन गणित विद्या पर अनेक महत्त्वपूर्ण शोध निबन्ध इस संग्रह की विशेषता है।

४. **वैदिक इतिहास विमर्श**—पाश्चात्य विद्वानों ने वेद में अनित्य इतिहास मानते हुये जो आक्षेप किये है, उनके समाधानार्थ यह ग्रन्थ लिखा गया है। इसमें प्रो० ए० ए० मैकडानल के वैदिक इण्डैक्स में अभिव्यक्त विचारों का प्रमाणपुरस्सर खण्डन किया गया है। तथा वेद में आभासित इतिहासपरक मन्त्रों के वास्तविक अर्थों का प्रतिपादन किया गया है।

५. **दयानन्द सिद्धान्त प्रकाश**—गाजियाबाद निवासी पौराणिक पं० रामचन्द्र शर्मा ने 'दयानन्द-रहस्य' लिखकर स्वामी दयानन्द के कतिपय सिद्धान्तों की कटु आलोचना की थी। शास्त्री जी ने इसमें उक्त पुस्तक का खण्डन कर स्वामी जी के सिद्धान्तों का उचित मूल्याङ्कन किया है।

६. **कर्म मीमांसा**—कर्मविषयक गूढ समस्या पर यह मार्मिक एवं विद्वत्तापूर्ण विवेचनात्मक ग्रन्थ है।

७. वैदिक विज्ञान विमर्श—सुप्रसिद्ध संस्कृत विद्वान् महामहोपाध्याय पं० गिरधर शर्मा चतुर्वेद ने बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् के तत्वावधान में कुछ व्याख्यान दिये थे, जो कालान्तर में 'वैदिक विज्ञान और भारतीय संस्कृति' शीर्षक से पुस्तकाकार प्रकाशित हुये। चतुर्वेद महोदय ने वैदिक विज्ञान के अन्तर्गत मृतक-श्राद्ध, मूर्ति-पूजा, कृष्ण की पुराणोक्त रासलीला, अवतारवाद आदि पौराणिक मन्तव्यों की विवेचना की, और उन्हें ही वेदप्रतिपादित विज्ञान के नाम से निरूपित किया। इसी पुस्तक में स्वामी दयानन्द के वेदविषयक सिद्धान्तों की कहीं स्पष्टरूप में और कहीं व्याजस्तुति की शैली में आलोचना की गई थी। आचार्य जी ने 'वैदिक विज्ञान विमर्श' लिखकर चतुर्वेद महोदय के उपर्युक्त आक्षेपों का युक्तियुक्त समाधान किया।

८. सामवेद-भाष्य - सामवेद संहिता का यह सुबोध हिन्दी भाष्य एक विद्वत्तापूर्ण भूमिका सहित आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित हुआ है।

९. वैदिक युग और आदि मानव—भारतीय विद्या भवन बम्बई द्वारा प्रकाशित 'वैदिक एज' में अभिव्यक्त कतिपय आपत्तिजनक स्थलों की समीक्षा इस ग्रन्थ की विशेषता है।

१०. तत्त्वार्थादर्श—जैन विद्वानों ने स्वामी दयानन्द आर्यसमाज के आस्तिकवाद तथा ईश्वरवाद के खण्डन में अनेक ग्रन्थ समय-समय पर लिखे हैं। पं० अजित कुमार शास्त्री ने सत्यार्थप्रकाश के द्वादश समुल्लास का खण्डन 'सत्यार्थदर्पण' में किया था, जो चम्पावती जैन ग्रन्थमाला के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ। आचार्य जी ने जैन विद्वानों के उन आक्षेपों का खण्डन करते हुये जैन धर्म दर्शन तथा जैन कर्मवाद का नैयायिक तर्कपूर्ण शैली में प्रत्याख्यान किया है। यह ग्रन्थ भी सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित हुआ।

शास्त्री जी ने अंग्रेजी में जो ग्रन्थ लिखे हैं, वे इस प्रकार हैं—

1. Arya Samaj—its Cult and Creed.—इस बृहद् ग्रन्थ में आर्यसमाज का विस्तृत परिचय देते हुये आर्यसमाज के मन्तव्यों और सिद्धान्तों का विवेचनात्मक निरूपण किया गया है। इसके अब तक दो संस्करण सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित हो चुके हैं।

2. Vedic Caste System—इस पुस्तक में गुण कर्म के सिद्धान्तों पर आधृत वर्णव्यवस्था का प्रतिपादन किया गया है। यह पुस्तक आज के

प्रगतिशील युग में जन्मगत जात-पात का समर्थन करनेवाले जगन्नाथपुरी के शङ्कराचार्य स्वामी निरञ्जनदेव तीर्थ के सङ्कीर्ण विचारों की यथार्थ समीक्षा प्रस्तुत करती है।

3. Natural Sciences in the Vedas—वेदमन्त्रों में विद्यमान भौतिक विज्ञानों का मूल सिद्ध किया गया है।

4. Aryasamaj at a Glance—आर्यसमाज का परिचय।

5. Gems of Aryan Wisdom इस उपयोगी पुस्तक में आर्य जाति की उच्च कोटि की बुद्धि का विशद विवेचन किया गया है।

6. Unity in world and in Home.

7. Ban on cow Slaughter—गोवध-निषेध विषयक पुस्तक।

8. Vedic Marriage Ceremony—वैदिकविवाह का परिचय तथा विधि।

9. Vedic Sandhya(Daily Aryan Prayer)—सन्ध्योपासना का विवेचन एवं विधि।

10. Havan Mantra (Procedure of Havana)—हवन विधि का निरूपण।

11. Some points of the political philosophy of the Vedas—वेदप्रतिपादित राजनीतिविज्ञान के कुछ बिन्दुओं का विवेचन।

सम्प्रति आप सार्वदेशिक सभा के तत्त्वावधान में अथर्ववेद का अंग्रेजी अनुवाद तैयार कर रहे हैं।

:o:

(४२) डा० स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्यसमाज के मूर्धन्य साहित्यकार तथा दार्शनिक विद्वान् गङ्गाप्रसाद जी उपाध्याय के ज्येष्ठ पुत्र डा० सत्यप्रकाश का जन्म २४ अगस्त १९०५ ई० में हुआ। १९२७ ई० में आपने रसायनशास्त्र में एम० एस-सी० : तथा १९३२ ई० में डी० एस-सी० की परीक्षायें उत्तीर्ण की। पर्याप्त समय तक प्रयाग विश्वविद्यालय में रसायन के प्राध्यापक तथा विभागाध्यक्ष के पदों पर कार्य करने के पश्चात् १९६७ ई० में आपने अवकाश ग्रहण किया, और १० मई १९७१ ई० में चतुर्थाश्रम की दीक्षा ग्रहण की।

यद्यपि डा० सत्यप्रकाश विज्ञान के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के प्राध्यापक हैं, तथापि विज्ञान की ही भांति दर्शन धर्म तथा वैदिक साहित्य के अध्ययन में भी आपकी रुचि प्रारम्भ से हो रही। फलतः जहां डा० सत्यप्रकाश ने रसायनविषयक उच्चकोटि के ग्रन्थ लिखे, वहां वैदिक एवं दार्शनिक विषयों पर भी आपने अपनी लेखनी का चमत्कार दिखाया। आपने अपने पिता स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय द्वारा रचित शतपथ ब्राह्मण के हिन्दी भाष्य का सम्पादन कर विस्तृत भूमिका सहित उसे प्रकाशित कराया[1]। इसके अतिरिक्त डा० सत्यप्रकाश ने जिन वैदिक कल्पसूत्रों का सम्पादन किया है, उनका विवरण निम्न प्रकार है—

१. **आपस्तम्ब-शुल्व-सूत्रम्**—कपर्दिभाष्येण करविन्दसुन्दरराजव्याख्याभ्यां च सहितम्। अनुवाद। International Academy of Indian culture से १९६८ में प्रकाशित।

२. **बोधायनशुल्व-सूत्रम्**— द्वारिकानाथयज्वरचितशुल्बदीपिकाख्य-व्याख्या सहितम्। प्रो० जी० थीबो कृत अनुवाद का सम्पादन। १९६८ ई० में प्रकाशित।

३. **मानव श्रौत सूत्र तथा मैत्रायणी संहिता** का सम्पादन। सन् १९६३ ई० में प्रकाशित।

डा० सत्यप्रकाश ने कतिपय पुरातात्त्विक एवं प्राचीन भारत में विद्यमान विज्ञान तथा अन्य भौतिक विद्याओं के सम्बन्ध में अन्वेषणात्मक ग्रन्थ लिखे हैं। जिनसे यह सिद्ध होता है कि भारतीय साहित्य के इस अल्पज्ञात भण्डार का आपने बहुविध अन्वेषण किया है। ऐसे ग्रन्थ निम्न हैं—

वैज्ञानिक विकास की भारतीय परम्परा; प्राचीन भारत में रसायन का विकास।

अंग्रेजी ग्रन्थ—Founders of Science in Ancient India, Brahma Gupta—ancient Mathematician and Astronomer; Coinage in Ancient India; Chemical studies of Archaeological Antiquities आदि।

---

1. The Research Institute of Ancient Scientific Studies, New Delhi. द्वारा १९६७ ई० में प्रकाशित।

Vincint Veritas (सत्यमेव जयते)—अफ्रीका में दिये वेद तथा अन्य विषयों के भाषणों का संग्रह।

Enchanted Island or Poetry of Life—ऋग्वेद के कतिपय मन्त्रों की भावपूर्ण व्याख्या। आर्ययुवक समाज अबोहर से प्रकाशित।

Man and his Religion[1] ? Light with in.

अन्य ग्रन्थ—

१. ब्रह्म विज्ञान—ईश तथा श्वेताश्वतर उपनिषदों का पद्यानुवाद।

२. प्रतिबिम्ब—यह उन कविताओं का संग्रह है, जो डा० सत्यप्रकाश द्वारा लिखी गई।

३. वेदों पर अश्लीलता का व्यर्थ आक्षेप—कला प्रेस प्रयाग से प्रकाशित।

४. Humanitarian Diet—आयुर्विज्ञान की दृष्टि से मांसाहार की अनुपयोगिता सिद्ध करनेवाला यह उत्कृष्ट ग्रन्थ Religious Renaissance Series के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ।

५. Agnihotra—अग्निहोत्र की वैज्ञानिक व्याख्या।

६. A critical study of the philosophy of Dayanand—आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान की स्वर्ण जयन्ती पर प्रकाशित यह ग्रन्थ स्वामी जी के दार्शनिक सिद्धान्तों की तार्किक विवेचना प्रस्तुत करने वाला उत्कृष्ट ग्रन्थ है। प्रकाशन काल १९३८ ई०।

७ The Philosophy of the Vedas—वैदिक दर्शन पर यह उपयोगी पुस्तक आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित हुई।

o

१. जनज्ञान प्रकाशन, दिल्ली से प्रकाशित।

(४३) पं० वीरेन्द्र शास्त्री एम. ए.

सामवेद भाष्यकार आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री का जन्म १ जुलाई १९१५ ई० में हाथरस (जिला अलीगढ) में हुआ। इनके पिता पं० हरिशंकर अग्निहोत्री थे। शास्त्री जी ने संस्कृत तथा हिन्दी में एम० ए० के अतिरिक्त साहित्याचार्य एवं काव्यतीर्थ परीक्षायें उत्तीर्ण की। राजकीय शिक्षा सेवा में कार्य करने के पश्चात् आप १ जुलाई १९७३ ई० में सेवा-मुक्त हुये। आपने आर्यसमाज के शैक्षणिक कार्यों में उत्साहपूर्वक भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के शिक्षाविभाग के अधिष्ठाता, सार्वदेशिक विद्यार्य सभा के मन्त्री, तथा विभिन्न आर्यसमाजों के अधिकारी पद पर रहे। आपने सामवेद पर सुबोध हिन्दी भाष्य लिखा, जो प्रथम वेदवाणी (वाराणसी) में विशेषांक के रूप में स० २००७ वि० में दो खण्डों में प्रकाशित हुआ। तत्पश्चात् यही भाष्य आदर्श साहित्य मण्डल रायबरेली से स० २०२० वि० में ग्रन्थाकार छपा।

आपके द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ इस प्रकार है—

धार्मिक शिक्षा ५ भाग, वैदिक भूगोलशास्त्रम्, ईशोपनिषद् व्याख्या, सत्यार्थप्रकाश-सार (१.३. समुल्लास), **पञ्च महायज्ञ।**

वैदिक शोध और गवेषणा की प्रसिद्ध आर्यसामाजिक मासिक पत्रिका 'वेदवाणी' के प्रथम दो वर्षों में सचालक एवं सम्पादक आप ही थे। कालान्तर में रायबरेली से आपने वेदज्योति मासिक पत्रिका का प्रकाशन भी किया।

(४६) पं० वीरसेन वेदश्रमी वेदविज्ञानाचार्य

वैदिक यज्ञविज्ञान विषयक शोध को नई दिशा प्रदान करने वाले पं० वीरसेन वेदश्रमी गुरुकुल वृन्दावन के प्रतिभाशाली स्नातक हैं। "अन्नाद् भवन्ति भूतानि, पर्जन्यादन्नसम्भवः। यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः" इस गीतोक्त सिद्धान्त को अपने यज्ञानुसन्धान द्वारा पुष्ट करने वाले वेदश्रमी जी ने वृष्टियज्ञों का सफल सञ्चालन किया है। उनका यजुर्वेदविषयक विशिष्ट शोधकार्य एवं अध्ययन निम्न प्रकार है (यह सम्पूर्ण सामग्री अद्यापि अप्रकाशित है)—

१ यजुर्वेद संहिता का अनुवाक क्रम से विभाग।

२ यजुः संहिता के अनुवाकों तथा अध्यायों की पदगणना--पदसंहिता पाठानुसार।

३. यजुः संहिता की प्रति का संशोधन—अक्षर, स्वर, विरामादि सहित (वेदपाठियों तथा शिक्षा ग्रन्थों के आधार पर)।

४ यजुर्वेद संहिता का स्वाहाकार प्रयोग—शतपथ एवं ऋषि दयानन्द प्रदर्शित शैली के अनुसार मन्त्रानुवृत्ति सहित।

५. यजुर्वेद में प्रयुक्त शब्दों का उदात्त अनुदात्त स्वरित रूप से स्वर पदानुक्रम कोष।

६ यजुर्वेद की क्रम संहिता—आर्षी संहिता का स्वर सहित लेखन।

७. यजुर्वेद के ३१ वें और ४० वें अध्यायों के पद, क्रम, जटा, घनादि समस्त पाठों का सस्वर लेखन।

८ रुद्राष्टाध्यायी के मन्त्र, देवता एवं पद पाठ का सस्वर लेखन।

९. यजुर्वेद के १—४ अध्याय के मन्त्रों के मन्त्रक्रम से छोटे विभाग करके मन्त्रक्रमानुसार ही महर्षि दयानन्द का अर्थ प्रदर्शन।

१०. अध्याय १ से ४ तक के मन्त्रों का अभिनव सुगम शैली से अत्यन्त स्पष्ट रूप से अर्थ प्रदर्शन।

११. अध्याय १—४ तक के मन्त्रों का वेदसार नाम से सारांशलेखन।

१२ यजुर्वेद संहिता के प्रथम एवं द्वितीय अनुवाकों के मन्त्रों की विस्तृत व्याख्या।

१३. ३१ वें अध्याय के पदों का कोष महर्षि दयानन्द के अर्थ-प्रदर्शन सहित।

१४. वैदिक षोडशी—१६ कला युक्त परमात्मा का वर्णन करने वाला १६—१६ ऋचाओं के तीन सूक्त।

१५. गायत्री मन्त्र के प्रकृति विकृति पाठ समन्वदूक्त इस ग्रन्थ में गायत्री मन्त्र के समस्त प्रकृति एवं विकृति पाठों का सस्वर लेखन, एवं मन्त्र के रथादि पाठों के चित्रों का भी प्रदर्शन है। ग्रन्थ की प्रस्तावना स्व० महामहोपाध्याय श्रीधर अण्णा शास्त्री वारे (नासिक) ने लिखी है। ५२ प्रकार के पाठ इसमें संगृहीत किये गये हैं।

१६. वेदमन्त्रों के आधार पर वर्तमान शरीरशास्त्र का विवेचन।

१७. कतिपय सामगान एवं अनेक वेदमन्त्रों का शास्त्रीय संगीत पद्धति से लेखन।

१८. सामगान संग्रह। १९. श्रुतिसुधा—३५ वेदमन्त्रों की व्याख्या।

२०. वेद साहस्री—चारों वेदों के एक सहस्र मन्त्रों का नित्य पाठ तथा यज्ञार्थ संग्रह।

२१. याज्ञिक आचार संहिता—यज्ञसम्बन्धी विविध विषयों एवं विधियों की विवेचना।

२२. वेद कथा—यजुर्वेद के प्रथम मन्त्र की विस्तृत व्याख्या।

वेदश्रमी जी के प्रकाशित ग्रन्थ —

१. वैदिक सम्पदा—वेद में वर्तमान समय की समस्याओं का समाधान दर्शानेवाला ६०० पृष्ठों का वृहद् ग्रन्थ। यह ग्रन्थ अभी-अभी गोविन्द राम हासानन्द ने प्रकाशित किया है।

२. संस्कार प्रश्नोत्तरी। ३. याज्ञिक वृष्टिविज्ञान। ४. वैदिक वृष्टि-विज्ञान। ५. वैदिक पर्जन्यविज्ञान। ६. वृष्टियज्ञों के परिणाम। ७. वैदिक समाजवाद। ८. वैदिक अध्यात्मवाद। ९. वैदिक गोसूक्त।

वेदश्रमी जी ने विभिन्न यज्ञों की संक्षिप्त विधियों का सङ्कलन भी किया है। जिनमें विश्वभृतयज्ञ, राष्ट्रभृतयज्ञ, जनभृतयज्ञ, विश्व शान्ति यज्ञ, रुद्र यज्ञ, राजसूयपर्व यज्ञ, सुनासीर यज्ञ, गोमेध यज्ञ, वाजप्रसवीय यज्ञ, पार्जन्येष्टि, वृष्टियज्ञ, वृष्टिरोधक यज्ञ, ऋतु यज्ञ, भैषज यज्ञ, मेधा यज्ञ, मनः शान्ति यज्ञ, श्री यज्ञ, वरुण प्रघास यज्ञ, आत्मपावन यज्ञ, गायत्री यज्ञ, आध्यात्म यज्ञ, पुरुषमेध यज्ञ, प्रजापति यज्ञ, सर्वदेवता यज्ञ, यजुः पारायण यज्ञ, आधान यज्ञ, दर्शेष्टि, पौर्णमासेष्टि आदि उल्लेखनीय हैं।

(४७) डा. मुन्शीराम शर्मा 'सोम'

सुप्रसिद्ध साहित्यकार, समीक्षक तथा वैदिक विद्वान् डा० मुन्शीराम शर्मा 'सोम' का जन्म मार्गशीर्ष कृष्णा १ सम्वत् १९५८ वि० तदनुसार ३० नवम्बर १९०१ को आगरा जिले के गांव 'आदरा' में हुआ। उनके पिता का नाम था पं० तालेवरसिंह तथा माता का नाम श्रीमती जानकी देवी था। आपने १९२६ ई० में पंजाब विश्वविद्यालय से एम० ए० संस्कृत विषय लेकर प्रथम श्रेणी में सर्वोच्चस्थान प्राप्त करते हुए उत्तीर्ण की। पुनः १९२९ ई० में आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम० ए० परीक्षा द्वितीय स्थान ग्रहण कर उत्तीर्ण की। १९५१ तथा १९५६ ई० में आपने क्रमशः आगरा विश्वविद्यालय से पी-एच० डी० तथा डी० लिट० की उपाधियां ग्रहण कीं। १९२६ ई० में डी०ए०वी० कालेज कानपुर में आपने हिन्दी विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य प्रारम्भ किया। जून १९६२ ई० में सेवा से अवकाश ग्रहण किया।

आपके द्वारा रचित ग्रन्थों की संख्या पर्याप्त है, परन्तु यहां केवल उन्हीं रचनाओं का परिचय दिया जा रहा है, जिनका सम्बन्ध आर्यसमाज तथा वैदिक साहित्य से है —

१. आर्य धन— वैदिकधर्मविषयक परिचयात्मक ग्रन्थ।

२. सन्ध्या-चिन्तन—केन्द्रीय आर्य सभा कानपुर द्वारा प्रकाशित।

३. सन्ध्या-संगीत—सन्ध्या प्रार्थना एवं अग्निहोत्र के मन्त्र तथा उनकी गानों में व्याख्या।

४. श्रुति-संगीतिका—वेदमन्त्र गत भावों का पल्लवन कर कमनीय कविताएं लिखी गई हैं।

५. भक्ति तरङ्गिणी—भक्तिपरक वेदमन्त्रों का काव्यानुवाद।

डी० ए० वी० कालेज कानपुर की अध्यापन सेवा से अवकाश ग्रहण कर लेने के अनन्तर डा० शर्मा ने इस कालेज के तत्त्वावधान में 'वैदिक शोध संस्थान' की स्थापना जुलाई १९६२ ई० में की। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने इस शोध संस्थान को मान्यता प्रदान की है। डा० मुन्शीराम शर्मा के निर्देशन में चारों वेदसंहिताओं में मन्त्रों की पुनरावृत्ति, यजुर्वेद के याज्ञिक प्रकरणों तथा सम्पूर्ण वेदमन्त्रों की संख्यानिर्धारणविषयक

कार्य किया। डा० शर्मा ने वेदार्थचन्द्रिका तथा वैदिक निबन्धावली शीर्षक वैदिक विवेचन से सम्बद्ध दो ग्रन्थ लिखे। आपके द्वारा लिखित पुरुष सूक्त विवेचन, तथा A Comparative Study of the Vedic Hymns पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

(४८) डा० सुधीरकुमार गुप्त एम.ए. पीएच.डी.

राजस्थान विश्वविद्यालय के संस्कृत-विभाग के अध्यक्ष तथा अखिल भारतीय आर्य विद्वत् सम्मेलन के संयोजक डा० सुधीर कुमार गुप्त ने 'वेदभाष्यपद्धति को दयानन्द सरस्वती की देन' विषय पर शोध कार्य कर राजस्थान विश्वविद्यालय से डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि प्राप्त की। डा० गुप्त ने अपने इस शोध प्रबन्ध में स्वामी दयानन्द की वेदभाष्य प्रणाली का गम्भीर अनुशीलन कर उसका वैशिष्ट्य प्रतिपादित किया है, तथा अन्य वेदभाष्यकारों से इसकी वरीयता सिद्ध की है। डा० गुप्त ने वैदिक साहित्यविषयक अन्य भी अनेक शोध निबन्ध लिखे हैं। उनका Nature of the Vedic Shakhas नामक निबन्ध अखिल भारतीय प्राच्य विद्या परिषद् के १५ वें बम्बई अधिवेशन में पढ़ा गया था। इसमें विद्वान् लेखक ने वेदों की विभिन्न शाखाओं पर विचार करते हुये स्वामी दयानन्द के इस मत की पुष्टि की है कि शाखायें वेद का व्याख्यान ही हैं। यजुर्वेद की माध्यन्दिनीय और काण्व, अथर्ववेद की शौनक तथा पैप्पलाद, तथा सामवेद की कौथुम और जैमिनीय शाखाओं में पाये जानेवाले कतिपय पाठान्तरों का तुलनात्मक विवेचन करने के पश्चात् वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि शाखाओं में संहिता के मूलपाठ को अधिकाधिक सरल और बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है। अतः प्रकारान्तर से इन्हें वेदों का व्याख्यान कहा जा सकता है।

इसी प्रकार उनका एक अन्य निबन्ध Ancient School of Vedic Inter pretation भी उक्त परिषद् के वैदिक विभाग के अन्तर्गत १९५१ ई० में पढ़ा गया। इस निबन्ध में लेखक ने वेदों के पदपाठ, शाखा प्रवचन, तथा ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतिपादित मन्त्रार्थ की समीक्षा करते हुये यास्कीय

(५१) पं० शिवपूजनसिंह कुशवाहा 'पथिक'

प्रसिद्ध आर्य लेखक श्री पं० शिवपूजनसिंह कुशवाहा का जन्म १ जून १९२८ ई० को ग्राम 'गाम' जिला सारन (छपरा) में हुआ। आपने आगरा विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम० ए० परीक्षा उत्तीर्ण की। आर्यसमाजी लेखकों में पथिक जी का उल्लेखनीय स्थान है। वैदिक तथा आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर किये गये आक्षेपात्मक ग्रन्थों का युक्तियुक्त एवं प्रमाणपुरस्सर उत्तर देने में पथिक जी ने अपनी असाधारण योग्यता का परिचय दिया है। उनके द्वारा रचित ग्रन्थों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

१. **महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्यानुशीलन**—महर्षि दयानन्दकृत वेदभाष्य की विशेषताओं का सम्यक्रूपेण निरूपण करते हुए उसके औचित्य का प्रतिपादन किया गया है। जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा से कई वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ।

२. **ऋग्वेद के दशम मण्डल पर पाश्चात्य विद्वानों का कुठाराघात**—ऋग्वेद के दशम मण्डल को नवीन, तथा कालान्तर में मूलसंहिता में प्रक्षिप्त माननेवाले पश्चिमी विद्वानों के तद्विषयक मत की सप्रमाण समीक्षा की गई है।

३. **अथर्ववेद की प्राचीनता**—अथर्ववेद के सम्बन्ध में एक भ्रम यह भी प्रचलित किया गया है कि अन्य वेदों की अपेक्षा इस वेद की रचना परवर्ती काल में हुई, अतः उसकी गणना वेदत्रयी में नहीं की जाती। कुशवाहा जी ने इस नवीन मत का समाधान कर अथर्ववेद की प्राचीनता स्थापित की है। आदर्श साहित्य मण्डल वाराणसी द्वारा सं० २००६ वि० में प्रकाशित।

४. **महर्षि दयानन्द की दृष्टि में यज्ञ**—'यज्ञ' शब्द के विभिन्न अर्थों का विवेचन। दयानन्द वैदिक शोध संस्थान कानपुर से प्रकाशित।

५. **भारतीय इतिहास और वेद।**

६. **सामवेद का स्वरूप**—जयदेव ब्रदर्स बड़ौदा से सं० २०१२ वि० में प्रकाशित।

कुशवाहा जी रचित अन्य ग्रन्थ—आर्यसमाज के द्वितीय नियम की व्याख्या, आर्यसमाज में मूर्तिपूजा—भ्रान्तिनिवारण, भारतीय इतिहास की

४. ऋग्वेद सौरभ—सौ से अधिक मन्त्रों का इसमें चयन है। आर्याभिविनय ग्रन्थ के ढंग पर इसमें ऋग्वेद के मन्त्रों का संकलन है। मन्त्र का पदपाठ पदार्थ आचार्य दयानन्द की शैली पर दिया है, फिर मर्मस्पर्शी व्याख्या की है

५. यजुर्वेद सौरभ—इस ग्रन्थ का प्रकाशन ८ दिसम्बर १९७३ को हुआ है।

इसी प्रकार अन्य दो वेद साम और अथर्व के सौरभ भी आप आर्यसमाज-स्थापना-शताब्दी से पूर्व प्रकाशन करना चाहते हैं।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा ऋषि दयानन्द के वेद-भाष्य के उड़िया में अनुवाद की भी आपकी इच्छा है।

आपकी धर्मपत्नी शन्नोदेवी जी जीवन के लक्ष्य, रुचि, आकाङ्क्षा सब दृष्टियों से आपके समरूप हैं। 'वैदिक अनुसन्धान प्रतिष्ठान' की संचालिका है।

:०:

(५३) पं० पन्नालाल परिहार

वेदविषयक महत्त्वपूर्ण समस्याओं तथा वैदिक अध्ययन के विभिन्न पहलुओं पर अंग्रेजी भाषा में उपयोगी पुस्तकें लिखनेवाले पं० पन्नालाल परिहार का जन्म १८९६ ई० में पाली (राजस्थान) के एक कृषक परिवार में हुआ। परिहार जी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बी० ए० और एल० एल० बी० की परीक्षायें उत्तीर्ण की। कुछ समय चन्द दरबार हाई स्कूल जोधपुर में अध्यापन का कार्य करने के पश्चात् वे जोधपुर राज्य सचिवालय में वरिष्ठ अधिकारी के रूप में नियुक्त हुये। सुप्रसिद्ध इतिहासकार और पुरातत्त्ववित् महामहोपाध्याय पं० विश्वेश्वर नाथ रेऊ के अवकाश ग्रहण करने के उपरान्त वे जोधपुर राज्य के पुरातत्त्व विभाग के निदेशक, सरदार अद्भुतालय के अधीक्षक, तथा सुमेर सार्वजनिक पुस्तकालय के सर्वोच्च अधिकारी नियुक्त हुये।

वैदिक अध्ययन के प्रति परिहार जी की रुचि प्रारम्भ से ही रही। फलतः आपने वेदविषयक विभिन्न ग्रन्थ हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखे। उनके प्रकाशित एवं अप्रकाशित ग्रन्थों का विवरण यहां दिया जा रहा है—

1. Material Science in the Vedas (१९५९ में प्रकाशित)—विभिन्न प्रमाणों तथा वैदिक उद्धरणों से यह सिद्ध किया गया है कि वेदों में भौतिक विज्ञानों का विस्तृत उल्लेख है।

2. What is Soul? (१९५८ ई० में प्रकाशित)—जीवात्मा विषयक प्राचीन एवं अर्वाचीन भारतीय तथा पाश्चात्य दार्शनिक विचारधाराओं का विवेचन।

3. Matter and Life (१९५६ ई० में प्रकाशित)—प्रकृति के जड़ तत्त्व तथा जीव के चेतनात्मक अस्तित्व का विवेचन करते हुये सृष्टि उत्पत्ति तथा अन्य विषयों पर वैदिक दृष्टि से विचार प्रस्तुत किया गया है।

4. In side the Vedas—भारतीय विद्या भवन बम्बई ने The Vedic Age नामक ग्रन्थ प्रकाशित कर वेद तथा उससे सम्बन्ध रखने वाले आर्यों के जीवन के सम्बन्ध में नितान्त भ्रमपूर्ण तथा पश्चिमी विद्वानों का अन्धानुकरण करनेवाले विचार प्रस्तुत किये थे। इसी ग्रन्थ के आलोचना योग्य प्रसङ्गों का मार्मिक समीक्षण करते हुये वेदों की वास्तविक शिक्षा तथा उसके समुज्ज्वल स्वरूप को सुस्पष्ट करने का यत्न इस ग्रन्थ की मुख्य विशेषता है। यह ग्रन्थ १९६२ ई० में जोधपुर से प्रकाशित हुआ।

आपके अप्रकाशित वैदिक ग्रन्थों की सूची -

1. Vedic Wisdom. 2 Vedic Prayer. 3. Vedic Sacrifice. ४. वेद सुमन, ५. वैदिक पूजा, ६ वेद प्रवचन, ७. वेद विज्ञान, ८. वैदिक व्याख्या, ९. वैदिक कोष, १०. वेद में क्या है?

:o:

परिशिष्ट

इस प्रकरण में कतिपय उन विद्वानों तथा उन की कृतियों का परिचय देंगे, जिन्होंने वेद विषय पर अधिक तो नहीं लिखा, परन्तु जो कुछ उन्होंने लिखा है, वह अति महत्त्वपूर्ण है—

(१) स्वामी अनुभवानन्द जी शान्त

ये महानुभाव वेद के गम्भीर विचारक थे। आपने निम्न पुस्तकें लिखी हैं—

१. **भक्त की भावना** – इसमें मन्त्रों की आध्यात्मिक व्याख्यानुसार उच्चकोटि की 'भक्ति की भावना' को वेदमन्त्रों के आधार पर प्रस्तुत किया है। इसे सरस्वती सदन इन्दौर ने प्रकाशित किया। इसी को जन-ज्ञान प्रकाशन दिल्ली ने **वैदिक अध्यात्म ज्योति** के नाम से पुनः प्रकाशित किया।

२. **वेद से वेद का अर्थ**— इस पुस्तक में लेखक ने यह दर्शाने का प्रयत्न किया है कि वेद का अर्थ वेद से ही किस प्रकार स्पष्ट हो जाता है।

३. **निरुक्त का मूल वेद**। तथा—

४. **ऋषि नाम विचार**—ये दो लेख आपके बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। पञ्जाब प्रतिनिधि सभा लाहौर की 'आर्य' पत्रिका में छपे थे। इस प्रकार आपके अन्य कई वेदविषयक गम्भीर लेख आर्यसामाजिक पत्रिकाओं में छपते रहते थे।

अन्य पुस्तकें—स्वामी जी ने पं० लेखरामकृत 'कुल्लियाते आर्यमुसाफिर' का **'आर्यपथिक ग्रन्थावली'** के नाम से तीन भागों में अनुवाद किया। यह स्टार प्रेस प्रयाग से प्रकाशित हुआ। इसमें पं० लेखराम जी की जीवनी भी दी गई है।

आर्यसमाज का परिचय—आर्यकुमार सभा कलकत्ता द्वारा १९२२ ई० में छपा।

आदर्श सुधारक दयानन्द—देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय रचित बंगला पुस्तक का हिन्दी अनुवाद आपने किया। इसे गोविन्दराम हासानन्द ने कलकत्ता से प्रकाशित किया।

आप अत्यन्त स्वाध्यायशील व्यक्ति थे। वेदविषयक किसी भी नई पुस्तक का परिचय मिलने पर उसे पढ़े बिना नहीं छोड़ते थे। एक आंख चिरकाल पूर्व नष्ट हो गई थी, और दूसरी आंख की ज्योति अत्यन्त कम

हुआ। पुनः आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त ने १९११ ई० तथा १९२९ ई० में, तथा आर्यसमाज मद्रास ने १९४१ ई० में इसके विभिन्न संस्करण निकाले। पं० हरिशंकर शर्मा ने इसका हिन्दी अनुवाद किया, जो राजपाल एण्ड संस लाहौर से प्रकाशित हुआ।

पंडित जी की अन्य कृतियां इस प्रकार हैं—ज्योतिष चन्द्रिका, सूर्य सप्ताश्व वर्णन (वेद मन्त्र की व्याख्या), 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' (मन्त्र व्याख्या) १८९३ ई० में आ०प्र० सभा संयुक्त प्रान्त द्वारा प्रकाशित। 'आकृष्णेन रजसा' (मन्त्रव्याख्या), जातिव्यवस्था, वैदिक विकासवाद, गरुण पुराण की आलोचना, मेरी आत्मकथा।

अंग्रेजी ग्रन्थ—

1. English translation of Kena and Katha upanishads. 2. Problems of universe (U. P. Sabha 1916). 3 Problems of Life 1916. 4. Koshas and Lokas in the Vedas 5. Caste System. 6. Vedic Text (1. 2.) आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त द्वारा २००० वि० में प्रकाशित।

(४) स्वामी स्वतन्त्रानन्द

आर्यसमाज के इस तेजस्वी व्यक्तित्ववाले सन्यासी ने 'वेद की इयत्ता' नामक ग्रन्थ लिखकर चारों वेदों की मन्त्रसंख्या का विवेचन किया। उनके द्वारा रचित अन्य ग्रन्थों में 'आर्यसिद्धान्त व सिक्ख गुरु', 'सिक्ख और यज्ञोपवीत', 'आर्यसमाज के महाधन' (जीवनी संग्रह), 'पूर्वी अफ्रीका व मारिशस यात्रा वृत्तान्त' आदि महत्त्वपूर्ण है। स्वामी दयानन्द रचित सत्यार्थ-प्रकाश, गोकरुणानिधि तथा आर्योद्देश्यरत्नमाला का आपने अंग्रेजी में अनुवाद किया, जो अप्रकाशित है। स्वामी दयानन्द की पंजाबी भाषा में जीवनी भी लिखी।

(५) पं. अलगूराय शास्त्री

आप का जन्म आजमगढ़ (उ० प्र०) जिलान्तर्गत 'अमिला' ग्राम में २९ जनवरी १९०० ई० में हुआ। आप का बचपन में ही आर्यसमाज से सम्पर्क हो गया था। शनैः शनैः आप दृढ़ आर्यसमाजी बन गये। आप सन् १९२० ई० में कांग्रेस के राजनीति क्षेत्र में अवतीर्ण हुए, और अन्त तक उसके प्रतिष्ठित नेता के रूप में कार्य करते रहे। कांग्रेस में रहते हुए भी आमरण आर्यसमाज का कार्य करते रहे। आपका ऋग्वेद-रहस्य नामक

उसमें अनुक्त कर्मों की विधि आदि दर्शा दिये हैं। आपने वेद के सम्बन्ध में जो नया महत्त्वपूर्ण कार्य किया है वह है ऋषि दयानन्द कृत ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य के अन्तर्गत हिन्दी भावार्थ का संस्कृत भावार्थ के अनुरूप शोधन। यह भावार्थ मूल संस्कृत भावार्थ के साथ शीघ्र ही प्रकाशित होगा। मुद्रण व्यवस्था हो गई है।

१५. डा० सूर्यदेव शर्मा एम०ए०

आर्यसमाज के प्रसिद्ध वाग्मी लेखक तथा विद्वान् डा० सूर्यदेव जी ने 'वैदिक राष्ट्रगीत' (अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त की काव्यात्मक व्याख्या), तथा पुरुष सूक्त (यजुर्वेद ३१-३२ अध्याय) का भावपूर्ण अनुवाद किया है। ये दोनों पुस्तकें आर्य साहित्य मण्डल अजमेर से प्रकाशित हुईं। इनके अतिरिक्त आपने आर्यसमाज की हिन्दीसेवा, आर्याभिविनय (काव्यानुवाद) आदि उल्लेखनीय पुस्तकें लिखी हैं।

१६. पं० गोपदेव जी

आप आडम्बर से दूर रहनेवाले एक मूक आर्य विद्वान् हैं। सम्प्रति हैदराबाद में रहते हैं। आप उच्चकोटि के दार्शनिक पण्डित हैं। आपने ऋषि दयानन्द कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका का तेलगु भाषा में अनुवाद किया है। इसे देवस्थान ट्रस्ट तिरुपति (आन्ध्रप्रदेश) ने छापा है। आपने मीमांसा के अतिरिक्त पाँचों दर्शनों पर तेलगुभाषा में व्याख्याग्रन्थ लिखे हैं जो छप चुके हैं।

१७. डा. धर्मदेव मेहता एम. ए. पी-एच. डी.

आपकी वेदविषयक निम्न पुस्तकें अंग्रेजी में 'एकेडमी आफ वैदिक रिसर्चिज' द्वारा प्रकाशित हुई हैं।

1. Sciences of Physics and Chemistry in the Vedas.
2. Mathematics in the Vedas.
3. Concept of God in the Vedas.
4. Bases of Astrology in the Vedas
5. Medicine in the Vedas

इन महानुभावों के अतिरिक्त और भी कई एक प्रतिभाशाली नव-युवक वेद की सेवा कर रहे हैं। यथा—श्री आचार्य कृष्ण जी, श्री पण्डित जगदीश विद्यार्थी एम० ए० श्री पं० सत्यपाल जी एम० ए० प्रभृति। इन सबका इस लघु-कलेवर ग्रन्थ में परिचय देना अति कठिन है। इस लिये क्षमा चाहते हैं।

कुछ प्रमुख समाचार

—देश की खाद्य एवं कृषि स्थिति पर चर्चा करते हुए राज्य सभा में संगठन कांग्रेस के श्री नवल किशोर ने एक दिलचस्प आरोप लगाया है कि कई कांग्रेसी नेताओं ने अपनी जमीन 'भूमि सुधार' कानून से बचाने के लिये उसे अपनी भैंसों और कुत्तों के नाम पर हस्तान्तरित कर दिया है।

—नये सर्वेक्षण से अमरीकी विशेषज्ञ इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि दिन के बजाय रात में सिगरेट पीने से फेफड़ों में कैंसर होने का ज्यादह खतरा रहता है। किन्तु भारतीय डाक्टरों के विचार में सिगरेट चाहे कभी भी पी जावे, वह हर हालत में कैन्सर को जन्म देती है। इसलिए सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिये भारी हानिकारक है।

—अमरिकी अन्तरिक्षयान पायनियर—१० बृहस्पति ग्रह की यात्रा पूर्ण कर ग्रह से अब हजारों मील की दूरी पर चला गया है। इस यान ने २१ मास में २६ करोड़ मील की यात्रा की। यह यान ५७० पौण्ड वजन का है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इस यान के थर्मामीटर से मालूम पड़ा है कि बृहस्पति ग्रह धीरे-धीरे छोटा हो रहा है, और इस बात के भी प्रमाण मिले हैं कि बृहस्पति पर जीवन है।

आस्ट्रेलिया के एक ८२ वर्षीय आविष्कारक ने सूर्यशक्तियुक्त चूल्हे पर खाना बनाकर दिखाया है। आविष्कारक का कहना है कि 'धूप बिना पैसे मिलती है, और प्रायः सर्वत्र पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। धरती की सतह का प्रत्येक वर्गमीटर, जिस पर धूप पड़ती है, एक किलोवाट शक्ति उत्पन्न कर सकता है, इस ऊर्जा को क्यों नष्ट होने दिया जाय।'

—भारत से पाकिस्तान के जो युद्धबन्दी वापिस पाकिस्तान लौट रहे हैं, उन्हें पाकिस्तान पुनः अपनी सेना में न रखकर अरब देशों में भेजने का यत्न कर रहा है, किन्तु अरब देशों ने उन्हें अपने यहां सेना में लेने से मना कर दिया, क्योंकि उन्हें डर है कि कहीं ये लोग उनके देश पर ही कब्जा न कर बैठें। ऐसी स्थिति में पाकिस्तान में ही उन्हें नागरिक सेवाओं में लगाया जायगा, और केवल ५ प्रतिशत व्यक्ति ही सेना में लिये जायेंगे।

वेदवाणी के नियम

१—यह पत्रिका प्रतिमास की प्रथम तिथि को प्रकाशित हुआ करती है। यदि पत्रिका १० तारीख तक न पहुंचे, तो तत्काल सूचना मिलने पर पुनः भेजी जा सकेगी।

२—वार्षिक मूल्य ७) रुपये है जो धनादेश (मनिआर्डर) द्वारा अग्रिम भेजना चाहिए। वी० पी० मंगवाने में ग्राहक को १ रु० ३० पैसे अधिक लगते हैं, और समय भी अधिक लगता है। पोस्टल आर्डर तथा चेक से रुपया स्वीकार नहीं किया जायगा।

३—लेख 'सम्पादक वेदवाणी' के नाम से आने चाहियें। लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिये, और वे स्पष्ट, शुद्ध और एक ओर लिखे होने चाहियें। उनको प्रकाशित करना, न करना तथा संशोधन करना सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख पोस्टेज प्राप्त होने पर ही लौटाये जायेंगे।

४—वेदवाणी के नये वर्ष का प्रारम्भ कार्तिक (नवम्बर) मास से होता है, नये वर्ष का प्रथम अङ्क विशाल विशेषाङ्क के रूप में प्रतिवर्ष प्रकाशित होता है।

५—वेदवाणी के ग्राहक किसी मास से भी बन सकते हैं परन्तु मध्य में ग्राहक बनने वालों के वर्ष का प्रारम्भ अङ्क १ या ७ से ही माना जाता है। अर्थात् अङ्क १ से ६ के मध्य में ग्राहक बननेवालों को पिछले अङ्क देकर अङ्क १, तथा अङ्क ७ से १२ के मध्य में ग्राहक बनने वालों को ७ से आगे के प्रकाशित अङ्क देकर अङ्क ७ से ग्राहक बनाया जाता है।

६—वार्षिक मूल्य, विज्ञापन सम्बन्धी धन और व्यवस्था सम्बन्धी समस्त पत्र 'व्यवस्थापक वेदवाणी' के पते से भेजें, नाम से नहीं।

७—विज्ञापन के रेट के लिये विज्ञापन का नमूना भेजकर पूछें। इसमें केवल उत्तम पुस्तकों तथा उचित वस्तुओं के ही विज्ञापन छपते हैं। विज्ञापन का धन अग्रिम आना आवश्यक है। विज्ञापन की सत्यता के लिये हम उत्तरदायी नहीं हैं।

८—ग्राहक महानुभाव पत्र या मनिआर्डर भेजते समय अपनी ग्राहक संख्या अवश्य लिखा करें, अन्यथा भूल हो सकती है।

पता—व्यवस्थापक वेदवाणी कार्यालय, जी० टी० रोड,
बहालगढ़ जिला—सोनीपत (हरयाणा)

श्री रामलाल कपूर ट्रस्ट

द्वारा

प्रकाशित और प्रसारित ग्रन्थ

१. यजुर्वेदभाष्य-विवरण (प्रथम भाग) —	अप्राप्य
यजुर्वेदभाष्य-विवरण (द्वितीय भाग) —	२०-००
२. ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका—	१५-००
भूमिका पर किए गए आक्षेपों के उत्तर—	१-५०
३. माध्यन्दिनपदपाठ —	१५-००
४. ऋग्वेदभाष्य—ऋषि दयानन्द कृत। टिप्पणियों के साथ शुद्ध सुन्दर संस्करण। भाग १—२५-००।	भाग २—२५-००
५. वैदिक-स्वर-मीमांसा—	५-००
६. ऋग्वेद की ऋक्संख्या—	१-००
७. वेद-संज्ञा-मीमांसा—	०-७५
८. देवापि और शन्तनु के वैदिक आख्यान का स्वरूप—	०-७५
९. वेद और निरुक्त—	०-७५
१०. निरुक्तकार और वेद में इतिहास—	०-७५
११. त्वाष्ट्री-सरण्यू आख्यान का वास्तविक स्वरूप—	०-७५
१२. वेद में आर्य-दास युद्ध सम्बन्धी पाश्चात्य मत का खण्डन —	०-७५
१३. वेद में प्रयुक्त विविध स्वराङ्कन-प्रकार—	२-००, सजिल्द ३-००
१४. सत्यार्थप्रकाश—	सजिल्द ६-००, अजिल्द ५-००
आर्यसमाज-शताब्दी संस्करण—२५०० टिप्पणियों और ११ प्रकार की सूचियों से युक्त—	१५-००
१५. संस्कारविधि—	२-५०, सजिल्द ३-५०
आर्य-समाज-शताब्दी संस्करण—८ प्रकार की सूचियों और टिप्पणियों से युक्त—	८-००
१६. संस्कार-समुच्चय—	सजिल्द १५-००
१७. वैदिक-नित्यकर्म-विधि (व्याख्या सहित)—	१-५०
१८. पञ्चमहायज्ञविधि—	० ३५
१९. पञ्चमहायज्ञप्रदीप—	३-००
२०. हवनमन्त्र — (मूलमात्र)	०-२०
२१. सन्ध्योपासनविधि —अर्थसहित।	०-२०

२२. सन्ध्योपासनविधि—अर्थ और दैनिक हवन-मन्त्र सहित ०-२५
२३. आर्य-समाज के वेदसेवक विद्वान् ३-५०
२४. वर्णोच्चारणशिक्षा— ०-२५
२५. शिक्षासूत्राणि—आपिशलि-पाणिनि-चन्द्रगोमी। १-५०
२६. निरुक्त-शास्त्र— २०-००
२७. निरुक्तसमुच्चयः— ६-००
२८. अष्टाध्यायीसूत्रपाठः— १-००, सजिल्द १-१५
२९. अष्टाध्यायीसूत्रपाठः—विशिष्ट संस्करण। पाठ-भेद सूत्रसूची सहित। सजिल्द ४-००
३०. धातुपाठः— १-५०
३१. संस्कृत-धातुकोषः— ३-००
३२. अष्टाध्यायी-भाष्य — प्रथम भाग— १५-००,
द्वितीय भाग— अप्राप्य, तृतीय भाग १२-५०
३३. महाभाष्य — सजिल्द २०-००। तृतीय भाग छप रहा है।
३४. संस्कृत पठनपाठन की अनुभूत सरलतम विधि—प्रथम भाग ५-००
द्वितीय भाग। ६-५०
३५ दैवम्-पुरुषकारवार्तिकोपेतम्— ८-००
३६. काशकृत्स्न-धातु-व्याख्यानम्— ८-००
३७. काशकृत्स्न-व्याकरणम्— ३-००
३८. वामनीयलिङ्गानुशासनं स्वोपज्ञवृत्ति-सहितम्—२-००, सजिल्द ३-००
३९. लिट् और लुङ् लकार को रूप-बोधक सरलविधि— १-५०
४०. शब्दरूपावली— ०-७५
४१. भागवृत्तिसंकलनम्— ३-००
४२. संस्कृतवाक्यप्रबोध— ०-६०
४३. अनासक्ति-योग—मोक्ष की पगदण्डी १०-००
४४. Aryabhivinaya—English Translation and Notes
३-००, सजिल्द ४-००
४५. विष्णुसहस्रनाम-स्तोत्रम् (सत्यभाष्य-सहितम्) — ४ भाग।
प्रति भाग १२-५०
४६. वाल्मीकि-रामायण—बालकाण्ड ३-५०। अयोध्याकाण्ड ५-५०
अरण्य-किष्किन्धाकाण्ड ६-००, सुन्दरकाण्ड ४-००, युद्धकाण्ड १०-५०
४७. विदुरनीति —पदार्थ भावार्थ सहित। ५-००
४८. सत्याग्रहनीति-काव्य— ५—००

४६. संस्कृत व्याकरणशास्त्र का इतिहास—प्रथम भाग २५-००
द्वितीय भाग २०-००, तृतीय भाग १५-००

५०. संस्कृत व्याकरण में गणपाठ की परम्परा और आचार्य पाणिनि— १०-००

५१. ऋषि दयानन्द सरस्वती का स्वलिखित और स्वकथित आत्म-चरित । ०-५०

५२. ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज की संस्कृत साहित्य को देन— सजिल्द ८-००

५३. पूना-प्रवचन (उपदेश-मञ्जरी)— ३-००
५४. विरजानन्द-प्रकाश— २-००
५५. व्यवहारभानु— ०-३५
५६. आर्योद्देश्यरत्नमाला— ०-१५
५७. भागवत खण्डनम् ०-५०
५८. अष्टोत्तरशतनाममालिका— ५-००
५६. प्यारा ऋषि—ऋ. द. के जीवन की घटनाएं ०-७५
६०. अमीरसुधा—भक्त अमीचन्द कृत ०-५०
६१ देवतावाद का भौतिक तथा वैज्ञानिक रहस्य— १-००
६२. वेद में मनुष्य इतिहास नहीं— २-००
६३. आत्मा की जीवनगाथा— १-००
६४. दयानन्द-शास्त्रार्थ-संग्रह— ४-००
६५ नाड़ी-तत्त्व-दर्शनम्— १०-००
६६. हंसगीता— ०-४०
६७. वैदिक ईश्वरोपासना— ०-४०
६८. अगम्य पन्थ के यात्री को आत्मदर्शन— २-००

पुस्तक-प्राप्ति के स्थान—

रामलाल कपूर ट्रस्ट, बहालगढ़, जिला-सोनीपत (हरियाणा) ।

रामलाल कपूर एण्ड संस पेपर मर्चेण्ट्स—

गुरु बाजार, अमृतसर ।] [नई सड़क, देहली
बिरहाना रोड़, कानपुर ।] [६१ सुतारचाल, बम्बई ।

पता—

संपादक पं० युधिष्ठिर मीमांसक के प्रबन्ध से रामलाल कपूर ट्रस्ट प्रेस, बहालगढ़ से मुद्रित तथा वेदवाणी कार्यालय जी०टी० रोड, बहालगढ़ (सोनीपत हरयाणा) से १ जनवरी १९७४ को प्रकाशित।